

भावनाओं के खण्डहर

सुमेरसिंह दर्इया



सूर्य प्रकाशन मन्डिर
बीकानेर

प्रकाश
गुप्त प्रकाश मठ
नई दिल्ली
वीरानर

प्रकाशकीय



सूय प्रकाशन मन्त्रि की प्रकाशन श्रु खला म थी मुमेर सिंह ल्या का नवीन उप याम एक नवीन कडी है । इस उप-याम को कुछ पूव ही आपके हाथ म होना चाहिय था मगर मद्रण सम्बन्धी कुछ कठिनाइयो क कारण विलम्ब स आप नक पहुँचा सक हैं । इस उप यास को आप सभी पसन्द करेगे अभी ही आता है । प्रकाशन सम्बन्धी मुभाव आमन्त्रित हैं ।

—व्यवस्थापक

मनगिन पत्नी तथा मानसिक जटिलताओं को उभार कर
 एक नवीन जीवन दृष्टि की स्थापना करती है जो सप्रे-
 म्य भाव तथा प्रभाववादी स्वरूप की अभिव्यक्ति को
 रूपायित करके कला के विविध पक्षों को निश्चरती है
 और उमक माध्यम से मानव को एक विनय रूप से
 सोजन तथा व्यक्त करन की अपूर्व प्ररणा देती है ।
 ग्रामोण भावन से उभरती हुई यह कथा परम्परानु-
 मानित विविधता का बहा तर निवाह कर पाते है
 इसका उत्तर तो कवन महत्त्व पव विचारणीय पात्र-
 को दे सत है ।

हनुमान हत्या बीकानर

मुमेरासह दईया

सोन गाव प्रकृति क जचन म बसा है । उसकी आबादा षोडी है मगर गहर क निकट बसे हाने के कारण उसका अपना मन्तः अधिकाश बस्ती कोरी कीर और गूबरा की है । कुछ उच्च बग लोग रहते हैं— जैसे राजपूत, बनिये और ब्राह्मण । उनकी स्थिति क नमक के समान है ।

इसके एक ओर सोन नदी बहता है । सुदूर किमी पर भील से निकलकर वह इठलाती-बलखाती हुई अभिमारिका न यिः भाति अपनी लगन म मस्त सगम स्थल की आर बट रही है । यह स से शात है । इतनी उद्द ड नहीं है जो आपाठ की पट्टी वर्षा आरम्भ ही रौद्र रूप घ रण कर लेती है । फिर हमकी प्रलयकारी लहरें गाव क अपने विकरात गड्डो म ममेर लती है । चारो ओर तवाही हाड़ाकार !

गाव वात इसमें प्रेम करत हैं । यह उनके गपनों की रा पूजा की दमी है गीतो की नायिका है और है उनके मनों की पानन बा ! जिन्की महिमा सबग याप्त है इस त्राचर जगत् क कोन । जाती है । वह ममता बरणा शमा और पगोपनार की गौ-बगानी क प्रतिमा है । गारा ममार उसका कृतन है । श्रद्धा प्नायित हो उनक में योग नवाना है — भक्ति के पूज बगता * । लमी * गीत ।

गेप दोनों बाजुमा पर गेन हैं । रूर रूर तक लम्बी कनारें

एक नवयुवक श्याम वसरी लिए गाव का आरस आ रहा है।
कभी इधर जाता है—कभी उधर। चगता है जम वह निरह य भटक
रहा है।

‘आ हठाल नना आ बादी न नना माह कास थिया उवभाय र
माह कासो दियो उलभाय र आ हठाल नना आ ।’

गुनगुनाहट सहसा मधुर स्वर क माय एक गीत के रूप में परि
णत हो गई। गायक आत्म विभार हो उसमें खो सा गया। आँखें बंद।
चित्त एकाग्र। उसका मन रम प्नावित है और निखिल विश्व का सारा
मानस जमे उसमें भर गया है।

पता नहीं कितना समय बीता होगा ? मगर जब उसने बंद
पत्रका के खाला ता उस प्रकृति का मनारम सौदय मोहित कर गया।
एक नया रंग एक नई छत्रा उमर कण कण म परिब्याप्त है। चहचहाते
पत्ती मूरज की किरणा का नूमती पडा का टालिया और वायु में प्रभात
के नुदर नीहारणा तथा नहनहाने मती की मास्क मय। जी भर कर
इस अलौकिक सुरा का बह पान करत। रहा।

नाच दान म मटकी लिये एक नारी मिर उपर उठा और फिर
कुद हा दर म पूरा सुडोल आकृति पगडो पर वीर वीर चवन लगी।
युवक चौंक कर ठिठक गया। अम्फुट स्वर म फुमनुमाया— भा भी ।

एक गरारत भरी मुस्कान उमक हाठी पर खेल गई।

वह फूर्ती न दोटकर एक पट की आट हो गया। वह मन ही मन
किमी छडटा या किमी ठिठीली का कल्पना करन लगा।

युवतो स्वाभाविक चाल म निरतर आगे बटना आ रहा है। अपनी
धुन म मगन यह पट के पास स निकन गई है। अब युवक मन मसोस कर
रह गया। दरमनन म उमकी अकल म छाटी मी गरारन भी नहीं

उत्तरा । हार कर वह पगाली घर घा गया और पास में बोला - राम
राम भाभा ।

की ?

गोमा पून कर ली हा गई ।

पूछा— क्या है ?

युवक समीप आ गया और रास्ता राह कर गया हा गया ।

‘अच्छा जो हमारी बौती हा पहचानता भूत गई । —युवक ने
अजीब तरह में मुह बनाकर कहा ।

युवती हनार हा पडी ।

‘अच्छा रास्ता छोड दो ।’

नही ।

युवक हठपूर्वक राडा रहा ।

देखो जा युवती न गिरदी तजरा स पून कर कहा— सीधी
तरह रास्ता छोड दो वरता ।

इस डी हुई उगली की बेनावनी न गीघ्र ही अपना प्रभाव
दिताया और युवक लिसियानी हसी हगकर हट गया ।

देखो सभू देवर ! मूझे हर घडी वा यह हसी ठुटा पसद नही
है । समझ कुछ ।

क्रोध के इस आटकीय अभिनय ने गोमा के व्यक्तित्व को निसार
दिया है । उसकी मम स्वर्गी प्रतिभा आती व वातायन से भागने लगी है ।

वस भाभा ! घोडी दर ठहर जाओ और ।’

‘चुप । — गोमा ने एक भडकी पित्ताई ।

अचारा सभू बुझ गया ।

अब गोमा उसकी यह अवस्था देखकर बरबस खिल खिला पड़ी—
'बस भाभी की एक ही डाट म बिसिया गये ।'

हैं — शम्भू पुद्गु की तरह मुह बाए देखता रहा, मगर शीघ्र ही अपने हाथ की बसरी से मटकी पर टुल्की मी चोट करके ही ही हमने लगा ।

गोमा हाथ मटका कर बोली— क्यों जी, गाव म दूमरी सारी भाभिया मर गई हैं, जो हर वक्त मुझे ही छेन्ते रहन हा ? हाँ हाँ
S J S ।

गोमा प्रश्न पूछ कर शम्भू की आँखो म भाकने लगी । लेकिन वह भी है पक्का बेगम । बस हमता रहा — दात निकालता रहा ।

अच्छा, करणो देवर जा तुम भी हनी दिल्लीगी । क्या करू भगवान ने कुछ रिश्ता ही एसा बनाया है । पराये गाव की बेटी हू ना । तुम भी मन की निकाल लो ।

गोमा एक माहक अण्ड म बाकी चितवन से मुस्करा कर आगे बढ़ गई ।

शम्भू खडा रण मोन । भाभी बा यह उवाहना कितना मीठा है, जिसके रस मे उसका मन डूब डूब ज ता है । वह जाती टुइ गोमा को देखकर बुदबुदाया— 'हो ना आखिर मेरी भाभी ।'

अपनी सारी ममता उडेल दी है। भोजा के सम्मुख दोहका प्रश्न बड़ा जटिल और पेचीला हो गया था। गात्र के लोगों ने भिन्न भिन्न विचार और सानेली मा के दुःखका की अनक कथायें सुनाकर उसकी आत्मा को अधिक उलझनपूर्ण बना दिया था। इसके अतिरिक्त गात्र में भी कुछ ऐसी घटनायें उसकी आत्मा को आग हो गई थीं जिससे उसकी दुःखका की पुष्टि हो जाती है और इसी वांछित वस्तु तथा अप्रिय दुःखिताओं से अलग होकर भोजा गाने करने गया था। जब वास्तविकता बिल्कुल भिन्न रूप में सामने आई तो उसकी मुग्धा का ठिकाना न रहा।

गोमा ने आज ही अपने मौम्य व्यवहार से एक कदमो को जीत लिया है। सारी कथायें निमूठ मिट्टी हुईं। अनिष्टकारक धारणाएँ निराधार साबित हुईं। वह शेरु को अपने पेट में जाएँ सगे बड़े के समान प्यार करती है। इस अप्रत्याशित व्यवहार और अकल्पित चमत्कार का एतद्वत् सब दण्ड रण्ड गय है। बड़े बूढ़ों ने दातो तब उगनी दशाही है। कइया ने आशक्ति होकर इसे दिव्याना भय कहा और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने फिलहाल राय प्रकट करना उचित नहीं समझा। भिन्न भिन्न लोग—भिन्न भिन्न रायें। गोमा तो मूक दण्ड से वाक्य निरपेक्ष भाव में मुन रही है।

गृह प्रवेश की रस्स पूरी होने ही नहीं दुःख गोमा ने पहना काम यह किया कि आगमन में बँटा सारी औरतो के रिवाज के अनुसार पर छुण। बड़ी बूढ़िया के पर तो उसने ऐसे दण्ड कि वह बड़ी प्रमत्त हो गई। उन्होंने उसे 'दूधो नहाओ—पूता फना' का गुम आशीर्वाद दिया। जब धू घट उघाड कर मुह देवना चाहा तो उसका कोई आनाकानी नहीं की। उसके सावर मुल पर तो जगालु कजदार मौन भाव में मुके नयन—सबने अपने निष्कलक रूप की मुक्त कंठ से प्रणामा की। कुछ धूक कर उन्मत्त पलाट पर कला टीका लगाकर तब उन्मत्त भी गी। उन्हें डर है कि किसी निगोही की ईर्ष्यापूर्ण दुष्ट तजर तब बाद से मुमत्त वा न लग जाण। वे भोला का भी बघाई देने से नहीं चूकी।

मोला फूलकर कुप्पा हो गया। उसने सोचा—“गोमा के लिए ढेर सारे गहने बनाऊंगा। कपड़े, टीके, टमक ललाई आदि लाकर उसे खुप रखूंगा उसे बनाऊंगा रानी बिल्कुल राना। नदी से पानी लेने भी नहीं भेजूंगा मैं खुद ले आऊंगा। कौन भरा जाता हूँ? भ्रमण लोग हसेंगे तो हसा करूँ। यहा परवाह किसे है। जगल से लकड़ी भी काट कर ले आऊंगा और और

तभी उसे एक विचार सूभा - क्यों न शहर म जाकर कपड़े की मोल में नौकरी करने ? हर माह साठ रुपली तनदनाह ! ठन ठना ठन— खन खना खन ! अरे वाह फिर क्या चाहिए ? पी जरह हैं । न किसी की चाकरी—न किसी की गुनामी ! तिगी की खुगामद करने की भी जरूरत नहीं है । आजकल किसानो म कोई बरकत नहीं है । कभी बरखा नहीं, कभी साहूकार बीज न = कभी फसल को पाला मार जाए । हजार भभट हैं । यदि सौभाग्य म फसल तयार हो जाए तो तनभर आकर गला पकड ले । बम, ले =कर मुटठी भर जाने हाथ तगने = । इन सब मुसीबतो म छुटकारा । वाह भूब !

उमने पक्का निश्चय कर लिया ।

जब रात दो एकाठ म वह गोमा म मितान गया तो उसका रूप की चकाचौंध म सब बुद्ध भूल गया । घानी मा दारू भी पी ला थी । बुद्ध रूप का नगा—बुद्ध दारू का नगा ! बचारा भाता त्हाती एकदम दीवाना हो गया । अधिक दर दाते दरक समय थोना उम झच्छा न लगा और साहाय रात की नगी नी किता म आत्म विभार हा थो गया ।

रजन री नयों म घातकित आत्र गोमा की प्रथम मोहाय रात है । मारा समार पूनम की गुभ या-ना में दृष गया है । चारों घार भयो किच दानि जगमगा = है । उगा घन क- = में ह्य धीर उ-नाम का भन्ना मा पू-प = है । = भ ननायें = विगय रूप म दातम म मम

हैं घत अपने उद्वेग को रोक पाना कठिन हो गया है ।

भाला के हाथों से दाढ़ की गंध चुराकर टवा के एक छ्दाट-से भोजे न उसे गामा के नाक पर पटक दिया । उसका एकाएक जी घुटने लगा, मगर इस घुटने में भी अणूव आनन्द है । भोला नसे की भोजे में चूमन लगा कि तु उमम भी हृदयप्राही मिठाम है । बस उमका आनन्द तो लाज से गुलाबी हो हो जाता है ।

भाला गान गबल का कोण बुरा नहीं है । फिर शादी के दिन नजदीक आन दसकर मगवकन वा काम करता रहा । सर भर दूध में छ्दाक भर घी मिलाकर रोज सुबह शाम पीता रहा । परिणामस्वरूप उसका चहर पर नइ रौनक आ गई है । शरीर का गठन अधिक मामूली तथा सुजोल हा गया है । सचमुच गामा पहनी ही दृष्टि में मर गई । उसने आत्म समर्पण कर दिया । अपना का राजा उसे मिल गया है और उमकी कवारी आशायें फनन फूजन गयी हैं ।

वह भोला के भुजपाण में बध गई । एक क्षण के लिये अपने प्रिय तम की ओर अपलक मंत्र मुग्ध ही निहारती रही तत्पश्चात् भावाग्नि में उसके गले हाथों और आँसु पर चुम्बन की वर्षा करने लगी । स्तन उचित और विक्षिप्त चुम्बनों की बोछार में ये चिर-विरही युगत प्रणयी प्रेम के अदृष्ट बधन में बध गय ।

सुबह जब भोला घना नेकर जान गया तो गोमा का माया टनका । उसने सजाकर पूछा — कहा जा रहा है ?

नयी पर ।

भाला की आँसु में अभी सत्तर बाकी है ।

हा रानी ! तुम दूध गरम करो । मैं घुटकी बजाने ही आया ।

तो फिर मैं किगलिय हूँ ?

बड़े गुमान के माथ आहिस्ता स गोमा न कहा । रात्रि जागण
मे बोभि न हुई पलको म दिल फरेव अदा अपन आप भर गई ।

हिग नुम जाजाम पानी लेने ।'

भिडकी देकर गोमा ने घाड छान लिया । बड़े नखरे स मुम्करा
कर बोली— कहा मद भी पानी लेन जान हैं ।

इम मीठे उलाहने म गोमा ने अपने हृदय का गारा रम धान
लिया । भाला मुग्ध भाव से पाता रहा -- गटकता रहा ।

छम छम छम ।

गुबड़ — तटक की — गरी के एक छोर स लकर दूगरे छोर तक
यह बग प्रिय ध्वनि गूज उठी । तनिक हलचल मा मच गई । इस दरिद्र
अभावग्रस्त और पिछले गाव म यह थुति मधुर ध्वनि कहा से फूट पडा ?
वम सब घरों के किवाड ल गय और सारी औरतें दरवाजों पर जमा हो
गई । व एम आगे पाडकर देखन लगीं जम कोद अडूवा अचानक प्रकट
हा गया है ।

कीन है ?

किमकी बहू है ?

बहा लम्बा घू घट निवान रमा है ।

अरे यह तो नद बहू है ।

मा भोना की बहू है ।

बस हवा का गार उग और फिर गात गी गया । घर ता
महकी दृष्टि उठकर गोमा क परा पर जम गए जग न ममकता हृद
पायलों का जाडो न उनह लिया म र मयमय जवन भी पना करनी है ।
इसी म व जल उा है । उनह म म लक म आ पूर पना । एर मयम
का अब उनह घरों म भी एमी पायता की आनार आ करना थी मगर

आज वे महाजन की तिजारी में चली गई हैं। अब तो केवल हसरत ही गेप रह गई है। उनमें अधरा पर प्रेम और मसली हुई आशा की फीकी सी मुस्कान अनायास ही उभर आती है।

नौजवानों ने इस भोला की दुःख को कुछ दूसरी निगाहों में घूरा। यह छम छम की ध्वनि तो जमे उनके दिलों में उतर गई। उसका अंतराल में क्रम-प्रति-नित मा होनी रही। उनमें से कई अपने आप को गव न मके और स्वर में रस भरकर बोले— गम राम भाभी।

और गोमा तो मलजज मुस्कान लिये अपनी आंखों में सिमि-मिकु गइ।

जब अनुबूत प्रतिक्रिया का दावर इन देवों का साहन एवदम बन गया और वे भीम निवार कर हमन गग। अजीब ढंग से मुठ बिगाट कर प्रतीप करन गग। इसका अनिश्चय उनकी दृष्टि अधिक निजज और लोलुप भी बन गई।

अब गोमा को अपनी भूत का आभास हुआ। वह घबरा गई। सचमुच यह पाप की भनकार तो उनके कानों में चुभन लगी। वह सिर नाचा किये फुर्तों से आग बढ़ गई।

जब वह धापिम गोट कर आई तो भोला से उसका खिन और कुम्हलाया चहरा छिप न सका। जिन चंचल जाया की गहरादयो में अभी— थोड़ी दूर पहले—उमग और उस्माह का रग छनक रहा था वहा धृणा और विरक्ति का भाव घनाभूत होन दलकर वह चौंक उठा। उसने पूछा— क्या बात है रानी ?

एक बार तो मन हुआ कि मारी बात खानकर कहूँ और पूछे कि तुम्हारे गाव में नई आद गू के साथ इस प्रकार का सलूक किया जाता है ? लेकिन गोमा—पता नहीं क्यों—चुप्पी साध कर लड़ी रही।

भोला ने फिर पूछा— क्या हुआ रानी ?

अब गोमा ने सोना कि उसका य चणी अपनाय पर है— और यह अनमानक गवायें भी उपायन कर सक्ता है अत अपन अपरो पर बनाय् मुम्बान गीच कर बोली— कोर सात बात नही है ।

नहीं है ?

विच्युल नही है ।

गोमा हम पडी—एक सरन हमी ।

अब भोना का आगकित मन थोडा आश्वस्त हुआ । नदा पर वह आज पहनी बार गई है । अजानी डगर और अपरिचित लोग । सम्भवत इस प्रकार घबरा जाना कोई आश्चर्य नहीं है । धीरे धीरे यह किभक् और दुराव अपने आप समाप्त हो जाएगा । इग में कोई सदेह नहीं है ।

‘राम’ राम भाभी ।’

गोमा तो सन्न-सी रह गई ।

वही आवाज जो उसका पीछा करते करते यहा भी पहुच गई है । वही सम्बाधन, जिसके सदभ में वी अस्तोन हमी और मली दृष्टि । वह इतनी भयभीत हो उठी है कि उसकी आँखें नीचे झुकती चली गई और उसने पुकारने वाले को एक नजर उठाकर भी नहीं देखा ।

‘गोमा । यह तो अपना शम्भू है मेरे छाट भाई जसा ममभी ।

इस सक्षिप्त परिचय का उस पर तक्षण ही प्रभाव पडा । उसने निगाह उठाकर निहारा भर दस कहा बुद्ध नहीं ।

अरे बाह तूने मुह खोनकर इमे बुद्ध भी नहीं कहा । — भोला एक आख से शम्भू और दूसरी स गोमा को देखकर बोला— जा जा । अदर जाकर देख । इसने अपनी भाभी के लिए चाय बनाई है ।

चाय! —विस्मय से गोमा के होठ खुल रह गए ।

‘हा ।

अब गोमा ने अपनी दृष्टि शम्भू की स्नेहो-ज्वल आखा में गनी, जा आनर व अद्धा से नमित हैं । तिम कुमिन भावना का परिवय उ अभी मिला है—यह उसमे सबया भि न है ।

यह तो कुछ और ही बनाने वाला था पर तुम जल्दा ही न आई ।

गोमा घर के अदर चली गई । उसके मन की वह दुर्भावना क्रमः क्षीण होता गइ । धीरे धीरे एक बोभ सा उतर गया । उसन मन ही म कहा—सब है, सब आदमी एक स नहीं होत ।

बाहर भोला हसी के नाय बोला— शम्भू । अभी तुम्हारी भाः शर्माती है ।



भोर का तारा उगता है—तब गोमा उठती है। नित्य कर्माँ न निवृत्त होकर बह घर व काम काज में नग जाती है। गाय दुग्नी है कण्ठे पायती है घर की सफाई करती है बासी बतन मलती है भोना व गन् के लिय बलेवा तयार करती है पानी भरता है। अपने मधुर कण्ठ स प्रभता गाता हु वह राज दो सेर ज्वार पोसती है भोना भी उठ जाता है घ्रीन हुक्का गुडगुडाता हुआ गातो को आन दूबक सनता है।

उसने सबसे पहले सारे घर को नीपा और फिर तान मिट्टी व सपे कलई स पोता। अब उसे करीन से सजाया।

यद्यपि भोना उसे बराबर मना करता रहा। नई दुग्हन को घान ही काम पर लगाना सरासर अयाय है। गाव की बड़ी मूडिया भी तान वसती हैं। उन जानिम बहकर पोसती है जो न ही फूल सी बह का बड़ी बरहमी से काम में लगाए रखता है।

अरी भागवान रहने दे। तनिक सुस्ता स।

चो हट्टो काम से भी कोई घिमता है।

रूपत नगो की एसी प्रेम पूण दृष्टि फकती है कि भाला एकदम लुट जाता है। वह निबट आ जाता है और उस छाती से लगाकर एक स्नह पूण चुम्बन उस व होठो पर टाक देता है।

‘अह अह अह ।

हठात् बह छु मु मी बन जाती है।

गोमा व दोनो हाथो को पकडकर भोला ने कहा— देख, तरे हाथो तो महदी अभी तलक नही सूखी है और तू जो है बल की तरह काम किय जा रही है , थोटे दिन आराम करके फिर सारी ज़िदगी काम ही तो करना है ।'

भाना व इन शब्दों म सहृदयता तथा आत्मीयता का रंग अधिक गहरा एक घना हो गया । गोमा तो निहान हो गई । आज वह अपने इस सौभाग्य पर दप स्फीत से मुस्करा रही है ।

'सच कहता हू कि तुम्ह इस तरह काम करने देखकर मुझ मुझ मुझे ?'

भोला के आगे के शर कहीं गुन हो गए ।

क्या मुझे मुझे ? —बड़े भोलेपन से गोमा ने पूछा ।

तो मुझ मुझे अच्छा नही लगता ।

कसी बातें करत हो ! —हमकर गोमा ने प्रतिवाद किया— पर का काम तो करा ही चाहिए ।

वह सब तो ठीक है पर समय का भी कुछ ।

ऊहूँ । यह सब गत है ।' —सयानी सी बनकर गोमा कहने लगी— मेरा तो विश्वास है कि आदमी को कभी ठाना बँटना ही नही चाहिए इससे वह निश्चिन्ता बेकार और आलसी हो जाता है ।

इस तर्क-संगत उत्तर से भोला बड़ा प्रभावित हुआ । इसमें गोमा की तीव्र बुद्धि की भजब मिलती है । इसने अनिश्चित उसके कहने का उग इतना अधिक रोक्क है कि इसमें यह अप्रिय प्रसंग अपने आप समाप्त हो गया ।

वह गद् गद् श्ण्ट से बोला— देख की मा ! तुम कितनी अच्छी हो ।

शेर की मा ।' — इस सम्बोधन में कितनी मार्मिकता छिपी पड़ी है । अपने पति के मुँह से गोमा जब सुनती है तो उसके हृदय में एक मीठी मी गुत्तगुदी होती है । किसी ने साच ही कहा है कि नारी जीवन की साधकता मातृत्व में है ।

यथाय ये प्रत्येक स्त्री जब से होना सम्मालती है तो कुछ अपने दबने शुरू करती है । गुडिया के खेल के साथ वह अपने सलीने सजीन और सुंदर प्रियतम की मधुर कल्पना करती है । उसके सग हमतो है खेलती है और प्रेम के तराने गाती हुई सावन में भूना भूलती है ।

फिर जब याहने योग्य हो जाती है तब विवाह के सार समारोह देखकर उसके मन में सुकुमार कल्पनाएँ हो जाती हैं । कुछ मार्मिक प्रश्न कुछ चिंताय, कुछ गवाएँ अपने आप उठती हैं और वे प्राण वर प्राप्ति की कामना को अपने जतमन में छिपाय गा उठती है—

बाची दाख हेठे बनडी पान चाव
 पून सूध करे ए बाबाजी सू बीनती ।
 बाबाजी देस देना परदस दीज्यो
 म्हारी जोडी रा वर हेरज्यो ।
 कानो मत हेरो बाबाजी कुल ने लजाव
 गोरो मत हेरो बाबाजी जग पसीजे ।
 नावा मत हेरो बाबा सागर चूट
 ओखो मत हेरो बाबा बाबपू बत्तावे ।
 असो वर हेरो कारी को वामी
 वाई रे मन भासी हगतो चण भासी ।
 हस मन ए बाबाजी रो प्यारी,
 हरजो है पून गुनाब सो ।'

गानदार गृहस्थी के साथ साथ बच्चों की मा बनने की उत्कण्ठ अभिनाया भी जाग्रत हो उठती है ।

गोह ! कितना आनन्द है मा का गौरवशाली पत् पाने में मानों मसतार का मसारा वैभव उसके आचन में आ गया है । छोटा मा बानक — जिस चान का टुकड़ा । नवनीत में कोमल हाथ पाव निमल हसी ठुनकती हुई वह गाव चाल । घर के आगन में हर्षोल्लास की पवित्र गंगा सी बहान लगता है ।

मा 5 SSS ।

मुतनी आवाज की यह पुकार गाव काम छोटा देती है । मातृ माद का भरना मा हृदय के बाने बाने से अचाक फूट पड़ता है और

आह ! मुझे यह सोभय प्राप्त है । — अन्तर गोमा सोचती है— ' गेरू मेरा ही तो जग है । अगर मरी कोख से नहीं जन्मा तो क्या हुआ । आविर है तो मेरे पति का अंग । उनका रूप उम में भलकता है । वह मेरा है और मरी गाद से कोई भी नहीं छीन सकता ।

पाच बप का गेरू अभी नाजान है—अबोध है यद्यपि वह अपने पराय का महज स्वाभाविक जान रखता है । जब गोमा पहले पाल आई तो वह एकदम सन्म कर डर गया । भीना का मन भी आनका एव दुविधा से डावाडोल हा रहा था पना नही सोचनी मा बसी निकले । उमन जी कटा बरके गेरू की गामा की गोद में डाल दिया ।

उमका ध्यान रखना । बस ।

उसका गना रघ गया ।— जन करण में सोई किसी अनात पीडा की अनुभूति में उसने नय आद्र हा गये । कुछ क्षणों के त्रिय वह एक प्रसन्न के मरण नि तत्र प्रीर जड होकर किन्हीं अतीत स्मृतियों में लो गया ।

गेरू भयभीत हो रो पडा । उम्को बरणाप्लावित चीलें घर की नीवारो का भेद कर विचन गई । गोमा न उम बडे अचरज में दखा । एक

विचित्र भी मन स्थिति में पड़ गए। भार गाय जाया की स्तम्भित नटि
 घालक के चारा ओर कु डली मार कर बठ गए। बाबक रोहन के साथ माय
 अपने हाथ पाव चताने तथा जिनका प्रचार मामा की जाती पर और रधा
 पर होन तथा। देखते देखते उसका हृदय में ममता की अजय पारा भी फट
 पड़ी। भावावेग में उस जाती से तथा त्रिया। जब वह उसकी मा था और
 देखे उसका बेटा।

यह दृश्य कितना ममस्पर्शी था। यद्यपि भाग्य स्त थ रहकर स्वता
 रहा। अब वह प्रा वस्त हो गया। गोमा अब गरु को सगे बेटे के समान
 प्यार करेगी—ममें कोई सगाय नहीं है। चित्ता दूर हुई भगवान न उसकी
 सन नी।

भोला मुह अघेर है। गरु के लेकर घेत चना गया।

गोमा यत्रवत् घर का सारा काम काज करती रहा। घड़ी भर के
 लिये भी चैन से नी बठा। परिणाम स्वरूप ठाक समय पर सब समाप्त हो
 गया। अब मत में वाप बठ के त्रिय राती न जान का तयारा कर री है।
 उसने ज्वर की मोटी माटी रोटिया और एक कटोर में बशुण की सजी
 ल ली। छाछ की हाडा भा गकरी में रखना वन नी भूली।

फिर उठकर उमन लहगा बदला और एक माफ सुयरा धुली हुई
 भोदनी। व दोनी माटी राती को है मगर उसका सगत्रित बदन पर बडा
 अच्छी फव रहा है। उमन एक छोटा-सा भाईना उठावा और अपना मुख
 जोहने लगी। माथ पर रखडो है कानो में चाती की हराती है। घालो में
 सुरमे की हल्की मा लकार गीन नी। अब उसने धादना उठा कर पुन दला
 तो नकित सी रह गई। मचमुख उसकी मा। माटा आधो में जादू का सा
 भसर है। वह सुन अपने रूप पर मोहित हो गए है।

निगोडी, इतनी सूबसूरत बनकर निकलगी तो गार वान।

—गोमा मन ही मन बटवशाद।

उमन अधिक थ गार बरन का विचार त्याग लिया । होठी पर धगान वाली लाना बापिस मरूकचा मे रखदी । पाजब पहनना ता उमन एक अरम म छाड गया है । क्या कर मउवूर है कृष्ण मदीक हटटी को प्यामी नजर म घूरते है ।

वह खडी हो ग । उमन मरमरा निगाह अपन लहगे और घ्राणी पर डारी । फिर हवा या हाथ फरकर उमकी मलबटे टोक की अतिम बार उमन घ्राणी उठाया और क घी नकर अपने बाल सवरन गयी लकिन बानो की अब गतान न न तो जम चाी के माथ न गुपने का कसम मा खा रखी है । गाथा -मकी म उगर्मी ए बिगड रई ।

जा मर । मगी बरन म हूम ।

उमन न छोट दी । नराट म नकर बाय माल सब वह खडी मस्ती में शिरकन गगा ।

प्राय खाडी दर म हा घर म कृष्ण मगावर बाहर निकल गइ ।

एक मात्र घर के गांव गोमा की जा। एक गांव व उन मनबन
 देवों व मुह म ठडा उगामे निरगत मग। नुए ता इत। गिरे इए
 निकले कि घात्र गाटा बजावर कृणित हबग बर। म गही पूर। तस बर
 गीत की बहिषा गुनगुना बर अपनी उ-निर्दिगि की मप। भा द। म।
 राम गम अविवा न व गाथ भाभी ग। उ-ग। ग। घात्र गय अटाव
 में किया गया है जिनम एक प्रकार की अ-नीयता का गप घा रहा है।
 छोड़। घात्र इनक जिमो व बसुप व दल परिवय ग। म व गाथ-भाव इमक
 द्वारा बनन वान गव्यध को भी अयमानित और ग। गि ग कर निमा है।

गोमा बरी तर, कुछ गई।

अना गांव की बट्ट बटी व गाथ यहा ध्यवहार किया जाता है।
 व मा घाछी बात है? न इया व राम। बन गिठ हृष्टि से पूरत रहत है।
 इनकी नीयत मे तो गाफ जात्रि है कि व पराय घर की बनी को तो केवन
 एक ही नजर से दखत है। व सा बरा जमाग। आ गया है। एक समय या
 जब गाव की एक बटी पूरे गांव की बटी थी और एक बट्ट सारे गाव की
 लक्ष्मी समझी जाती थी।

गोमा ने बिह कर उपेक्षा से मुह घुमा लिया। उ हैं अज्ञान का
 गरज से थोड़ी मटक कर चलन लगी।

जन्ते है तो जला करें अपनी बला से। मेरी सूना तब
 परवाह नही करती।

अतः करण म बढत हुए आक्राश को रोक कर वह आगे बढ़ गई ।

घोड़ी दूर खनकर उसे गाव के मम्मामिन ठाकुर साहब स्थनाथ सिंह जी मिल । चितकवरी घोड़ी पर सवार है । बिच्छू के डक के समान मूछ खड़ी है । वही रौबीला चेहरा—वही अक्खड स्त्रभाव । ये गाव के पुस्तनी मानिक हैं । यद्यपि उनको जागीर समाप्त हो चुकी है और मुधावज की रकम भी किताब रूप में बहे धीरे धीरे मिलने लगी है, तथापि ठाकुर साहब की बात अभी तक बाकी है । परस्पर मुकद्दमवाजी एव मुदा मुदरी का तौर भी खनता रहता है, परन्तु दिन प्रति दिन उसकी गति धीमी पड़ती आ रही है । इसमें ब बहुत कुछ बर्बाद कर चुके हैं फिर भी आस नहीं खुदती । भोग निप्सा की मनोवृत्ति उस वृद्धावस्था में भी कथ नहीं हुई है । जब कभी किसी सुदगी के दशन कर लेते हैं तो उनकी भाखो व गुलाबी शारतन जात है । मुह म लार टपकन लगती है । कभी कभी तो यह उत्ते-जान इतनी अधिक बढ जाती है कि धपन भाप का नियमित रख पाना कठिन हो जाता है ।

ठाकुर साहब न गामा के रूप की प्रशंसा सुन ली थी मगर आखो मरखो का धवसर उहे आज ही मिला है । सचमुच एक ही भलक म व टुट गय । ने एकटक निहार कर अपन मन के चामो की प्यास बुभान लग । लकिन तभी मूत पर घू घट खिच कर आ गया ।

उहे एक मरका सा लगा—अस किमी निट्टुर ने उनक सीन में करारा आघात किया है । क्षण भर के लिय शप म उनका चेहरा तमतमा उटा । हाथ की मुट्टिया बध गई । आवग का तीर भोंका मा अचानक उनके मन में उठा और उगरी बाहे फडकन गी ।

अभी उस मुडल का घोनी पर बठा कर उठा न पाऊ तो सारा धमड चूर चूर हो जाएगा ।

बग ज़रूरी यह भाषा घाघा घा घम हा घना गया । व नरा
नि गाना ३ बि उर व विान न्न व ॥ व दूर घर ?—त्रिनम व
व लेने म । घव मा तमा व रा व वना तर परा मि व
रता है ।

घनीभूत निगगा तव घगाम उ भातता म य एवम वन १
मय । घ घट गीर वर गामा न उनव प्रति ता तिरकार्गुण धयवहा विया
है उगवा कोई तक उमर उर पा गरा है । तत्तुन दमन ना उनव
वतमान घनीय घरत्या व प्रति तव उर भागुण गती घुनीनी भी अ
निहित है जो गून घा वर उर वला म घम रहा है ।

व तव हार पीर कुत की तरह दम दबाकर चल गय ।

कृत्र घाम ग ना उम पडित गम त्र गामन म घान विम गण ।
वमन पर गम नाभी घा र । गन म र्णा व माना एक हाथ म गीमकी
माता का जाप बराबर चल र । है । मु = ही म = म वृद्ध बढवना भा
रह है ।

पडित जी बड नम घम वाल यविन है । हमेगा पूजा पात्र जय
तय एव नान ध्यान म अपना समय यात करत है । घाम पाग व गावों
म कथा भागवत बाना जाने है घीर पूण त्रिणा यजमान स प्राप्त विर
बिना उमवा विह नही छोडने । मम बिनी भा प्ररार का निहाज न ।
बिया जाता । अकमर व कहन मुा जान है भाई पाडा घास स यागी
करेगा ता खावगा क्या ?

उनका कथन सबधा मय है ।

दूर दूर गावा म भी ननक श्रद्धातु भक्त जन जनम मरण गाने
याह तथा अ य धामिक प्रनुष्ठानो मे इ ३ बड प्रम स बलात है । बडी भाव
भगत करते हैं । पूरी मिगई खाकर भर पूर दणिणा भी देत हैं । खान म
इनकी बराबरी कोई बिरना हा वर पाता है । एक घू ट म मडाई भर लीर प

जाए और टकार भी न ले चाचीय तडहू मोतीचूर क था जाए त पता ही न चल और ऊपर से कह कि घाय भूय है । हनुवा म मन आ जाय ता पूर तोन का टाड मर चट कर जाए । एमे पदू पणित जी का कोई कलज बाग्य ही निमनण देता है ।

पंडित जी के मंत्र मदन किमा भाव ताक म गाय रहन ह परन्तु किमा पोडगी बासा की पद चाप मुनत है तो बिल्ली की न ह तल्पण ने उनकी दृष्टि बदल जाती है । वम यह एक ही कपजोरी है उनम । कभी कभी मदन क प्रभाव म आकर प्राय विवक्षूय ही जात हैं और सागे ऊच नीच भूल जात हैं ।

पिछले कई वर्षों म एम एक कमजोरी क पीछे रहें बहुत माग्यानी पडी है । कभी घाट, कभी छत कभी मंदिर—जत्रा भी एह मीका मित्रा—ये अपना काला मुह करन से नहीं चूक । अभी कुछ ही माग पहन मरि के पिछवाड़े भगन की छोरगा को पकड बडे लाव लालच देने पर भी नगी मानी और शार मचान लगी अवस्था म छोटी और अकत म माटी । उस बीच न पंडित जी की रगे मही प्रतिष्ठा को धून म मित्रा दिया । उस बाग गाव वालो का प्रकोप अधिक उग्र रूप धारण कर गया और इसने पद-स्वप्न पंडित जी का कई महानो तक खाट सकनी पडा ।

गाव क पचों न एक स्वर म निणय करक डाल मंदिर मे निकाल दिया चचागे बड गय घोय मगर किसी ने इनकी एक न मुनो । अब उनकी शानत पतली है ।

गामा क भारी नितम्बों को मटकने दख पंडित जी क चण्ड रचित ललाट को मलबटें तन गई । उनकी उदार घोर त्रय भावों म न चमक आ गई । अब यह पास से कतराकर निकलन गयी तो व अपन आ का न राक सब और अपने हाठो पर जीभ परकर बोले—'भाग्य की ब है ना । बाहू जगा सुना—बैसा ही पाया । सन्द्य मच्छ परों क धीरत ।

पंडित जी भाग भी कुछ बहना घाना थ तन्निन पूघट के एक कोने से भाकत गोमा क घाननय नत्र उनक शद्र प्राणा म तीर क गमान चुभ गय । उनकी सिट्टा पिट्टा गम हो गई । इसक अतिरिक्त भोना का वर शोधन स्वभाव स्मरण हो आया । भगन धाने मामने म दुष्ट न वा कसरर धोन जमाए कि सारा नगा हिंग हो गया । एम बदमाग न कभी भोला नाम को साथक नही किया । हगमजादा भोना क्या है—विल्कुल गजवा गाला है ।

पंडित जी न शिव गिव का उच्चारण किया और मन मार कर अपन माग पर उम्प पड़े ।

गली क म ड पर आकर गोमा अब दूसरी गला म जान क लिए घूमी हो थी एक किनारे पर महामक्कीचूम महाजन गरीबदास की दूकान पर नजर पड गई । ये भी सारे गाव म घपना किस्म के एक अनाथ प्राणी हैं । आज स बीम बरस पहल ये एक मुठिया डार लकर इस गाव म आए थ । एक द्वाटी सा परचून की दूकान खोनकर घघा शुरू किया । मयोग म इनक भाग्य न पत्रटा खाया और देखते देखते बनका यह छोटी सी न्कान तो बडी हो ही गई । पक्का मकान भी बन गया । अब तो य पूरे मन्गजन बन बटे । इस विचित्र चमत्कार स हैरान है—जसे किसी अद्भुत तिलकम के प्रभाव म सब कुछ बन गया है । यह अज्ञेय रहस्य भी कालान्तर म सववित्त हो गया । रहोने वही पुराना नुस्खा आजमाया । गाव के किसानो को अधिक गूद पर कज देना आरम्भ किया बचारे जहरतमद उनके पर म पड गए और कारे कागज पर अमूठा उगाकर रकम उधार लेने लगे । गाव बालो की आज तो तब खुली जब कज की रकम समय पर घदा न हुइ और उनके नाम से घदालत द्वारा कुकिया घाने लगी । बिभा का घर किमी का सेत किमी का गाव किसी क बेलो की जोडी बिकने लया । बचारे किसान परो पच कर गिडगिनाय मिर घुन कर रोए मगर सब व्यथ । इस हत्यहीन पर तनिक भी प्रभाव न पया और वह निस्सकाव

होकर बशर्मा से बूटता रहा और अपनी तिजोरी भरता रहा ।

घोडा घायल से दायरे करेगा तो खायगा क्या ?"—व भी पक्षितजा
का इस वक्ति को अमर मीस निवार कर उद्धृत कर देने हैं ।

बोन ? भोना की बहू है ?

मठजी न अपना गनी पर फ न गरीर को समेटा और अपनी छाटो
छोटी जाखो को रस्यमय ग मे भपका कर बोले— बहू ! भाला हम
पर बकार म नाराज ह । पिछन साल कज का अदायगी म अगर मन
जोडी बिकवा दी तो उसम भरा क्या तोप ?”

गोमा क आग मा नग गई । वह उाकी सुकीति से भला भाति
परिचिन थी ।

तुम तो जानता तो कि कोअ अपना रुपया फोन्ट म छोडन बाना
नही है । भाला ठाकुर तो य नी मुक से फ्ट है । तुम इह धाडा मनभा
दो ।

गुस्ता तो ऐसा जाया कि इय बईमान का मुह नोच ले । जाडी
बिकवा कर इसन एक कियान क मोना हाथ बटवा दिये । भगवान करे एस
दुष्ट को मिरगी जाये लकवा भार जाये नरक म सडे । इन बद्दुश्राय्या न
साय वह उसे धृणा म घूरती रही । सठ के गाल पर तो जैसे थप्पड सा
पडा ।

बडा गन्त है प्यकी ।—गरीब दास होठो ही होठो म बडबडा
कर दम नहज जबानी को अनृति से निहारता रहा ।

गाव के एक बान पर चमारी और भगिया की एक छाटो सी
बस्ती है । पाम ही तलैया ह । बरमात का पानी भरा रहता है । फिर
धीरे धीरे वह सडने लगता है । गर्मा की तपिन म ऐसी दुग्ध उडती है कि
पास से निकलना भी मर्किन हा जाता है । धारो भार कूडे-ककट के हन
लगे हैं । नग धन्ग-बच्चे बकरिया भसे, गाये, कुत्त और पालतू मूजर

फ आकारा घूमते रहते हैं।

अब महा से खेतों की पत्तिया आरम्भ होकर बहुत दूर तक चनी हैं। गेहू की सुनहरी बालिया बड़ी मस्ती में भूम रही हैं। अलसी के फूल खिले हैं। इस वष शीघ्र ही वर्षा हो गई अत युवाई का काम एक समय पर भली भाँति सम्पन्न हो गया। इसके फलस्वरूप आज फसल बहुत अच्छा खड़ी है—किसानों को इस पर बड़ी आशाएँ हैं।

खेतों के बीच में से जाने वाली पगडडी पर गोमा आ गई। लहंगनात खेत नाबती बालिया और हमते हुए फूल। भना, किमका मन मगूर प्रफुल्लित हो भूम न उठे। दिनकर की अक्षण रश्मिया उनके होठ चूम रही हैं। भवरे और छोटी छोटी चिड़िया अनुराग का कौन मा मोठा गीत उनके कानों में गुनगुना रही हैं।

राम राम भाभी !

कौन ?

गोमा घूमकर खड़ी तो गई।

ओह ! देवरजी !

हा भाभी !

गम्भू समीप आ गया।

जोह मैं तो भू न गई थी कि यह तुम्हारा ही खेत है।

अच्छा। — गम्भू विस्मय से बोला— इधर से रोज जाती हो, फिर भी भूल गई। अजीब भुगवकड स्वभाव पाया है तुमने।

गोमा धीरे स हस दी।

इन दिना गोमा देवर गम्भू से खुनकर बातें करती है। लज्जा और किम्क का वह अत्यावहारिक आवरण यथा समय स्वत ही हट गया। अब वह अनावश्यक दूरी प्राय समाप्त हो चुकी है। वह गोमा का मुहबोल

देवर है। भाभी के सहज स्वाभाविक स्नेह का वह धीरे धीरे अधिकारी मुग़त्र बन चुका है।

‘देवर जी ! खेती पाती करना तुम्हारे बम का काम नहीं। तुम तो खडिया लेकर पाटी पर घाबी तिरछी लकीरें खींचो !’

उन गिनो शम्भू ने पचायत की प्रौढ़ शाला में पढ़ना आरम्भ कर दिया है। खेती में काम होन के कारण अधिकांश किसान पढ़ाई छोड़ चुके हैं, लेकिन उस जैसे दो चार अभी तक टिके हुए हैं।

‘पढ़ने में कोई बुराई है भाभी ?’ — शम्भू ने पूछा।

‘ना, बाबा ना !’ — हाथ मटका कर मुह बनाते हुए गोमा ने उत्तर दिया।

‘भला पढ़ने में क्या बुराई हो सकती है ! फिर हम समझे भा क्या ? तुम ठहरे गियानी धियानी और हम हैं बिल्कुल गवार अपढ़। तुम्हारी बराबरी थोड़े हो कर सकते हैं।’

फिर सिर को झटका देकर, धिबुक पर उ गली रखकर विनोद पूरा मद्रा बनाकर गोमा बोली— कहीं उकील वकील बन जाओ ता उस गरीब भाभी को मत भूल जाना।

इस मार्मिक कथन के अंतराल में जिस निश्छन्न हृदय का परिचय मिला उसमें नि गत ममता के रस में शम्भू आपाद मस्तक भीग गया। उसने गद गद कण्ठ से कहा — तुम्हें कबसे भूल सकता हूँ भाभी ?

सचमुच शम्भू अपने ही स्तर की ध्वनि से अचानक चौंक उठा। यह ध्वनि हृदय की अतल गहराइयों से निकल कर धाई थी। वह मंत्र मुग्ध सा जैसे इसकी प्रतिध्वनि सुनता रहा—सुनता रहा।

“क्या सोचने लग देवर ?

बुद्ध भी नहीं ।'

प्रहृतिस्व होकर राम्भू ने बहा प्रौर गापा की हसती घ्रासो म आये

बानकर वह मृदु मृदु मुस्करान लगा ।

गोमा चदन व तिये मुडी तो राम्भू भी उसके साथ हो लिया ।

उसने गोमा व पहनाव को दया । बनाव मिगार पर भी एव

हल्की-सी निगाह डाली । परंतु अब गामा के मून पारों न उमे आइचय व
पन म डान लिया ।

भाभी !

'हूँ ।'

तुम्हारे पारों म पाजब

राम्भू बाडा ओपकर जाग के ग न निगत गया ।

अच्छ । — गोमा की नायी दृष्टि सी ही जाकर राम्भू के मुग
पर पडा — पहन अपना मन गाफ करा गाया । पर भाभिदों व परों का
पाजब मनना ।

राम्भू निरंतर ।

य न तथा कविन देखने पर रिता करारा घोर सीमा प्रग
त्रिना दृष्टिवाग अत्यन्त मधुरिन तथा निम्न है । नायी व बाह्य एव
र गगन गा व कर तन है पर न उगा पातगि गों व र गगन उ
त्वभ है । सम तन वागनपूग टि खीर सोना मतातृति गवग अधिक्
बाध है । रिता न नारा अतन दृश्य व कतामर गीत्य की अभिव्यक्ति
ना कर पाती । न व मग न और मगुर भागा व माध्यम द्वारा उपका
वस्तुना अ र हा अर पु कर रह जाती है ।



"जीजी जीजी ।"

गोमा जब रोमो को पार कर रही थी—तब पीछे में अचानक रूपा ने पुकारा । "तना ही कह देना पर्याप्त होगा कि रूपा गामा की अतरंग सखी है । यद्यपि दोनों की जाति भिन्न है—आयु में भी अन्तर है तथापि इस घाट में समय में श्रेयदान में हादिस मन्त्री भाव उत्पन्न हो गया है । वे परस्पर एक दूसरे के मन की बातें सुनती हैं—समझती हैं । किसी विशेष समस्या या उल्लेख पर अपनी बुद्धि व अनुमान विकल्प प्रदान करती हैं । वे शीघ्र ही एकमत भी हो जाता है । इस अल्प समय में उस प्रकार का संबन्ध हो जाना प्रायः कोई आश्चर्यजनक नहीं है । परन्तु यह एक संयोग अवश्य है । मानव मन में विशेष गुण है । वह समान प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों का पहचान कर उन्हें समीप गान में सहायता प्रदान करता है ।

रूपा गोमा के सम्मुख धाकर खड़ी हो गई ।

जीजी ! तुम तो विलकुल बहरी हो गई । बड़ी दर से पुकार रही हो । धीरे तुम हो, जो सुननी हो नहीं ।'

उसकी उलझी हुई सास में वाक्य का क्रम क्रम गूँगा चला गया । इस प्रवृत्ति हो रहा है कि वह भागता सी उसके पीछे पीछे चली आ रही है ।

गोमा ने उसकी भाषों में भाषा तत्पश्चात् अपनी पुतलियों में जिज्ञासा का भाव जगाए मधु स्वर में पूछा— ऐसी क्या शृंगारिणी है ?

“पुणलवरी नहीं है पर सोचा कि दोनों बातें करती चनेंगी तो रास्ता महज ही म कट जाएगा। रुपा ने हतकर उत्तर दिया।

भोह ! यह बात है।

दोनों धीरे धीरे चने सगीं। रुपा भी अपने ससुर के लिय मत म रोटी लेकर जा रही है। भोला के गेट के पास हा उनका अपना गल है। दो स्त्रियों का चुपचाप चलना प्राय सम्भव नहीं है मन बातचीत का सूत्र किसी न किसी प्रकार आरम्भ तो हो।

‘जीजी।’

‘हम्म।’

“भाजकल पाजेब पहनना जैसे छोड दिया।’

‘ऐसे ही। कोई खाम बात नहीं। गोमा टाल गई।

वस बात जैसे खरम हो गई। रुपा को लगा कि इस प्रसह्य मौन से तो रास्ता फटना मुश्किल होता जा रहा है।

एकाएक रुपा के अघरों पर दुष्ट हसी की खामोश धरकन आकर बठ गई। उसके अतराल मे किसी मीठी गरागत की परछाई आकने लगी। भत उसने पूछा—‘एक बात पूछू ?’

‘पूछो। रोकता कौन है।’

एक क्षण के त्रिये रुपा ने रहस्यमयी दृष्टि डाली तो गोमा उसे एक गाल और उद्विग्नहीन मूर्ति सी दिखाई दी जिसके हृदय मे आनंद की मदा किनी मद मद गति से बह रही है।

सुना है जीजा जी तुझे बहुत प्यार करते हैं।’

गोमा क दोनो कपोल सहना प्ररुण हो उठे। उसकी मोटी मोटी आंखों की गहराइयो स निकलकर एक नि श द मुस्कान सलज्ज उपा की

भाति जैसे क्षितिज पर फैलती चली गई। सारा मुक्त मडल अप्रुव सुख एव
 अ यत्त हर्ष की मनोहर आभा से उद्भासित हो गया है। चंचल लट गान
 के तिल को छूकर बड़े अदाज में भूमने लगी है। कभी कभी वह उसकी
 खमदार मृकुटि को चूम कर मस्त हो जाती है।

इसमें अचरज की कौन सी बात है। हरेक मरद अपनी लुगाई स
 प्यार करता है ।

इसके साथ गोमा के चेहरे पर नटखट चमक आ गई।

‘पर तुम्हारी बात यारी है।’—रूपा रस लेकर बोली—जीजा
 जी और तुम्हारी उम्र में फक है, सो कहा फूल सी तुम और कहा वे ।

‘अरी चुप। उम्र का कोई फक नहीं होता।’

रूपा अब फिक में हस पडी।

गोमा उसकी चाल समझ गई, निगोडी ने छेड़ने की गरज से कहा
 है। वह तनिक भेंपकर चुप हो गई।

रूपा की बन आई। सारा रत पर उतर आई और गोमा की बगल
 में चिहुटी काटी। उसके मुह से ढरकी सी चीख फूट पडी। धीरे धीरे सारा
 वातावरण मधुर हसी से मुखरित हो उठा।

‘क्यो तू भी उन्हें खून प्यार करती है ना।’—रूपा ने पुन
 कचोटा।

गोमा की गम नम व नाजुक की भुकी भुकी पलकी से निकल कर
 प्यारी सी मुस्वान पुन उसके रसीले अधरो पर बिखर गई। अपने हृदय के
 अमीम आनन्द को दबाकर वह विह्वल कण्ठ से बोली— ऊहू ! पगली जब
 मन का मीत मिल जाए तो नरक भी सरग हो जाता है।’

मच्छा।’

रूपा खिलखिला पडी। गोमा फिर लजा गई।

उपर देखती रही ।

तभी नेत म से चरनी हूँ एक भम निकन घर गगडडी पर घा
गर् । दोनो रन गद । रूपा की हमी वा प्रवाह भी घमा । हल्का हल्का गार
वरवे भम को बहा स हटाया तब वही जाकर आग बढ़ ।

प्राय कुछ ही क्षणों वा यह घनाग्न्यव मोन गृह रासन गगा ।
अब गोमा भी सम्भल गद । उसने कुटिल हास्य क साथ रूपा को छेडा—
तू तो दूमने की बातें मोद साग वर पूछनी है, पर कुछ अपनी भी बह ।

क्या ? — रूपा बडी भोनी बन कर पूछ बडी ।

‘अच्छा जी जसे कुछ बेचारी जानती ही नही । — गोमा ने एक
हल्की सी चपत रूपा के गान पर जह दा — जरा अपन छोट स बनमा क
री हा न चान मुता ।’

अब तो रूपा लाज से एकम गुलाबी हो गई । उसकी घालें घरती
मे घसती चली गद । गोमा कपो बसा र खनी ? वह इस सुप्रवसर को कस
जान दती ? बस खूब चटखारे लकर उमे चिगने लगी — छोटे स बलमा
मोरे आगन म गिल्ली खेल आगने म गिल्ली खेल छोटे से बसमा
मोरे आगने म गिल्ली खेले ।’

रूपा इस अप्रत्यागिन व्यवहार के लिए बतई तयार नही थी ।
उसका सारा उत्साह ठडा पड गया और बेहरे पर तो जसे हवाइया उडन
लगी ।

‘मान भी जाओ जीजी । — भराय गने से रूपा गिडगिड़ाई ।
नहीं तो रा देगी ।’ — गोमा ने जीभ निकान कर
बहा ।

रूपा रामू गुजर की बेवा है । उसके पति को मरे नगभग पाच
साल हो गए हैं । उसकी मृत्यु के समय रूपा की आयु केवल तेरह बरस की
थी । परंतु गुजर जाति म अपना एक विशेष रिवाज है, जिसके अतगत बडे

भाइ की चवा की छाट भाइ की चूडी पहनाकर घर में बैठा लेत हैं। वम इमा स्थिति में रूपा है। रूपा का दर्जन छोटा है। अभी व्याहन योग्य उनका उन्न नहीं हुई है। रूपा इस पर आस नगाए बठा है। आशा है माल दा सान में वह उस पति रूप में ग्रहण कर लेगी।

विषण्ण मुख लटकाए रुद्राई ही आखे लिये रूपा का जब दर्जन ता गोमा की तनिक मा खेद हुआ। अब तो सहमा उसके मन में दया और सहानुभूति भर आई।

‘रूपा ! मैं तो ममखरी कर रही था और तू है जा बुरा मान गई। अच्छा चल, अब नहीं कहूंगी।’

मधु स मीठे गाने ने तत्काल ही प्रभाव डाला। रूपा का मुख विकार रहित अम्लान एव हृदयग्राही मुस्काह से खिल उठा, जम मुवह का नम, ताजी और प्यारी सी धूप भरती पर उतर आई है।

‘रूपा।’

हा।

‘मैं एक मवान पूरू ?’

‘पूछो।’

‘जिस पर तू ग्राम लगाय बैठी है अगर कहीं पर निकलने हा वह पत्नी की तरह उड गया तो क्या होगा ?’

‘कसे ? —रूपा आत्मिकित ही चौक पडी। सम्भवत इस अत्रया शिख समस्या पर उमने कभी विचार नहीं किया है।’

‘घरी, जिता नई चिडिया के घर में पडकर तुम्हे अगूटा बता जाण तो ?’

रूपा तनिक घबराई। यद्यपि उमने पूण आत्म विश्वास क गाण कहा— नी जोजी ! ऐसा कभा नहीं हो सकता।

जरा ध्यान हा रखता जमाना बडा खराब है।’—गोमा न मुक-

उपर देगती रही ।

तभी मेत म मे चरनी हुँ एक भग रिचन कर गगडडा पर आ गी । दानो रर गद । स्या की हगी का प्रयाह भी यया । हल्का हल्का गार करके भग को वहा म हटाया तव पही जाकर आग बड़ ।

प्राय बुद्ध ही क्षणी का यह अनावरण मीन गृह रागन उता । अब गोमा भी गम्भल गद । उगने बुटिन हास्य क साप रूपा को छटा— तू तो दूमरे की बातें गोमा-गाम कर पूत्रनी है, पर बुद्ध अपनी भी कह ।

बया ? — स्या बडी भोगा बन कर पूछ बैगी ।

“अच्छा जो उसे कुछ बचारी जानती ही नही । —गोमा न एक हल्का सी चपत रूपा क गात पर जड दा— जरा अपने छोटे स बतमा क भी हाल चाल सुना ।

अब तो रूपा लाज म एवम गुनाबी हो गई । उसकी आरें धरती मे घसती चली गई । गोमा बयो कतर रखनी ? वह इम सुधवमर को बस जात गती ? बम गुर चटखारे नकर उसे चिढा लगी— छाट से बलमा मारे आगन मे गिल्ली खेन आगने म गिल्ली मेत छोटे से बलमा मोरे आगन म गिल्ली खेन ।

रूपा म अप्रत्यागिन धवशार के लिए कतई तयार नहीं थी । उसका सारा उत्साह ठडा पड गया और चेहरे पर तो जैसे हवाइया उडने लगा ।

‘मान भी जाजा जीजा ।’—भरपि गले से रूपा गिडगिआई ।

‘उही तो रा देगी ।’—गोमा ने जीभ निकाल कर कहा ।

रूपा रामू गूजर की बेबा है । उसके पति का मरे लगभग पाच साल हो गए हैं । उसकी मृत्यु क समय रूपा की आयु केवल तेरह बरस की थी । परन्तु गूजर जाति म अपना एक विधेय रिवाज है जिसके अतगत बडे

भाद की बवा को छाट भाई की चूड़ी पन्नाकर घर में बठा लेत है। उस इमा स्थिति में रूपा है। रूपा का दरर छोटा है। अभी ब्याहने योग्य उमका उम्र नहीं हुई है। रूपा इस पर आस लगाए बैठी है। आगा है, माल दासान में वह उम पति रूप में ग्रहण कर लेगी।

वियण्ण मुख लटकाए रूपाई सी आगे लिये रूपा का जब दर्शाता गोमा को तनिक-भा सद हुआ। अब तो सहमा उसके मन में दया और महानुभूति भर आई।

‘रूपा ! मैं ता ममबरी कर रही थी और तू है ना बुरा मान गई। अच्छा चल, अब नहीं कहूंगी।’

मधु में मोठे गाना तत्काल ही प्रभाव डाला। रूपा का मुख विकार रहित अम्लान एव हृदयघाती मुस्कान से खिल उठा जम मुक्ता का तम ताजी और प्यानी मी घूप धरती पर उतर आई है।

रूपा।

हां।

“मैं एक मवान पूछू ?”

‘पूछो।’

जिम पर तू आम तगाय बैठी है अगर कहीं पर निकलने हा वह पत्नी की तरह उड गया तो क्या होगा ?’

कसे ? — रूपा आगकित हो चौक पड़ी। सम्भवन इस अप्रत्याशित समस्या पर उमने कभी विचार नहीं किया है।”

‘अरी किसी नद बिडिया के फर में पडकर तुम्हे अगूना बता जाय तो ?’

रूपा तनिक घबराई। यद्यपि उमने पूण आत्म विद्वान क साथ कहा— नन्ही जीजी ! ऐसा कभी नहीं हो सकता।

जरा ध्यान हा रखना जमाना बडा खराब है। — गोमा न मुक

मन्गीर बाणी में उसे एक पनायना दी।

रुपा की घागीं में नदी उमक घा गई। उमक दड़ रुवर में बहा—
 'गनी' मैं भी एक गुजर की बनी हू। घतर पढ़ मुझ भाया दगा ता मैं
 तो उम गगा मजा गगाउगी वि बन्धू त्रिगा भग या' गगा।'

रुपा का उस प्रवर कण ध्वनि में उमक अग्नि निरुप्य की स्पष्ट
 दाभ्यक्ति है। गुजर जाति स्वभाव से स्वतंत्र है। यह किमा का दगा पर
 ११ जीना। उम तो घपने गुजरन पर घट्टू वि बाग है—घास्या है। वही
 रक्त धाज भी रुपा की पमनियों में बह रहा है। यदि किमी न उमक
 गगाग र गाय दूत किमा तो उसके परिणाम भयानक होंगे। यह गुन नहीं
 उठेगी—यह निदिग्ध रूप में बहा जा सकता है।

अब उ सेन के समीप आ गईं। घन गामा घपने गन में और रुपा
 गसर क रोम में चुप गईं। जाते घत वेचन मीश्राण सुस्ता का परस्पर
 आन प्रान हुआ। कन मिलने का एक दूगर का पनायना बचन भी शिया
 गया।

हां हो हो।

भोला हाथ में गोफण लिये पत्थर फेंक कर चिड़िया उड़ा रहा है।
 मवान के बिनार पर बैठा गेरू लेन रहा है। यद्यपि मीरान शरद है तथापि
 धुप में पर्याप्त गर्मी है। हवा की गति भी तीव्र हो गई है।

गोमा मवान पर चगी। टोकरी उतार कर बह बठ गई। अपनी
 भोना में पसीना पोछा और तनिक सुस्ता कर अपनी धवान मिटाने
 लगी।

मा घा गईं मा आ गईं। —एक एक मालक बिल्लाया
 और दौड़ कर गोमा से टिपट गया। फिर वह उमकी गानी में पम कर
 बठ गया।

गामा न उस अक में भरा। उसके गानों की बड़े दुनार से चूम

नया रूप देख रहा हूँ ।

“नया रूप ?” — गोमा हैरत में पड़कर बोली ।

हाँ ! — भाव भीने स्वर में भोला ने कहा । परन्तु इसे परिहास का नया रंग दकर पूछ लिया — गौरी । आज यह विजली किस पर गिरेगा ?

ओह ! — गोमा के चेहरे पर एक रंग आ रहा है और दूसरा जा रहा है । इसकी जीभ तो जैसे तालू से चिपक गई ।

बोल ना ? — भोला ने अतर्भंगी दृष्टि डालकर पुन पूछा ।

फगर ऐसी उल्टी मुल्टी बातें कराये तो तो ।

तो भाग जाएगी । — भोला बीच में बात काट कर

जाता ।

भाव विभोर हो उसका स्वर अंतर की गहराइयों में फूट कर निकल गया — ‘अब भागना मुश्किल है । परो में मोटी मोटी जजिरों जो लाल तो हैं ।

ओह ।

और भोला रस तंत्र हमन लगा । उसकी घकाउट बचनी और मोहक पा भर में समाप्त हो गई । वह प्रम न चित्त हो चारों ओर देखने लगा ।



संसार में कुछ व्यक्ति ऐस भी उत्पन्न होते हैं जिनके हाथ में भाग्य की रेखा नहीं होती। मध्य रात्रि के निविड अवकाश में जब वह अपनी आंखें मीनत हैं तो उनका प्रथम रोदन के साथ मारा घर करुण-श्रद्धा-दान करने लगता है। उनको जन्म देने वाली माँ प्रसव काल में ही स्वर्गवासी हो जाती है। योग का वात ! मरने वाला अपनी मौत मरता है परंतु तिरस्कार का त्रास यह प्रबोध और अकिंचन वाचक ही बनता है !

यदि उसका पिता भी अचानक असमय में ही मृत्यु का गोद में सो जायता इस नन्हें से जीव पर दुर्भाग्य की परछाई घनीभूत हो जाती है। वह लोग हमें घृणा एवं प्रकीर्णभरी दृष्टि में कोमल हैं। वातांतर में यह पतित कीड़-मकौनों के सम गदो नानियों और घटनाम गलियों में पलता है। यद्यपि इन चारों ओर से दुःखारों गानियों और फन्कारों मिलती हैं तथापि यह उन कटुतियों के बीच भी निर्दोष गति से घटना बना जाता है।

यही वचन की कहानी है इस बदनाम चम्भू की। जहाँ किसी दर की रिश्ते की बुझा न रहा की वचना बन्धन की निडकिया माना गया, कोई काका इस घर का चौकर बना कर प्रगार में रगन्ता रहा। बन्धन यह हम-भजन कर सब गन्त करता रहा। और एक दिन सबन विस्मय में गया कि वही चम्भू आज अपने उजड़े घर और वीरान भेती की नद डग में गवार रहा है। उसका कष्ट-महिम्न स्वभाव एवं कतव्य पराधन बुद्धि न सब को मुग्ध कर दिया है। धीरे धीरे उसके प्रति बनी पुरानी मा-यत्रायें

बनने लगी हैं और हृत्पथ में बनी घणा भी मिटने लगी है। सबकी दृष्टि में एक तथा सम्भू वस गया है जो आत्पर सम्मान का गुणान्न है और वह पुष्पान सम्भू का सवधा भिन्न है।

इसमें सदेह रही है सम्भू हृत्पथ में निनसार और विनोदप्रिय है। उगने होगे पर सदन सहृत्पथनापुण मस्वान लिली रहना है। चहरा उमका अये साहृत्पथ मरन और सात्त्विक है। रग साफ हल्का सावना है जो साविक है। उसकी सायो की पुप चुप दृष्टि विनी अज्ञात भावनोक में डूबी रहती है। उसकी गहरादया में ऐनी मासिकना छिपा पडा है जो अनायास हा नि न पर गहरी चोट करती है। एक लमी प्यास है—एक एसी भूण है जो उसक अताम के पदों का चीर कर फूट पडी है उसकी बाली पलकों के घेर में चिर स्यार्द रूप में छा गई है। कभी-कभी अरफुट तडपते हुए शब्द उसक मुह से अनचाहे बिलर जात हैं मगर उ ह ध्वनि नही मिलती है। कसी विवगता है। कसी विडम्बना है।

उसकी आत्मा की सूनी घाटियो में एक प्रकार का सूधी भेद्य अध कार परिध्यास है। गुन गुन और ज यमनस्क इन्टि कृद्य लोजता रहती है।

खोज !

एक पवित्र प्रकाश की खोज जो इस सवयासी अधेरे को मिटाकर नीरस और रसे जीवन में हर्षोल्लास की तर्पा कर दे।

प्रकाश !

स्नेह का अतीविक प्रकाश जिसके लिये उसका हृदय बचपन से तरस रहा है। उसक सन्निक ने स्पश से आज उसके मने प्राण समिन्न हो सकते हैं। प्रत्यक लगन वाली ठोकर और विष से बुझे अपमानजनक व्यग-बाणो ने घुणा तथा विरन्नि के अतिरिक्त उसे दिया हा क्या है। जब वह अपने अनीत के पुण्या पर मरसरो निगाह डालता है तो चहूँ और बटु स्मृतियो की काचिमा हो बिलग दिखान पडती है ।

परंतु कभी तो अभागे के दिन भी फिरते हैं। दर दर की ठोकर खान वाले याचक की खाली भोली म भी कही से दान मिल ही जाता है। कोई कृपापूर्वक उसे स्नेहदान द ही जाता है और गामा भाभी एमी ही निकली। पहली ही मुलाकात म उसे अपनाकर अपने हृदय का मारा वात्मन्य उस पर उठेल दिया है। वह तो जसे निहाल हो गया। प्रथम बार उस अनुभव हुआ कि उसका जीवन इतना निवृष्ट और निरथक नहीं है—जसा कि लोग समझते हैं।

धीरे धीरे उसमें अप्रत्याशित परिवर्तन होने लगा है। आज जीवन क प्रति आस्था एव श्रद्धा इतना अधिक पहले कभी नहीं थी। उसके प्रत्येक वाप म अब सुखि सभ्यता आ गई है और दिन प्रति दिन यह निखरती जा रही है। किसी अनात प्रेरणा के बनीभूत हो वह आज प्रौढ शाला म पढ़न जाता है। गाव की प्रत्येक गतिविधि म उसकी दिनचस्ती बढ गई है। वह स्वय हैरान है अपने इस बदल रख पर ।

शम्भू ने दो टिक्कड़ सके और फिर रमोई पानी के बतनो को लेकर बैठा, जिन्हे धोकर रख दिया। उसने भाडू उठाई और नय सिरे से घर की सफाई करने लगा। आजकल दिन भर आधा सी चपती रहती है घूटा फूम स घर भर जाता है। चाहे दिन भर हाथ म भाडू रखो, फिर भी इसका स नी।

सारा काम खत्म करके उसने दो लोटे पानी सिर पर डालने की सोची। इमये गदगी और सुस्ती दोनो से मुक्ति मिलेगी। गीघ्र ही इस नक विचार को काय रूप म परिणत करने का उमने निश्चय कर लिया।

नई धोती के साथ उसने नया कुता पहना। सरसो के तल का हाथ मुह और सिर पर फेरा। उससे ही हाथ और पर भी मल। अब वह रोटी खाने की तयारी करने लगा।

‘काका काका -!’

इतना कहने हुए गेरू ने घर में प्रवेश किया। उसके पास छोटी सी पोटली है। प्रत गम्भू ने उत्सुक होकर पूछा—' क्या है रे रोह ?'
' मा ने भेजा है ।'

उसने पोटली गम्भू के आगे रख दी ।

गम्भू ने चटपट पोटली खोली। उसमें दही की एक छोटी सी हाडा है और कटोरे में है बधुए की सज्जी। उसकी आँखें एकाएक प्रमत्ता में चमक उठी ।

' क्या क्या है रे मा ने ?' भावावेश में गम्भू ने पूछ लिया ।

मा ने कहा कि भाग कर यह पोटली गम्भू काका को दे आ बस ।' अनासक्त भाव से बालक ने उत्तर दिया ।

गम्भू ने चटाई बिछाई । खाने का सामान पास रखा और बटकर धीरे धीरे खाने लगा ।

गेरू ! आज काका के साथ रोटी नहीं खायेगा ?

नहीं काका ! मैं खा चुका ।

' भूटा कही का ।

' नहीं ! मैं सब बह रहा हूँ ।

गम्भू ने लोटा उठाकर पानी पिया, फिर गप्पार बर बाना—
गेरू ! एक बात पूछू ?

' पूछो ।

तरी नई मा बसी है रे ?

' बन्दी है ।

तेरा साह भी रगता है ?

' हा ।'

मारता तो नहीं ?

नहीं ।’

गम्भू ने घ्रास चरात हुए प्रदन किया—‘तुम्हें अपने हाथ से खान सिलाती है ?’

‘हां ।’—बालक न तनिक लावाकर कहा—‘मुझे गादी में बैठा कर खिलाती है ।’

‘अच्छा ।’

गम्भू ने दो चार घ्रास उल्टे भीचे त्रिय और फिर तोटा उठाकर पानी गटक त्रिया । आमुन से उठा और हाथ धोकर माथी पर बैठ गया । अब गुरु उमकी गोती में है और कावा भतीने बड़ी आरपीयता के साथ बातचीत कर रहे हैं । दोनों में खूब पट रही है ।

‘ओ गम्भू घ्रा आ ।’

तभी द्वार पर आकर रघुवा कौरी ने आवाज लगाई ।

‘क्या है रे ?’—प्रति उत्तर में गम्भू ने पूछा ।

वह अदर आ गया ।

आज हनुमान जी का ‘जागण है सो यात्र त्रिवान आया हू ।’

‘वो तो मुझे खूब याद है । तूने बेकार में तकलाफ की —बड़ी लापरवाही से गम्भू थाला ।’

ना भइया तेरा कौन भरासा कर ? पिछनी बार भी भूल गया था ।’

‘अरे गलती एक बार होती है । कोई बार बार ग्राडे ही होती है । तू चिंता न कर । आज हनुमान दावे के दो भजन गाऊंगा—दो भजन गाऊंगा कि योग मुझे रट्ट जाणने ।’

बस-बस । अब विश्वास हो गया ।’—रघुवा हस कर कहने

नगा—“क्या करूँ, तेरी भोजी ने कहा कि शम्भू देवर को याद दिला
आओ। उनका बिना जागण का रग जमता ही नहीं।

‘तो तू भी सुनले। आज भोजी ने कहना कि तुम्हारा देवर भूल
नहीं करेगा। ठडार्ई की लहर में यो चौकड़ी जमेगी कि यम ।

हृदय में उमड़ आए आनन्द के आवग को रात भर शम्भू ने कहा
मगर अतिम वाक्य झपूरा ही रह गया।

‘अच्छा अच्छा ।

आवस्त हो रघुवा बना गया।

शम्भू उसे काफी देर तक अपलक तावता रहा।

‘रानी ! गहर आकर मिन की नींदरी बरा म क्या हुई है ?’

बन की अरी बात का आज फिर मिनमिता घुब छोटे देर
 गोमा का विनिनाना स्वामाविक है । भोना कई दिनों म हट दिय बैटा
 मगर गोमा है ना उमकी एक नगी मूननी । अब ज्यों ज्यों यह इनकार
 जना जा रहा है । खों क्या उमका हठ भी हट होना जा रहा है । विविन
 दुया पदा हा कई है जिनम अतक उतभन है—व्यय की परेदानियां है ।

गाना न गजोगी म कहा—‘ मैं हने टोक नहीं समझती ।’

‘रानी ! पपन तो अच्छी है । तकिन घाग ता कर में उठ
 बाणो । कुद नाग पपट म थरी जाएगी । बाका कम जाने मर के
 नेग मटरी भर ना रहने ।’

‘तो मग कीन पिता की बात है । गांय क मने सोने की घटी
 गा है ।’

बहु मय ना गांय है पर मिन का नीकरा म कर ह नाग हाग
 धीर कुद पम भी क्या मर । पारा म गजोगी बगर होगा ।

बहु मय मयनो मयान है और है मर का मरम ।—गोमा का
 कल-अर विविन प्रगर हा मया— मुह अंधेरे लहरे ह दो बाउ पन
 जाना और नापुति क बाउ कानि मी ना बां हर्न मर नर है । कि
 बह लन छोड़ काय होगा है । कल है कि बहु बरी कर म

रहती है। कभी कभी दुपटन प भी हो जाती है जिनमें हाथ पाव तक बट आते हैं। ना बाबा ना मैं नहीं जाते दू गो। अन्न पर की यह रुगी मूगी भती।

धरी मरू है। इग तरह टरत म काम क न खेगा ! अगर मोत आना है ता यह वग भी नहीं टरगा।

ग्गी बात मुह मे मन निशानो। —अन्नक गोमा के होठ परधरा उठे।

हजार दियानी ।

धन भोला जमे हार गया। वग गोमा के पाव झा गया। उन मनाने की गज्ज म घाना— अगे मैं तो गस गे बह रहा था। मैं तुम्हारी मर्जी के बिना कुछ भी नहीं करूंगा। समझो।

यद्यपि भोला ने आश्वासन तो दिया है तथापि गोमा के मन में आगका बनी हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि इन दिनों भोला की मन स्थिति अत्यन्त अज्ञात एवं अस्थिर है। वह आत्म में क्या कुछ कर बैठे—कहा नहीं जा सकता।

जब फमत्त एक कर तयार हो गई और महाजन छानी पर घा घमने लो भोला का रहा सहा घम भी चुक गया। गेप बचे घनाज को देख कर उसका स्नि बँठ गया। उगास निराग और चिन्तानुर भोला को रोकना अब उगने बस म नहीं है।

गक नेक पत्नी की भाति गोमा ने उसे समझाया—धीरज से काम लेने की सलाह दी परन्तु भोला पर लो जैसे भूत सा सवार हो गया। वह ता खोया खोया सा रहता। उसकी सूनी मूनी आखो म एक प्रकार की घ्राधी मो उगती नजर घाती जो कभी भी गजब न सवती है।

साधार गोमा ने एक नीच निरदास खीचकर चुप्पी साध ली।

सब कुछ भाग्य भरामे छाड़ दिया मगर उसका मन कम आश्वस्त हो ?
 घाखी की नीद और मिल का करार तो जैसे सदा के नियम उससे ऋठ गया
 अथ रात्रि के सनाटे में अक्षर चौक चौक पडती है । निश्चित होकर सो
 नहीं पाती ।

एक रात उसकी आंखें लग गई । निरंतर जागरण में उसका मन
 प्राण अत्यधिक थक चुके हैं । बोझिल पलके नींद की परियों की हल्की
 हल्की थपकियों से बंद हो गई हैं ।

जब सुबह नेत्र धूप निकल आई और सूरज की किरणें छन कर
 खिडकी में से आने लगीं तो गोमा मसाला चौक कर उठ बैठी । पक्षिया की
 प्रभाती और गाय के रम्भान का स्वर सुनकर उसने एक बार अपने पति के
 विस्तर पर दृष्टिगत किया । वह थक सी रह गई—विस्तर खाली पडा
 है । वह दौड़ कर द्वार पर गई । इधर उधर दखा लेकिन भोजन का कहीं
 पता नहीं । उसने सोचा—शायद जगल को गये हैं । वह काम में
 लग गई ।

उसने दूध दुहा । गेरू को जगाकर उसके हाथ—मुट्ट घोये
 और गरम गरम दूध पिलाया । गाय को साली पानी किया और कच्चे पायने
 बँठ गई फिर भी भोला नहीं आया तो गोमा की खोजती बेचैन दृष्टि सुदूर
 भाग पर बिछ गई ।

दही मथा । अथ रोटिया बनने बैठ गई । गेरू हमजोनियों के
 मग खेनने निकल गया ।

गोमा का मन आकुल है—और हृदय आगबिन । अथ धीरे धीरे
 उसे विन्वाग होता जा रहा है कि भोजन गन्ध गया है । मिल में नीकरी
 बनने का हठ वर पूरा करना चाहना है—इसी के लिए वह प्रयत्न
 गोप्त है ।

— पर वे कह कर क्या नहीं गया ? गोमा का मन आक्रोश

म मर गया—उनकी इच्छा के विरुद्ध भला मैं कैसे रो सकती !— फिर इस प्रकार वहीं चुपके से घर से बाहर जाना उचिit है ? इसका तो यह प्रश्न हुआ कि मैं उनके प्रत्येक काम काय में विघ्न डालने वाली साठका हूँ ।

गोमा की आँसुओं में धरबस आँसू छनक आए ।

अगर गाव से उनसे इस तरह जान की खबर फल जाय ना वह कैसा रूप धारण करत ?—गोमा अचानक बाप उठी—अनेकानेक बच्चा की अप्प्राह फलकर परेगान करने लगी । कहीं कहने बानों की जुवानों भी पकड़ी जा सकती है । फिर लोग तो मझे ही उठी गुलटी सुनायग— जो मर कर कीसोंगे और मर मुह ब द है राज स—म स ।

गोमा अमल मानगिः र शणा म तहपनी रहती—उबलती रहती ।

साड़ी देर बाद । कभी उम पति पर क्रोध आता है तो अगले भाग उनकी नागन हठवर्मी पर तरग भी आता है । गहर जाने की यह घटना उस हमा भी नेती है और रग भी देती है । दो विचित्र विरोधी भावनाओं का उसके मन में संधप मा हो रहा है ।

इसी प्रकार अगमने बडे उठे मारा दिन बीत गया । न तो मान म रचि पग हुई और न किसी काम ही करने की इच्छा । बस चुपचाप वह चूल्हे के पास बठी रही । रोटिया और तरकारी ठंडी हो गई । चूल्हा बुझ कर राख भेष रह गई । हवा के किमी भूले मटके भाँके से एकाएक कितार भडभडा उठत है तो उसे किसी क आन का भ्रम उत्प न हो जाता है । उसके वसनाभिलाषी मत्र और उत्सुक कान तत्काल ही द्वार पर टिक जात हैं मगर शीघ्र ही भ्रम दूर हो जाता है ।

अचानक उसने बाहर किमी की पग रख सुनी । गोमा हतित होकर उठी और भावावग म द्वार की ओर भागी । अपनी गदन बातर निकान कर जो देखा तो निरागा क महामागर म डूब गई । पास ही एक कुत्ता मूखी राटी का टुकडा लिये इतर उधर धूम रहा है ।

गाय रम्भाइ । गोमा धीर धारे चलकर उसके पास आ गई । मूक पशु ने उसे बड़ी आत्मीयता से घूरा । उसने पुश्तल उठाकर डाली । गाय गिर घुन कर खाने लगी है । पता नहीं क्यों गोमा गाय की पीठ पर सिर रख कर फफक पड़ी । किसी अनात मानसिक उद्वेग अथवा किसी अशुभ विचार की परछाई सहसा उसके दुःखी मान में भाक गई ।

दिन ढन गया । गोधूलि की बगल भी प्रायः समाप्त हो गई । मात्र का सारा कोलाहल सिमट कर घरो में घुन गया और चारों ओर पून तथा शांति छा गई । आसमान नन्हें नन्हें तांगे से भर गया, फिर भी भोला नहीं आया ।

दिन भर की भूखी प्यासी गोमा से रहा न गया और वह बावली सी कभी घर में कभी बाहर बड़ी बचनी से चक्कर काटने लगी । वह ठिठक कर खड़ी हो जाती और बड़ी देर तक मुद्दूर अंधरे में तकती रहती । बार बार उसकी व्याकुल दृष्टि को निराश होना पड़ता ।

अकेली स्त्री घबरा गई । इधर गेरू ने भी अपने बापू के सबध में पूरी जानकारी पाने के लिये रट लगायी । यूँ वह दिन भर उसके कान खाता रहा लेकिन वह बहान बना कर उस समझाती रही । अब तो हठ पकड़ कर रौत भी लगा । गामा अजीब परेशानी में फस गई । मचमुच, वह भी रुआई सी हो गई । अब ता उसने घबरेल काम लकर बालक की भोली जिज्ञासा को ठगा । बिल्कुल सपेद भूठ बोलना पड़ा । उसके अटपट प्रश्नों का उत्तर देकर किमी न किसी तरह उसे शांत किया । उसे ढेर सारे म्मिलीने और मिठाई का लालच देकर सुलाया ।

ज्यों-ज्यों रात्रि की कालिमा गहन से गहनतर होती गई—गोमा का कलजा दुश्चिन्ताओं से बँटता गया । शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के विचारों की लोल लहरें उसके उद्विग्न मानस-सागर के तट से टकराने लगी । अब तो उसका धीरज अपनी अंतिम पराकाष्ठा पर पहुँच कर विस्फोटित

भोला गहर से लौट रहा है। आज उसके पर बड़ी पुर्तों से उठ रहे हैं। तबीयत खराब का घहाना बनाकर वह जल्दी ही छुट्टी लेकर निकल आया। सीधा शहर गया। वहाँ अपने लिये एक नया साफा खरीदा। दुकान पर खड़े खड़े ही बड़ी बेसमरी स उमे बाघने भी लगा। उस का यह उतावलापन दुकानदार से छिप न सका और उमने कौतूहलवण पूछा— 'चौधरी ! आज किस खुशी म इस तरह सज रहे हो ? कही गादी म जाना है ?

नहीं सेठजी ! —भोला ने सरनता से उत्तर दिया — मेरे पास केवल एक ही साफा है जो फट चुका। आज नया खरीदा है।

अच्छा अच्छा ।'— फिर दुकानदार ने एक शरारत भरी चुटकी ला— भई, चौधरन के लिये भा कुछ ।

चौधरन ।

भोला इस बार समझ गया अत बोला— सेठजी ! मैं चौधरी नहीं हूँ, राजपूत हूँ ।

ओह माफ करना भाई !

दुकान पर दूसरा ग्राहक आ गया। दुकानदार उससे बातचीत करने लगा। अब भोला भी अग्य सौदा खरीदने के अभिप्राय से आगे बढ़ गया।

अधेरा मुक आता है—तब कही भोला लोटना है। अ धेरे में ही जाना और अधेरे में ही आना। कभी कभी उसे बड़ी खीझ उत्पन्न होती है। एकाध बार तो इतनी ग्लानि हुई कि इस मनहूँग नौकरी को छोकर मारने का इरादा तक कर लिया, लेकिन इस क्षणिक भावना पर भी बड़ी मुश्किल से समय रखा। अब उस पता चना कि गाव में ही अपने खेत में काम करना कहीं अच्छा है। शीघ्र ही इस विचार को त्यागना पडा, चू कि गोमा के लाख धिराध बरन के बावजूद भी वह नहीं माना था ता अब नौकरी छूटन का प्रश्न ही नहीं उठता।

सबसे बड़ी कठिनाई तो यह है कि मिल के भीतर का जीवन उसने अनुभूत नहीं है।

जीवन ! रूखा मूखा नारस और कठोर ! जैसे तलवा का अब रुद्ध जल जिमका गतिशीलता किनारो की बाहा में धिर कर प्राय समाप्त हो जाती है। वहा का प्रत्येक व्यक्ति मनीनो के साथ रहने से एक प्रकार की मनीन सा बन गया है। पारस्परिक सद्भाव प्रेम एव दया जैम मानवीय गुणो का तो वहा एक प्रकार से अभाव ही है। केवल ईर्ष्या द्वेष बमनस्य, राग आदि अवगुणो का बाहुल्य है। भगडे फमाद तो वहा साधारण-सौ बात है। लगता है जस अपराध की प्रवृत्ति उनमें बढ़ता जा रही है।

बचारा भाला देहाता उनके बीच में बुरी तरह फम गया है। गाव के उमुक्त वातावरण में पला वह स्वतंत्र जीवन ! उसकी हर मान में खेतो की खुशबू है। उसकी प्रत्येक हसा में निभर की सी निमलता है और स्वभाव में है भूमती हुई बालियों की मस्ती ! और दूमरी आर है—ये लटक हुए चन्द्रे जस उन पर कालिख पुती है। खार्द खोइ उनीनी आँके जिनकी उयोति बन्ना की बुझ चुकी है। टूटा हुआ दिल जिसकी हमरन कभी की मर चुकी है। सचमुच दूर से देखने पर डूगर सगा सुहावन दिखते हैं मगर पास जाने पर बड़ी तिरागा होती है।

घाह ! —भोला के कण्ठ में फसी फभी नी एक नैराश्यपूर्ण भाव

पूट निराश्री ।

भोलामिह ।

हो ।

अपन हम नय सभ्या मन पर उग थागा आच्य आ । अर दर
पुकारन वान बो समीतुन तावन लग ।

राम राम भाई ! —पुकारन वाला बगन स घूमकर एक्कम
सामन आ गया ।

पाई तागा पडित जी ।

जीत रहो—जीत रणे ।

पडित जी ने हाथ उटाकर छमे धानीवाज दिया फिर पूछा—
मुना है आजकल तुम गहर म नौकरी करने हो ?

'हा पडित जी ! —भोला ने उत्तर दिया— आपकी वृत्त म
मिन म नग गई है ।

'बहुत अच्छा बहुत अच्छा ।

तनिक रुक कर ब बोन— 'जजमान ! कम से कम मुझ से पूछ
कर तो नौकरी पर जाना था । मैं तुम मुहूत निकाल कर बता देता । मने
तून विल्कुल ही भुला दिया । इतना पराया हो गया हू मैं ।

पडित जी के स्वर म एकाएक कम्प आ गया ।

भोला सङ्पका गया । उसे कोई उपयुक्त उत्तर नहीं सूझा । उसके
अतिरिक्त उनके अतिम वाक्याण न तो उसके मम स्थान का स्पश कर दिया
है । इन तिनो उनकी अवस्था अत्यंत शोचनीय है । अत मोम की भांति
द्रविण होकर उसन कहा— भूल हो गई पडित जी ! बहुत बडा भूत हा
ग । छिमा करे । यह लीजिए आपकी ।

और उतने अपन कुत्ते की जेब से एक रुपया निकाल कर उ

दिया ।

पंडित जी की उन्मत्त आँख चमक उठी जैसे सूखे पौधे का थोड़ी सी जल की बूँद अचानक मिल गई है ।

‘सखी रहो माला ठाण्ड । सुखी रहो ।’ — पंडित जी ने तो गद् गद् कण्ठ से आशीर्वाचों का वर्षा सी कर दी ।

‘पुत्रवान धनवान गुणवान ।

यह क्रम पता नहीं कहा तक चलता यद्यपि इसी बीच भोग ने आना चाहने की गरज से हाथ नहीं ज़ाँटता — ‘पंडितजी अब चलता हूँ ।

इसमें भी पंडित जी का उन्मत्त रस्ती भर कम न हुआ ।

‘जाओ । भगवान तुम्हारा भला ही करेगा ।’

पंडित जी के उन्मत्त थाड़ में सम्पर्क ने उन्मत्त प्रभावित किया है । उनके प्रति सहानुभूति उमड़ उमड़ कर उमड़ मन को भिगा रही है । जब तो उन्मत्त एक रूपया रत्ना भी बुरा लगा । रत्न ना बड़े तो यह कइसी क्या ? कम से कम पाँच का नाट ता देना था । उन्मत्त पड़तावा सा होने लगा किन्तु अब क्या हो ?

इस बार सेठ फकीर चण्ड ने टुकान पर बड़े बड़े ही उसे आवाज लगाई— माला ।

जय रामजी की सठजी ।

भोना ने खड़े खड़े ही उन्मत्त अभिवादन किया ।

जयराम जी की भाँ— मन्त्रज्ञान वाली आत्मीयता में उत्तर दिया तत्पश्चात् बोले— तनिक दुकान पर ता जाओ । इस तरह सीधे ही चले जाओग क्या ?

भाँता आज प्रसन्न है, अतः वह उनके जाग्रह को टाल न सका ।

‘कहिए, सेठजी ! क्या बात है ?’ — भोला ने बठले हुए पूछा ।
‘अरे !’ — सेठजी की आँखें षमी फटी रह गई जमे उठोने कोई
अज्ञात देखा हो ।

‘भई तू तो आजकल फटाक स बोलन लगा है । लगता है तुझे
भी शहर का हवा लग गई है ।

सठजी अब बतुका हसा हस पडे ।

अपनी हसी क आवेग को रोक कर व पुन कहने लगे— पर
बच्चू ! ध्यान रखना यह शहर की हवा बडी खराब होती है । अच्छे अच्छे
बपेट मे जाकर चिल आ गए है ।

वे पुन साखती हसी हस पडे ।

भोला अब परी तरह भेप गया ।

‘नहा सेठजी ! गरीब आत्मा हू । अब वह उम्र भी निकल गई
है । क्या बचारा हवा लगनी ? बस पेट भरने के लिए मजूरा कर रहा
हूँ ।’

सेठजी अपनी गद्दी पर पसर गये । भोला के हाथ के धन को
नश्य करके बोलने— यह तो बान समझ म आ गई कि तुम शहर म नौकरा
करते हो, उकिन इमका यह तो मतलब नहीं कि तुम सोना मुल्क भी बहा
म खरीद कर लाया । भन आत्मी हमने यह दुकान फिर भव्य मारन क
लिए खोमी है ।

भोला चक्कर म पड गया । यदि कोई दूसरा समय होता ता वह
सेठजी का मुहताब उत्तर देता । व अब भी तक भूना नहीं है—उमका
बवाना म उनका ही प्रमुख हाथ रहा है । परन्तु आज वह ऐसा मन स्थिति
मे है कि किमा का भी बडवी बान कहना मुनामिब नहीं समझता ।

ऐसी बान तो नहीं है सठ जी । कुछ जरूरी सामान ही खरीद

कर लाया हूँ ।'

अपने कथन का अनुभूत प्रभाव पडत देख सेठजी बोले— 'दिल भाता ! मैं तो पिछनी सागी बातें भूल चुका हूँ और तुमसे भी यही कहना है कि अगर तेरे दिल में कोई मलाल है तो वो निकाल ले । बेकार म खिच खिच रहने से भी क्या ?

'मेरे दिल म तो कुछ नहा है ।

'बस उस, जब भरासा हो गया ।'—सेठजी आश्वस्त होकर कहने लग— किमी चीज वस्त की जरूरत हो तो बिना झिझक आ जाना । मैं मना नही करूंगा ।'

'जरूर सेठजी जरूर ।'

उनक इस सौम्य पूण व्यवहार से भोला श्रद्धा आवित हो उठा है । आज सेठजी उसक हृदय के उच्चासन पर अनायास ही बठ गय है । उनकी दृष्टि म व महान बन गये हैं ।

आज जो कुछ हो रहा है वह सबया अक्लिप्त है—अप्रत्याशित है । प्रथम बार आज उसे अनुभव हुआ कि गाव म उसका क्या सम्मान है ?

अचानक उसकी यह की बिडिया ने फरफुरी ली ।

गोमा ता बेकार म राक रही थी । यह मिल की नौकरी का ही प्रताप है जो सब आदर करते हैं । एक समय था तब ये सीधे मुह बात न करत थे और अब अब खुगामद करते हैं ।'

इही विचार-तरंगो म डूबते उभरते उनने गप माग तय किया ।

गोमा रसोई में बैठी दाल बीन रही है । झुटपुटे में उसके बालो पर सूरज की अंतिम किरण का प्रतिबिम्ब इस प्रकार पड रहा है—जैसे कोई सोने का तीर । भोला उसकी तामयता को प्रेमातुर लोचनो म देखता रहा, तत्पश्चात् उसने थले में से चुनरी निकाल कर चुपके में उस पर डान दी ।

आजकल मिल में ओवर टाइम काम चलता है इसलिए भाना बड़ी देरी से सूता है। सारा धान एक कर चूर हो जाता है। जोड़-जोड़ कर करने लगने हैं। फिर दो कोस गांव का रास्ता तय करना पड़ता है, बचारे को नानी पाद आ जाती है।

चारों ओर अंधकार फैला है। भोला को लगता है जैसे एक महापृथ्वी उसकी अत्स की सूनीवादियों में धनी भूत होता जा रहा है।

अपने चंद साथियों के साथ भोला जब मिल के पाटक से बाहर निकला तो उनके पर मन मन भर के हो रहे हैं। आंखों में जलन और मस्तिष्क में हल्की हल्की पीड़ा आरम्भ हो गई है। मीठा मीठी खारिज के साथ मला अब सूखने भी लगा है। पपड़ी जमे हाठों पर प्यास ऐसे चिपक गई है, जो पानी से भी बुझने वाली नहीं है।

भाला के साथियों ने परस्पर रहस्यपूर्ण ढंग से बानापूनी की, फिर उसके पास धाकर बोले— भोला ! आज तुम गांव मत जाओ।

‘क्यों ?’—बड़ तो एकलम आश्चर्याचिंत होकर पूछ बैठ।

‘घर, तुम बुरी तरह एक चुक हो, ऊपर से इतनी रात भी हो गई है। तुम्हारा जाना ठीक नहीं।’

‘अरे बाहू आज कौसी बातें करते हो ? रोज ही जाता हूँ। आज कौन सी नई बात हो गई ?’

“लेकिन आज जा नहीं पायाने ।’ —किसी साथी का तभी दृढ़ निश्चय सुनाई पड़ा ।

नहीं नहीं, मैं तो जाऊंगा ।”

भोला घबरा सा गया ।

“अब जोरू के मजूर ।’ —उनम से एक हमकर बोला—‘सीधी तरह चलता है या एक घोल जमाऊ ।’

“नहीं नहा ।

“बेचारा अपनी नई लुगाईं में बड़ा डरता है । एक दिन टाइम पर नहीं जाएगा तो वह भाडू मार कर घर से बाहर निकाल दगी । डरपोक कहीं का ।’

फिक से हसकर सब ने उसका मजाक उड़ाया ।

अब सबन उसे जवदस्ती पकड़ा और धमीट कर ल जान लगे । वह विरोध में चीपता चिल्लाता रहा मगर वहा कौन सुनने वाला है ।

आधी रात के बाद यह टोली एक ऐसे स्थान से निकली, जहा की फिजा में मन्होश बनाने वाली हवा निर्बाध गति से धूमती है । परे डगमगाने लगते हैं । जीभ अतंगल प्रलाप करती है । आँखों के रक्तिम डोर तन जाते हैं । उनमें जीवन की रगिनिमा गहरी होकर भर जाती है ।

क्यों, भोला ! यार कैसा रहा ?’

‘ब बड़ा मैं मजा आ थाया राम कसम ।’

‘तुम तु मैं तो भा भागे जा जा रहे थे ।’

‘ मैं मैं ग गया था ।’

अब घर जाना या या या ।”

'अरे, गो गाली मा मार घर की। अरे रा राम तो य यही ।'

इतना कहकर भोगा बीच सहक म पर फलाकर पसर गया।

'यया ।'

इसका एक साथी विद्रूप भरी हसी हुआ।

बेटा ! एकदम काम स गया।

उसके साथी उमे उठाने का प्रयत्न करने लगे।

'नही। ह ह हम तो यही सो यो।

भाला ।'

तुम ।'

उठ।

क्यों ?'

यह महक है।

किसी के बाप की न रही है।

अब म भोगा का हाथ पकड कर खींचने लगे।

अरे हट ।'

चरना है दा ।

* (1) प्रकार पत्रम धवरा और लीचागाली करत हुए वे अपने अपने घरों पर पहुँच। जिस आत्मी के जिम्मे माना पडा —उसे छोटी परे जाना उगाना पडी। अत म वह भोगा को एक माची पर सुनाने में मग्न रहा।

मुबड जब आग खुची तो रात की सारी घटनायें मोला के अंत

मन में बटु स्मृतिया बदनकर क्रमश धूमने लगी । विपैले घुए के गोले से उठने लग जिसमें दम सा घुटने लगा । धीरे धीरे बाहरी उन्हासी में पूरी तरह डूब गया ।

दिन भर उसका मन न लगा । कोइ काटा है जो अदर ही अदर चुभ रहा है । गोमा की वे तरसती आखे जा मदव उसकी अगवानी में मतक पावडे बिछा देती हैं, आज रो रो कर सूज गई है । उसका वह स्नेह सिक्त हृन्म्य, जो पति पर जोटावर होन के निय हर घडी तयार रहता है बार बार अनिष्ट की आशका मे डूब डूब रहा होगा और और ।

‘आह !’

अपनी इस हृदयहीनता पर उसे अत्यन्त शोभ उत्पन्न हुआ ।
कब ?

समय खरम होने से पहले ही उसकी अधीरता इतनी अधिक बढ़ गई कि उस विवग होकर छुट्टी ननी पडी । अब तो उसके भारी भारी पर भी अपने आप फुर्ती से घर की ओर उडने से लगे ।

घर पर पहुंचा तो वही पडोस का स्त्रियों का अच्छा खासा जमघट देखकर वह अचानक घबरा गया ।

‘ऐसी क्या बात हो गई है जो जो ?’

अनेकानक दुश्चिन्ताओं से उसका बनावत मन परिवेष्टित हो गया । कभी एक स्त्री निकमनी है ता दूसरी अदर चली जाती है । सब यम्त हैं । किमा को भो क्षण भर ठहर कर बात करन को भी फुमत नही है । आखिर यह सब क्या माजरा है ?

देहरी पर उसका पाव रातना हुआ कि सामने उमे गम्भू मिल गया । उसका चेहरा विचित्र-सी बचनी ओर दु ख से निष्प्रभ हो रहा है ।

भोला न पूछा— क्या खान है गम्भू ?

शम्भू की दृष्टि घबानक कठोर हो गई ।

पहले यह बताओ कि तुम रात भर रहे कहा ?

शम्भू । बात दरअसल मैं यह है कि मैं मैं मैं ।

बस भोगा की जीभ जैसे ऐंठ सी गई ।

तुम इतने लापरवाह हो गये हो—यह मैंने कभी नहीं सोचा है ।

—शम्भू के होठों पर क्रूर व्यंग उभर आया— माभी घर पर बीमार है और तुम्हें तनिक भी फिक्र नहीं ।

बीमार ! —मर्माहत हो मोला चील पड़ा ।

‘ हा, बीमार ! —शम्भू कहने लगा— बल शाम को नदी पर उनका घर फिसल गया और और ।’

‘ है ।’

मोला के प्राण ऐसे छटपटाए जैसे निकलने वाले हैं । एक पल का विलम्ब किये बिना वह घर में घुस गया । कोठरी में से निकल कर पड़ोसिन बीरतो का एक छोटा-सा झुंड सहसा उसके सामने पड़ गया । अब क्या था ? सब उसे कोसने लगीं ।

‘ क्यों रात भर कहा रहे ?’

‘ मौसी ! शहर की हवा लग गई है ।’

‘ दाहू पी छला बना रात भर घूमता होगा ।’

‘ अब लुगाई की कौन पूछे ? मरे या जिए ।’

‘ बेचारी का हमल गिर गया । रात भर तड़पती रही—रोती रही । इस जानलेवा पीड़ा में भी वह इस निर्मोही को याद करती रही ।’

‘ भला हो दाई मा का, जि हाने उसे बचा लिया ।’

‘ इस भरतार के पीछे तो मरी ही समझो । यह तो निःसमत ही अच्छी है जो ऐन वक्त पर शम्भू आ गया, वरना बेचारी चीखती चिल्लाती वहा नगी किनारे ही प्राण तज देती ।’

‘ ओह !’

इन निमम तीक्ष्ण कटाक्ष बाणा को सहन करना अब भोला के लिए दूभर हो गया है । उसकी साधारण-सी भूल और नादानी ने बसा रूप धारण कर लिया है—वह अब स्पष्ट हो गया है ।

आत्म ग्लानि और आत्म प्रताडना की तीव्र लहर उसके हृदय में दौड़ गई । उसका सिर अपने आप झुक गया । उसकी आंखों में वेदना साकार हा उठी । वे ऐसी हो रही थीं, जमे वपणो मुख बादल ।

‘ गोमा !’

और वह माची में पड़ी उस निर्जीव सी देह की छाती पर सिर रख कर सिसक पड़ा ।

‘ मुझे माफ कर दो गोमा ।’—भोला जैसे उद्विग्न और विक्रिप्त हो गया— मुझे छोड़ कर मत जाओ गोमा ।

आश्चय !

तभी गोमा की बंद पलकें खुली, निस्पंद अधर धिरके, रक्तहीन सफे मुख पर फीकी सी दर्दाली मुस्कान आ गई ।

‘ चिंता न करो अब अब अब मैं ठीक हूँ ।

‘हैं ! गोमा ! तुमने कुछ कहा । —भोला की कातर आंखों की बरसात अकस्मात् थम गई । हृदय के अंधरे कोने में जैसे सहस्र आशा-दीप जल उठे ।

‘हम ! मैं मैं अब ठीक हूँ । —गोमा की वह मुस्कान

प्रेम की गुलाबी आभा न अधिक मनोहारी हो गई ।

सच गोमा !

भोला जैसे आग हथों में को बरबस रोक न सका । वह उस
चेहरे पर गरम गरम चुम्बना की पून-वर्षा भी करने लगा ।



‘देवर !’

हा भाभी !

तुमने मेरी रात दिन दग्न भाल करके मझे बचा लिया ।’

‘यह कोई ऐहसान थोड़े ही है ।’

टोक है । अब तुम्हें तकलीफ उठाने की जरूरत नही है ।’

‘वाह ! इसमें तकलीफ बँसी ? अपने घर बठा नही रहा और पास ही दा घड़ी बैठ गया तो क्या घर जाऊगा ?’

‘कि तु अब इसकी भी जरूरत नही तुम्हें भी तो आराम मिलना ।’

‘नही भाभी ! आराम हराम है ।’

आज भी शम्भू हसकर टांग गया ।

मामा य रूप से गोमा स्वास्थ्य लाभ कर चुकी है, यद्यपि कमजारी प है । घर के काम बाज में हाथ डालती है तो शम्भू आड़े जा जाना ह उसक हाथ में बतन छीन लेता है । एक मद रमोई पाना कर और र टुकुर देखती रह यह ता बड़ी शम की बात है । पर तु वह कर भी उसका यह मु हबोला देवर माची पर स उठने ही नही देता ।

कभी विनाद की मुद्रा में वह कहती है—जगता है मुझे अब

देवरानी की सोज घुस करनी होगी ।'

क्या भला ?'

मरा यह अनाथ देवर ध्यान हाथ स टिक्कड सब छेक कर सटि माता जा रहा है ।

'भाभी !'

शम्भू एकदम घुस गया । अपने हाथ के नाम को छुड़ कर वह गोमा के समीप चला आया । उसकी आंखों में दृष्टि गढा कर सजीदगा स कहने लगा— भाभी ! मेरी आंखों में भाक कर कहो कि मैं अनाथ हू ।

गोमा तो सन सी रह गई । उसकी साधारण सी हमी की बात इस तरह चोट भी कर सवती है—उस स्वप्न में भी आशा नहीं थी । अब तो उस खे है—पछतावा है ।

शम्भू भी समझ गया कि वह आवेश में अथ का अनथ कर बठा है, बात पलटने का गरज में होठों पर जवरन हमी खीव गया ।

'भाभा मैं तुम्हारे रहो अनाथ कैसे हो सकता हू ?'

गोमा ने गहरी ओर विद्यासपूर्ण निगाह डाली ।

हा भाभी ! तुमसे अधिक मेरा अपना गोन है !'—अधिकार पूर्ण स्वर में शम्भू ने कहा ।

हिन, ऐसे भी कोई कहते हैं ।'

गोमा के मुख पर चमक आई अनुराग की वह मोटक मदा शम्भू को भा गई । वह तो जस निहान हो गया ।

'सब भाभी ! ओह ।

'पगने कहीं के ।'

अब गोमा खिलखिला पढी । उसने अघरों के बीच सफे दत

शक्ति मोतियों की तडी क सटा चमक उठी है ।

×

×

×

आत्मी का पर एक बार बाहर पड कर फिसल जाता है तो फिर उमका सम्मल पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है । उसकी मित्र मडली इसम हादिक सहयोग प्रदान करती है और उमके वापिस लौटने वाल पगो म एक भाटी बेडी डाल देती है । इसक अतिरिक्त बुराई में भी एक ऐसी आकषण शक्ति होती है जो अपना और ललचाई दृष्टि में देखने वाले की तत्काल ही आगाग में समेट लेता है । पहले पहल उमका दम धु ता है, गला सूखता है आँखों में कर्मना धु आ सा भर जाता है, फिर भी उसक होठा पर ऐसा स्वाग् नग जाता है कि निम चाह कर भी छाडा नहीं जा सकता । उसे चलन के निण मन आतुर रहता है ।

यन्ने हाल भोना का हे ।

गामा जब तक बीमार रही उसन कुछ दिन की छुट्टिया ली फिर नौकरी पर भा जाता तो समय पर लौट आता । लेकिन डघर ज्या ज्यो वह टोक होती गई—त्यो त्यो भाला की नापरवाही बढती गई । कुछ मोंके ऐस भा आए कि गोमा ने सारी रात आगा म काटी और वह सुबह तक गायब । लौट कर आया तो हठी गोमा की लगा करने खुतामद । निम्न शिखायत के बाद थककर मभभीता हो ही जाता है । मानव स्वभाव है । भोना कान पकड कुसूर क लिय माफी मागता है और आइदा गलती न करने की कसमें काता है ।

परन्तु फिर भी कुत्ते की पूछ टणी की टेढी ।

गामा अत्र गम्भीर रहने लगी है । पति क नये व्यवहार म वह भातवित्त है—भयभीत है । रह रह कर अनात दुश्चिन्तार्ये उमे मताती रहती है । अब उसका मौन विरोध मुखर होने लगा है । आए दिन भगडा कर बैठती है । इसका दुष्परिणाम यह निकला कि अब भोला छक कर पीता है ।

सफ़ीच का वह भीना मा व्यथघान कभी का पत्र पुत्रा है । अपने ही गाव में पियववडा की टोली म बडे गौरु स गरीब हो गया है । एक अजीब मस्ती क आगम म उमकी जिदगी गुजर रही है । न उम कल की बिता है और न आज का मोच । बस उसका सार गम ता वानन की नगोली गध म पुन विन गय है ।

गोमा जताती है तो जला करे । रोती है - रोया करे । महा विम परवाह है । यन् गानिया बकती है तो उल्ट मार सानी पत्नी है । आजकल उमकी घारा ब घाम् भी मूचने नही पात । दुर्भाग्य की शशुभ छाया उनके जोदन पध पर कानी घटायें बन कर द्या ग- है जिसक गभ म उसका बत मान घोर भविष्य धीरे धीरे दूबना चना जा रहा है ।

योग हमने हैं—तान कमल है । वि ।पकर गाव की अण्ड गवार स्त्रिया म ईर्ष्या का भाव अत्यत तीव्र होता है अतः ब बटन स बब चूकती ? किमी का घर चरता है ता उनका बना से । उह तो चटपारे गकर जनाव श्यक बायें धनान म धान द सा आता है । किमी का कनेता छत्रनी हाता है ता टूटा करे ? किसे बिता है ।

उनम स बम रुपा ही एक ऐसी है जो उमके रिसा घावा पर ठण रूप लगाकर हिम्मत बधाती है । उमके यहन गरम गरम घामुधों का अवन आचन स पोछ कर सटानुभूति प्रकट करती है— रा ना जीजी । सुवह का भूता अकसर गाम को घर लौट ही आता है ।

‘नही रुपा नही । अब ता तकदीर ही फूट गई है ।

गोमा के मुह से ददनाक चीत्कार सी निकल पडती है ।

एसा खाटी बात मत निवाल ।’—रुपा का मन सवेदना से भोग भोग जाता है— मद की जात है कभी पर उल्ट सुल्टा पड ही जाता है ।’

‘अरी, बहिन ! उहोने तो बर्शमी धारण करली है ।’—गोमा की हिचकी बढ हो जाती है ।

नेप सारे घन्त ग्रामुआ के आधेग म बह गए । वह सिर धुन कर रोती रही और रूपा उसे समझती रही ।

इन दिनो आशा का कन्ध बिन्दु तो है गम्भू । गाव म वही एक अचला यक्ति है जो गोमा क दिल के दद को भला भानि जानता है । इसका भाग पर भी पभाव है । तकिज जय आदमी का बुद्धि भ्रष्ट हो जातो ह ता अपन भी पराये लगत है । भोला न उसदी नेक मनाह का निरादर ही नही किया बल्कि माथ ही उसका भी तिरस्कार किया और स्पष्ट चेनावमी देकर उसने कहा कि मर माग म आन की कागिन न कर । वह अपना भला नुरा खूब समझता है ।

इम अप्रत्याशित दु यवहाग से वह बहुत दु खी है ।

गराव न धीरे धीरे अपना दुःप्रभाव डानना आरम्भ किया । अच्छा प्यासा यक्ति अदर से खोपना होता चला गया । उसकी अदर घसी सुनी मूनी आखें उस धारान खण्डहर के सन्त वडी भयानक नग रनी है जिसकी था कब की उजड चुकी है । उसके दूधे कगूगे पर बैठ कर तो उन्लू अपना मनरुम आवाज म अध रात्रि के सनाह म चिल्लाने हैं—जम थ आने बाल विनाग की पूव सूचना दे रहे हैं ।

फिर जैमी सम्भावना थी—वही हुआ । बीमारी न अचानक भोला पर हमला बोल दिया और देखते देखते वह माची पर पड गया ।

गोमा ने अपना सिर पाट लिया ।

गोमा ने पानी की मटकी उतारी । उसे यथा स्थान रखकर अपनी भीगी ओढ़नी को निचोड़ा । बिखरे तालों को जिनमें नही नही पानी की बुद उलभी हैं गोले हाथों से उन्हें पीछे किया और फिर लहंगे की सलबत ठीक करने के लिये उसे फटकारा ।

सबह बोल चुकी है यद्यपि धूप में पर्याप्त गर्मी आ गई है । नवा थमी सी साफ और मौन । उससे जे घुन रहा है । पेड़ों की छाया सिकुड़ गई है ।

भोला बीमार है । कई माह हो गये हैं । माची पकड़ कर पण है । बुखार चन्ता है । जुकाम बराबर बना हुता है । छाती में खासी घुटती रहती है । पहन कुछ दिनों तक सापरवाही में वह काम पर जाता रहा मगर जब बीमारी ने जोर पकड़ा तो विवश हो खटिया से लग गया ।

गाववालों के दो ही सबसे बड़े गत्रु हैं एक निधनता और दूसरी बीमारी । जब दूसरे गत्रु का प्रबल आक्रमण अपने पति पर हुआ तो गोमा का चिन्तित होना स्वाभाविक है । गाव के हकीम बघ आए नई बीमारी का नाम सुने और महंगी दवाइया आने लगी । अधिक वर्षा के कारण खेती भी उजड़ गई । दुर्भाग्य ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया परन्तु गोमा ने हिम्मत न हारी और वह सागर तट की चट्टान के समान अडिग खड़ी है, जिसमें सिर मार मार कर उद्दाम लहरे बिखर बिखर जाती हैं ।

वेह अपने बापू के लिये चित्तम भरकर ल आया । गोमा भी

उसके पीछे-पीछे चली आई ।

भोला चादर बाड़े माँची पर खामोश बैठा है । उसकी दृष्टि नहीं या खो जाती है । वह इन दिनों दुबल हो गया है । बीमारी और कमजोरी ने उसका सारा मुख मडल निष्प्रभ हो गया है । प्रीड़ता की हल्की हल्की रेखायें उभरने लगी हैं, जिनकी ओर से दीनता, विवशता और अत्यक्त मार्मिक पीड़ा स्पष्ट भाक रही है । यद्यपि वह मद मद मुस्कराया तथापि उसका उल्लास तो जस कभी का मिट चुका है । उसकी जीवनदायिनी गुलाबी आभा निस्तेज हो गई है—ढलता भाभ को दयनीय कुरूपता उसकी प्रत्येक रेखा में भर सी गई है ।

यह बात नहीं कि गोमा कुछ समझती ही नहीं है । वह तो सहसा उन्मत्त हो उठती है । कभी कभी हृदय में ऐसी दर्दिली टीस उठती है कि उसकी थरथराहटें अधरा पर मौन हो जम जाती हैं ।

‘आओ बँठो !’

भोला क इस प्यार भरे निमन्त्रण को वह अस्वीकार न कर सकी और नई दुल्हन की तरह सजीली शर्मिली बन कर माँची पर बठ गई ।

भोला के हीनों पर अचानक सूखी सी मुस्कान खेल गई । धीरे धीरे वह रगान होन लगा । वह गोमा के मुख पर भूमती एक नटखट लट का छूकर स्नेह सित्त स्वर में बोला—रानी ! आज बड़ी देर लगा दी गयी पर ।

गोमा का सम्पूर्ण आनन एकदम अहण हो गया । मुरभार कली इस प्यार भरे स्पर्श से खिल उठी ।

‘दखो रोहू बठा है ।’

बस पल भर में वह नजाकर भाग गई । भोला क्षिन्नचित्त पडा ।

‘पगली कहीं की !’

गोमा नु दे के जाग बठी है । हरा मपी का तरकारी बना बना है । सब रोजियां खेत रही है । सब ने हा बिपा तो एक मोरा उदार का सोने में भी शापकर गुरमा बरा रिया । उदार से गुड जाना—मोरा हो गया । बापक मुदिन मन से गाते लगा ।

‘भाभी भाभा !

भवानक दाम्भू मे बाहर गौर मचावा ।

गोमा क हाप रक गये ।

कया बात है ? —उता पूरा ।

तुम बटी भगी हा और बाहर बहरा नूरे ग गुन गया ।

गोमा हरबडा कर उगी । पनीं से बाहर चली गई ।

दाम्भू मुह भीव कर दबी हगा हग पडा ।

प्राय दोहो री तर मे गोमा बाहर का काम निपटाकर आ र्क । तबिन एम समय मुगाटुनि बिल्लुत बलत गई है । उसकी प्राय रोय म साल है । उरक हाप म भाड रे । उता का— मैं सब जानता हू । यह किगवी ।

अपने घगमास बावम को अधुग छोडकर गोमा भाडू लकर बठी । ममभ गया दाम्भू उताका लक्ष्य । वर दूर ही स चिल्लामा— ‘भाभी ! मैं न पुछ नहा किया है ।’

‘यह तो घभी पता चत जायेगा ।’

दाम्भू उठकर भागा । वह लोधा भोला के पास चला गया ।

‘कया बात है रे दाम्भू ?’ —भोला ने पूछ लिया ।

जाने से गोमा आ गई ।

‘देखो, भइया ! अरज फिर भाभी भाडू लेकर पीछे पडी है ।’

भोला हस पडा ।

‘अरी भागवान ! क्या बेचारे के पीछे पडी है हाथ धोकर ।’

य बेचारे नहीं हैं । —गोमा तडाक से बोली—‘अभी बछड़े को छुट छूट स खोन कर आए हैं और कहन है कि वह अपन आप खुल गया है ।’

नहा भइया । य मेरा भूटा नाम लेती है ।

‘नहीं भइया, य मेरा भूटा नाम लेती है तुम !’ —गोमा न मुह दिगाह कर चिढ़ाया—‘हिग ! भूटे कहीं के ।’

अरे भई तून कोई अपनी आखा से देगा थोड ही है । —भोगा ने बीच-बचाव करने हुए कहा—‘बेचारे को बेकार म तग क्या करती है ?’

गोमा ने एक तोखी दृष्टि पति पर डाली ।

तो मैं भूठ क्ती हू ?

बस प्रश्न पूछकर गोमा एक भटके के साथ धूम गई । फिर लजी से कदम उठाती हुई बाहर चली गई ।

भोला पुन हम पडा ।

‘गम्भू !

हा भइया !”

‘तूने अपनी भाभी को नाराज कर दिया ।

कर तो दिया है पर अब ?’

अब क्या । जाकर मना ।

अच्छा ।

गम्भू उठा और सीधा रसोईघर में चला गया। गोमा ज्वार की रोटियां सेक रही है। लेकिन उसका मिजाज अभी तक बिगड़ा हुआ है। गम्भू समझ गया थोड़ी सावधानता से काम लेना पड़ेगा।

‘भाभी !’

गोमा चुप।

‘भाभी— !’

गोमा ने दृष्टि निक्षेप तक नहीं किया। बस, अपना काम करती रही।

‘भाभी ! तुम नाराज हो गई।’

गोमा ने तो न बोलने की कसम खा रखा है। गम्भू ने समझ लिया कि भाभी को मनाना मुश्किल है अतः फौरन उसने बान पकड़े और उठ बैठ करने लगा।

भाभी ! क्षमा चाहता हूँ।

गोमा गम्भू की यह हरकत देखकर अपने आपकी राक न मकी और वह हस पड़ा। वास्तव में गम्भू नौकी के मतपत्रे की तरह यदा ही परिहासपूर्ण अभिनय कर रहा है।



“भइया ! मेरा कहा मानो तो फिर खेती शुरू करदो । यह मिल की नौकरी का झभट ठीक नहीं ।”

नही र शम्भू ! यह खेती का काम मेरे बस का नहीं ।

‘वाह ! इसमें परेशान होने की ऐसी क्या बात है ?’

‘इसमें बरकत नहीं । अपना खेत रेहन पड़ा है । हमारे का खेत किराये लेकर जुतवाई कराता हू तो लोग कस कर पस खते हैं । फिर दो साज से ऐन वक्त पर भारी बरखा हो जाती है और सत्यानाज कर दती है । ना बाबा ! मैं इस चक्कर में पड़ने वाली नहीं ।’

भोला का सहज स्वाभाविक कण्ठ-स्वर एकाएक कृष्टित हो गया ।

“भइया ! बि ता क्यों करते हो ?”—शम्भू कहने लगा—‘अगर तुम्हारा खेत नहीं है तो कोई हज नहीं । मेरा खेत पड़ा है । बगली फसल तुम उसमें जुतवा लेना ।’

भोला की आँखों में एक नई चमक आ गई—एक नय उत्साह से उमरा चेहरा खिल उठा । पास बठी गोमा भी यह प्रस्ताव सुनकर एक बार चौंक पड़ी । फिर उस पर विचार करने लगी । आज शम्भू उनकी दृष्टि में बहुत ऊँचा उठ गया है । मुसीबत में काम आने वाला व्यक्ति ही अपना होता है । अपने पराये का भेद तो उसी समय जाना जाता है ।

गोमा अच्छी तरह जानती है कि शम्भू के खेत में गेहूँ और चने खूब होने हैं इसलिए गांध के कई लोगों की लज्जाई दृष्टि उस पर लगी

है। यद्यपि गामा को पता है कि साजकल शम्भू सड़क बनाने वाल ठेकानर के यहा काम करता है और अगली फगल बुचाने का कोई डराना नही रखता है। तभी तो गाव जाने उसके रोत को ठेके पर लेने को तयार है। इसके इग प्रस्ताव को एकदम टुकराना तो सम्भव नही है लकिन कहे भी कसे। अत अपने हृदय-गत भावो को छिपा कर उसने कहा — 'देवर जी ! ऐसा नही हो सकता। तुम्हारे ऐहसान हम पर बहुत है।'

बहने को तो गामा कह गई मगर जब अपन ग गे क पढने वाल प्रभाव का मुल्याकन किया तो धऊ से रह गई।

यथाय ये इसमे शम्भू को बडा दु ख हुआ "कभी कित्ता की मदद कर दना एहसान नही होता भाभी ! सादमी खादमी के काम साता है।'

अब धान को सम्भालन का दायित्व मोना पर आ गया है।

हा ने शम्भू ! तू ठीक कहता है।

लकिन अब एक बार बात उखड गई तो बस उखड गई। उसका वापिस जमना मुर् कल हो जाता है।

'अच्छा भइया मे चलता हू।'

शम्भू उठ गया और अभिवादन करक चल दिया।

पति पत्नी दोनों मौन साथ बठ रह।

एक लम्बी सास खीच कर भोला स्वत बोला— शम्भू सायत बुरा मान गया है।'

'हम ! — गामा न बवल हूँकार भरा।

राजस्थान की सर्वोपयोगी, सब प्रिय और सब सुंदर ऋतु वर्षा है। विगपत श्रावण मास में इस प्रात की छटा निराली होती है। स्त्री पुरुषों का मन उत्साह एवं हृष से भर रहे हैं। इधर उमड़ी हुई बादली—उधर नमड़ा हुआ हृदय। फिर गीतों की मनोहारी बहार। छाटे बड़े का भूत कर स्त्रिया और बालिकायें सामूहिक रूप से गाने लगती हैं—

माटी मोटी छाट्या ओसरघो ए बदली आमरघो ए बदली ।

(कोई) जोडा ठेलमठेल ।

सुरगी रत आई म्हारे देस ।

भली रत आई म्हारे देस ।

ओ कुण बीजे वाजरो ए बदली ।

वाजरो ए बदली ।

ओ कुण बीजे मोठ मेवा मिनरी ।

सुरगी रत आई म्हारे देस । भली रत ॥

भली रत ।

नीम की बड़ी डालों पर झूले पड़े हैं। कु वारी लडकिया एक दूसरे की ठनती हथी मजाक करती खूब झूना झून रही हैं। गीत के मधुर स्वर उनके कण्ठों से अपने आप फूट रहे हैं

परंतु अब विवाहित स्त्रियों का एक समूह झूले के चारों ओर मडराने लगा। लडकिया दूर हट गईं। स्त्रियों में से नव विवाहिताओं को

पहले झूठ के लिये मजबूर किया गया। वह बेचारी गरमाती हुई झूठे पर बठी। शेष गीत गाती हुई उस पेंगे देने लगी। लेकिन जब तो उस नव युवती की वह झिझक खत्म हो गई और वह खड़ी होकर पेंगे पर पेंगे तक झूलने लगी। उसकी झोड़नी हवा में लहरा रही है।

घोड़ी देर के बाद झूला रुका। गाती हुई स्त्रियाँ उसे घेर कर खड़ी हो गई और नीचे उतरने से पहले अपने पति का नाम बताने के लिए तग करने लगी। वह बेचारी सजाती झिझकती किसी मन-गढ़त लोकोक्ति के साथ कहने लगती है।

परन्तु गोमा उदास है। आज उसके बण्ड में वह लोच नहीं है—स्वर में माधुर्य नहीं है। गीत की कड़ियाँ बीच में छूट छूट जाती हैं। गेप स्त्रियाँ उसकी इस प्रशांत एवं क्षुब्ध मानसिक स्थिति से घोड़ी हैरान हैं।

गोमा जल्दी ही उठ गई और घर की ओर चल पड़ी। उसे किसी ने नहीं रोका। सब जानते हैं कि घर में लम्बी बीमारी चल रही है।

रात अधिक हो गई है। आकाश घटाटोप बादलों से आच्छन्न है। माग झूझना भी कठिन हो गया है मगर गोमा के अम्यस्त सधे हुए पर अचिराम गति से आगे बढ़ने जा रहे हैं।

गोमा की यह धारणा कि शम्भू सम्भवतः मन्दिर में गया होगा निमूल सिद्ध हुई। तदवधि की भाँति वह अपने घर के आगे खड़े नीम तलवाची डाले पड़ा है।

देवर !

अधकार के इस निस्तब्ध सन्नाटे में गोमा का स्वर अजीब सा ध्वनित हुआ। अलस भाव से पड़े शम्भू का ध्यान एकाएक भंग हो गया। गोमा ने किन्तु विचारों के तनु जाल में उलझ गया है।

भाभी !

शम्भू धकित रहकर माची पर बठ गया ।

तुम इस बक्त ?'—प्रश्नवाचक दृष्टि उठकर उम
बधेरे मे गोमा के चेहरे की नटोलने लगी ।

मैं तुमसे फिर कहती हूँ कि मुझे सड़क पर मजूरी दिलादा ।

गोमा के स्वर में कम्प । आखों में आद्रता । शम्भू ने अनुभव
किया और गहरी चिंता में डूब गया । यद्यपि उसने दृढ़ स्वर में विरोध करते
हुए कहा—'भाभी ! तुम्हें यह हठ छोड़ना पड़ेगा । मेरे रहत मजूरी नहीं
कर सकती ।'

वही चिर परिचित उत्तर को सुनकर गोमा चीख सी पड़ी—
'देवर ! तुम नहीं जानते कि कि आह ।'
आखिर समझते क्यों नहीं ।

गोमा उसके समीप आ गई । उसी भरपिये कण्ठ में पुन कहा—
'तुम मदद कर रहे हो देवर ! वह सब ठीक है । लेकिन कभी यह भी
सोचा है कि बगैर हाथ पर हिलाये कस काम चलगा ?

'भाभी !'—शम्भू ने गामा की आला में भाक कर कहा— क्या
मेरा घर तुम्हारा नहीं है ? क्या मेरे ऊपर तुम्हारा तनिक भा स्नह नहीं
है ।'

अंतिम प्रश्न तक आते आते शम्भू का प्रखर कण्ठ स्वर धीमा प
गया ।

गोमा तो सुनकर हप बिह्वन हो उठी ।

'है, देवर है !'—गोमा गद्गद हाकर बोली— सारा
पाव मे एक तुम्ही तो सगे हो । तुम्हारा ही तो आसरा है ।'

शम्भू का मन अपूर्व आनन्द से छनक आया, जस इही गदों को
सुनने के लिए उसने कान तरस रहे हैं ।

तुम्हें विक्रम करने की जरूरत नहीं। सब अपन आप ठीक हो जायगा।

इस अधिकारपूर्ण स्वर को सुनकर गोमा चुप हो गई। गम्भी ने एक प्रकार से सब समाप्त कर दिया। वह हताग होकर लौट पड़ा। वन उसकी छाती में घुनी घुनी आह निकल पड़ी।

गोपा ने आसमान की ओर देखा । उसे विश्वास हो गया कि अभी थोड़ी रात बीती है । चिन्ता की कोई विशेष बात नहीं है । हवा तेज है । उममें हल्की हल्की गीत की कमी है । उसने फुर्ती से पैर बढाये ।

मंदिर में कोमल हो रहा है । ढोलक और मजोरे की तान छिट गई है । आज जागण है और गाव की मंडलिया बँठी हैं । कालियो गूजरों और बामनों की मडनी में बड़ी स्वर्द्धापूर्ण होड चल रही है । मारी रान गाना बजाना होना रटगा ।

क्षण भर ठहर कर वह धागे निकल गई । इधर गूजरो की बस्ती धनी है । बाडे में खडी उनकी गायें और भसे रम्भा रही हैं । गोबर और मूत्र की दुग ध मवत्र व्याप्त है ।

समी दूर में उसे एक लम्बी चीख सुनाई पडी जो उस निस्त-र वानावरण में बडी भयकर लगी । एक औरत अपने घर से भागकर निकली । पीछे कई आदमी भी दौडकर आए । उनमें में एक ने आकर उसकी बाह पकड ली ।

‘भाभी ! लौट चलो । बेकार में जग-हसाई होगी ।’

‘छोड दो मुझे ।’

औरत एक पागल की तरह उसकी बाहा में छटपटाने लगी । साथ ही धनगल प्रलाप भी करती जा रही है ।

गोमा अपने बौद्धिक को बरबस रोक न सकी । उगल पाव अपने घाव टिंक गय ।

अब तब घरों में नृप्य मातृवों भी आ गइ । प्रकाश में गामा न जो रेगा तो दग रह गई । कहीं पत्थानने में भूत तो नहीं हा गइ है ?— अपना पुनर्विषों में जिगामा का भाव लहर उठ घबि राग पुवक भवका तल्पधान् साग भ्रम दूर हो गया ।

हा ! यह तो अपनी ही रूपा है । अभी परगों ही घर पर आई थी । कभी की तरह गिन री थी और पूज की तरह हम रही थी । उगका गवाँग जपूव धान गाल्लाम की मनोहर छवि स दीप्य हो रहा था । कभी अघरा पर सनज्ज मशान पसर जाती थी और कभी स्वप्नो में लोर् लोई आगो में हू यथाही चमक भर भर जाती थी ।

जोजी ।

हा !

जो जो ।

घरी चिल्लाती क्यों है ? — यह गोमा का अघस्त कण्ठ स्वर है—
बोल ना क्या बात है ?

गोमा का ध्यान अपनी और आट्टट न होते देख रूपा तनिक अस मजस में पड गई । अब यह समस्या बन कर उसके प्रागे चुपके स धान खड़ी हुई । बडे सोच विचार के बाद उसने धीरे से कहा— अब वह सोलह साल का हो गया है ।

अरी कौन ?

वोह वोह । तुम्हारा देवर ।

और रूपा के ध्यान पर ऊपा की गुलाबी आभा बिलर गई । वह

बपन आप झुक गया ।

“अच्छा ।”

गोमा दौड़ कर उसके पास घा गई । बड़े प्यार से आग्रह पूर्वक पूछा तभी — ‘अरी बता तो मही क्या बात हुई ?’

‘समुद्र जी जन्दा ही मूडूत निकलवा कर नाने की रस्म पूरी करने वाल है ।

है । ऐसी बात है ।’

ग मा की आंखे अचानक विस्मय से फटा रह गई ।

अब वह जम कर उसके पास बठ गई । एक उडनी हुई निगाह रूपा पर डालकर उसने भीठी त्रुटकी भरी — ‘वह भां तुम्हे चाता है या ना ?’

‘बस जीजी ! तुम तो बटी बसी हा ।

रूपा का मुह फून गया, हालांकि गोमा अच्छी तरह जानती है कि उसका दिल में लड्डू फूट रहे हैं ।

अरी इसमें ऐसी-वसी की क्या बात है ! — बड़ी सयानी बन कर गामा बोनी — वह तो मन से धम से, करम से तरा मरद है । बोल, है कि नहीं ।

यह जान की बात रूपा के मन की भा गई । उसने गन्न हिना कर धीरे से हा भरी ।

‘फिर बता ना ।

‘जीजा ! वह तो सारमाना है ।’

‘क्या भना ?’

‘मैं बडी हू ना ।

'अच्छा ।

मन को गुप्त गाँठ गुनगी देग गोमा को भी रग आने लगा ।
उमन पूछा— क्यों रो कभी माँटी भी बाग भी करता है या नहीं ?

'बस, जीजी ! तम तो ऊँह ।

ठनक कर रूपा ने गोमा क मन म अरनी बाह डाल दी । गोमा
ने दुनार स एष घपत उतन गान पर लगाई और दारारत मरी हसी के
माथ उम छडने लगी ।

बता ना ।

क्या है'

मरी कि एकांत म बठार बाते भी करते हो ।

जीजी ! वह तो मरी छाया स ही भागता है । — सुनर तूम
म दृष्टि गडाकर रूपा कहने लगी— मगर अब कचू भागकर कहा जाएगा ?
तेसा कसकर बांधू गो कि ।

'अच्छा ।

'हाँ । — भावावेश में बहकर रूपा कहती गई— एक बार मैंने
उस पकड कर ।'

बस अब गोमा अपने उमटते हुए हास्य के प्रबल प्रवाह को रोक
न सकी और वह वेगवती लहर का भाति फट पडा । बेचारी रूपा बुरी
तरह भप गई ।

बस जीजी ! तूम तो ऊँह ऊँह है है ।

और रूपा ने अपना जजीला मुल गोमा के आचल में धिपा
।

‘ छोड़ दो मुझे ।’

इस चीत्कार को सुनकर गोमा स्वप्नाविष्ट सी जाग पड़ी । उसने
 कहा— रुपा अपना हाथ छुड़ाकर भाग रही है । एक अनात अनिष्ट की
 आशंका से वह सिर से पाव तक मिहर उठी ।

बूए की मुठेर पर पहुँचकर रुपा तनिक रुकी । फिर उसने पर
 बढ़ाए तभी किमी न आकर उसका हाथ पकड़ा ।

भाभी ! यह क्या नागनी है ?

उस भय प्रद वातावरण में पुष्प का कठोर स्वर तैर गया ।

छोड़ दो मुझे । —क्रोध से गरज कर रुपा बोली ।

‘ हरगिज नहीं !

इस दृढ़ और अधिकारपूर्ण स्वर ने रुपा को एकाएक उत्तेजित
 कर लिया । उसने झुंझना कर हाथ छुटाने का प्रयत्न किया तो पुष्प ने
 उसकी इस कुत्रेष्टा को बकार कर दिया । अब वह उसे बत्तखूँक घसीट
 कर बूए से काफी दूर ले गया ।

‘ मैं कहती हूँ हाथ छोड़ दो । —क्रोधोन्मात् में रुपा गला
 फाड़ कर चिल्लाई ।

‘ नहीं छोड़ूँगा ।’

पुष्प का इतना कहना था कि रुपा ने अपने तीव्र शक्त उसकी
 बात में गहा लिये ।

इस धृष्टता ने पुष्प के रोप को सहसा भरका दिया । उसने धाव
 लगाते ही तान और खींच कर रुपा के गाल पर थप्पड़ जड़ दिया ।

यह क्या किया देवर ?

अचानक अधेरे में से निकल कर गोमा आगे बढ़ आई और उसने

घबराकर दम्भू (पुरुष) को बांह पकड़ कर भबभोरा ।

अब दम्भू को भी अपनी स्थिति का आभास हुआ । सबकुछ उसका यह भावें एक प्रकार से मर्यादा का उल्लंघन है । घोरत पर हाथ छोड़कर उसने अपना ही सम्मान किया है । अब ? यानि घोरत ने उसे दीर्घ ही प्रसन्न किया । अपनी ही तिरस्कारपूर्ण दृष्टि उसे कचाटन लगी ।

घोरत रूपा तो हतप्रभ रह गई । इस आकस्मिक व्यवहार के लिए वह क्यापि तयार नहीं थी । उसका वह उमात्त बिल्कुल ठंडा हो गया । तीव्र ज्वाना में जनता उसका हृदय तम चोट को वर्जित न कर सका । एक भयकर प्रतिक्रिया हुई । नारी मलम दुबलता ने आ घेरा । अब वह घरती पर बैठकर फूट फूट कर रोने लगी । उसका कारण क्या अब हुवा की लहरो के साथ दूर दूर तक जाने लगा ।

गोमा घोरत दम्भू स्तम्भित ! व ऐसे नडवत् होकर घरती में गड गए— जैसे पापाण के दो खण्ड !

त्रिया हठ की प्रसिद्ध कगवन अवश्य सुनी है, मगर प्रत्यक्ष देखने का अवसर बहुत कम लोगो को मिला है ।

कोई विश्वास करे चाहे न करे, लेकिन रूपा सारी रात उसी जगह पर वसी की वसी बठी रही । न खाना न पीना । न उठना न सोना । गोमा न समझाया उसक समुह भी आज अ य सम्बन्धियों ने भी इस प्रकार कुल की अपमानित नही करने की सलाह दी, फिर भी रूपा ने एक की नही सुनी । वह टस से तस तक नही हुई ।

यद्यपि गाव के अधिकांश व्यक्ति इस समय शम्भू को पानी पी पीकर कोम रहे हैं—उनका क्रोध स्वाभाविक है—किसी के घर की बहू पर काइ गैर मद हाथ उठाए—यह वास्तव में सहन करने योग्य नहीं । यह तो अपन ही गाव का धार्मी ठहरा । यदि हमारे गाव का होता तो खून खराशा हो जाता ।

लेकिन रूपा के इस दुराग्रह तथा स्पष्ट अचना से अब उनकी महा नुभूति क्रमश घटती जा रही है । उनकी प्रकोपभरी दृष्टि रूपा पर जम गई ।

‘बड़ी हठीनी है ।

‘किसी की सुनती ही नहीं ।’

ऐसा भी क्या मान, जो बडो की सीख का निरादर करे ।

सारे भगडे की जड तो वह खु ही है ।’

शम्भू और गोमा के सामने अब एक ही प्रश्न है— अब क्या होगा ?—और इसके समाधान की सामग्य किसी में भी नहीं ।

आशा निराशा के झूले में झूलने हुए गोमा रूपा के समीप आई । अत्यधिक धीमल स्वर में उसने पूछा— रूपा ! क्या बात हुई ? मुझे बता दे ।

जड़वत् रूपा नि ग द रही । गोमा ने बहुत आग्रह किया । मित्रों की और हर प्रकार से ऊच नीच भी समझाया । रूपा निश्चल और नि ग द रही ।

फिर तो वह हार गई । कारण न बताय तो एक बात हुई मगर उसने ता इस स्थान से न उठने की कसम खा रखी है । अब ? जहा एक आत्म से दया बरस रही है, वहा दूसरी से रोप की चिनगारिया भी निकल रही हैं । गोमा भी क्या हठ ? सचमुच आज तो रूपा ने कमाल कर दिया । उसक प्रति गोमा के हृदय में जितने भी सद् भाव थे—व एक एक करक नि रोप होने लगे ।

उसने आस पड़ोस की नौ चार स्त्रियों को घुला लिया । शम्भू के भी कुछ मित्र आ गए । अनाव जला कर वहीं बैठ गया । रोप सारी रात आत्मा में जाग कर काटी । बातचीत और गप गप का बाजार गम रहा मगर शम्भू तो गुम सम ही बठा रहा ।

सुनह तटके ही गाव के कुछ लोग रूपा के ससर को समझान के लिये गये । वे प्रत्युत्तर में बोले— मैंने न तो उसे घर से निकाला है और न बुरा बर्ताव ही किया है । वह अपनी मर्जी से गई है । तो भी मैंने उस समझाया, पर वह नहीं मानी और उरटे भेरी वैश्रजता की । अब मैं उसे लेने नहीं जाऊंगा ।

“बौधरो ! बहू नादान है । उसका बुरा नहीं मानते । —गाव के एक बुजुग न थोड़ी नमी से कहा ।

किराह की आट लड़ी चौबरण भी धू घट म ग बोली— अब आप ही निपाव कर । अगर लडका बोला की छाकरी का लकर कहीं भाग गया तो हमम हमारा क्या बमूर ? हमने तो उस भगावा नहीं । इस पर भी वह मरना चाहती है तो गीफ से मरे । हम रोबने वाले नहीं ।

‘ एक तो लडका कपून निकना और दूसरे यह बहू भी मुह पर कालिख लगान पर तुला है । फिर उसे भी म मना कर जाऊ । ऐसा हरगिन नहीं हो सकता । — चौबरी अपना सतुलन सोकर पुन बोला ।

‘ सो तो ठाक है । ’—कण्ठ म्वर को अत्यंत समत करके व० बुजुग कहने लगा— ‘बच्चों की नादानी हमें माफ करदी जाती है । कलना थ हा बडा रलो ।

थोडा ऊच नीच ममभान क उपरान्त चौबरी की मोटी बद्धि म कुछ पुसा । उसने सहमत हीर कहा— ‘बच्चों, अगर आज वह चुपचाप घर चली आए तो मूक कोई एतराज नहीं है ।

वे आख त हीकर अब रूपा के पास गए ; पत्त यहा लो कुत्त की पूछ टेढा की टढी ; नाख सिर मारा मगर उसने तो गक वार ता’ करने क याद हा करने का नाम तक नहीं लिया । अब उनके पास चुप्पा माधन क अतिरिक्त दूसरा कोई विकल्प न ही है ; उन्होन उस अपन भाग्य क भरास छोड कर बिदा ली ।

इधर शम्भू की हालत पतला होती जा रहा है । यह गस म कसा जजाल भा फसा ? सचमुच, आज तो उसका भवल भी गुम हा रही है ।

उनीची, यकी धीर व्याकुल आखा की देख गोमा ने श्मकी आत रिक्त गोचनीय प्रवस्था को अनुभव किया । ज्यो ज्यो समय गुजर रहा है — उसका मानसिक तनाव भी बढ़ रहा है । — दुश्चिन्ताजा की काली चगधे चारों ओर टा गई हैं जिससे उबरना दुष्कर हो गया है ।

गोमा ने पुन प्रयत्न किया । इय बार आगातीत सफलता मित्री ।
रूपा ने मुह खोला— जीजी ! जिसन मुभ घोखा नेकर मेरा यह जीवन
बिगाडा है उसकं घर म पैर तरु न रखू गो । बप म इतना ही जानती ह ।”

‘पागल हुई है ?’

कुछ भी समझ लो ।’

‘रहगी कहा ?’

‘इसी गाव में अलग भापडा बताकर ।

खाएगी क्या ?’

‘मजूरी करूंगी ।’

इस दुःस्माहसपूर्ण त्रिणय को सुनकर तो गोमा दग रह गई । यह
औरत किस घातु की बनी है—परमात्मा हो जाने !

‘देख रूपा ! यह सब ठीक है । —गोमा ने कहा— लेकिन तु
चीप्रियो कं घर की बहू - ।’

वह कभी की मर चुकी । —बीच म बात काटकर रूपा
बाली— अब उसका नाम ही भूल जाओ ।’

उमकी आँखो मे एक विचित्र प्रकार की ज्योति चमक उठी । गोमा
ता सहम पर चुप हो गई । उसने आगे कुछ भी कहना व्यथ समझा ।

मोना की तबीयत अब कुछ दिनों में गमनी है। वह धरत पर के भाग गये पीसत के मोने काभी हावहार बडा रहता है। दोन गम्भू काहा म प्राग्गाहन पाकर गांव की पाठगाना म पढा जाता है। गोसा दिन भर पर के काम-काज म व्यस्त रहती है।

घात्र सपाण से टाकुर गांव दधर मा निरन। घमो तव इनका दबदबा है। गांव यावे इनका गम्मान बरत है। मनाम भी करते हैं घोर मोनी नीत्राला मुजरा भी बरत गाव हैं। छोटा मोटा काय भी कर आने हैं। औरतें रावने (रनिवाम) म टकुराइन सा के पास जाती हैं घोर उह उचित घादर प्रान बरती है। पाकी-र-मोड़ी के मानून सम्बध है जिहें समय के प्रवाह ने अभी तक नहीं तोडा है।

एक जमाना था, जब इनकी मर्जों के बगैर पत्ता तक नहीं हिनता था। इन्होंने जुन्म और भत्याचार भी कम नहीं डाण, मगर वे सब केवल एक कहानी भर रहे गये हैं। लोग भूलते जा रहे हैं। धुणा कटुता घोर घसपा नना का वह विष अब समाप्त हो गया है। पुराने सम्बध टूट गये हैं और नये बन रहे हैं। सम्बध 'मघुर मानवीय और मुखबद्ध' इत मोहादपूण वातावरण म नई मानवता पल रही है।

मुआवजे की रकम अधिकांग बज चुकाने मे चला गई। अब तो खुद धपने हाव म खेता करते हैं। वह अत्यधिक भोगलिप्सा एवं ऐश्वर्यावासा का धुणित जीवन प्राय समय के थपेडा से खत्म हो रहा है।"

“सम्मा अनदाता ।”

भोला ने सटे होकर बड़े अदब से सलाम बजाया ।

‘अर, बठ भौं जा । सडे रहने की जरूरत नहीं है ।’—ठाकुर साहब न बोलकर म कहा ।

‘नेरू की मा ! जल्दी से एक दरी तो ला । —भोला उतावली म चिलाया— भागवान दख अपने घर कौन आया है ?’

जम भूचाल मा आ गया । भोला व गोमा इधर उधर भाग दीड करन लग । उनका उचिन स्वागत करने हेतु घर म नई दरी नया पाटा नया गिनास लोटा इत्यादि लाने लग

ठाकुर साहब ने हुंकर कहा —‘अरे भोला रहने भी दे । मैं तेरा ममान छोडे ही हूँ ।’

अ न्याता ! मेरे भाग जाग गय जो आपके चरण मेरे घर पर पडे । मैं तो निहाल हो गया ।”

भोला की चापलूसी को देख ठाकुर साहब पूने नहीं समाये । वे अपनी रौबिली मूछों में हसते रह ।

माची पर दरा बिछ गई और ठाकुर साहब उस पर त्तमीनान से बठ गय । भोला जमीन पर उनके परों के पास उकडू जम गया ।

आज कमे इस गरीब क घर कीरपा का है ?”—भोला ने पूछा ।

‘अरे यूही चला आया । —यह चलनी बात बहकर ठाकुर साहब टाल गए ।

भोला का टाकुर साहब से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है । उग के दादा या परदादा टाकुर साहब की दासी जो कि विवाह के समय पर दहेज में आया था और यही बग गये । धर्म रजवाड़ा की भाँति यह प्रथा यहाँ भी मूल प्रचलित थी । प्रत्यक्ष जागीरदार दहेज के रूप में मामान के साथ अधिक से अधिक दास-दासियाँ का दाना करने नियम गौरव का विषय समझने से अन्याय धर्मवाद बस रहने !

भोला का परिवार यहाँ रहने लगा और टाकुर साहब की चाकरी में उग गया । घर की श्रिष्या प्रायः रात में काम करता है । यह गुलामी की प्रथा पुनः पुनः चलनी रहती है । इसलिये करने बिना का एकमात्र वास्तविक हान के कारण भोला को भी यह ताबे पड़ी मिली । स्वाभाविक है कि उन कोई निकामत नहीं है—गिला नहीं है ।

जसा कि आम रिवाज है बचपन में ही भोला की शादी हो गई । बचपन बीता और जवानी की बहार आई । इससे साथ रगोन सपने और मधुर उमरों अगवाँथा लेने लगी । परंतु भोला की बहू ! ठकुराइन-सा का बचपन स्वभाव और ऊपर से ढर सारा काम । येचारी पून भी बहू यह सब बं स्ति न पर सकी । वह पति के म मने रो पडा ।

भाला की भी बढता उम्र । नया जोश—नया उत्साह ! तारी के इन आसनों ने तो भी का काम किया । उसकी भाँपी मर्से फडक उठा । बस भगडे का सूत्रपात हो गया । विद्रोह के अक्षुर पूट पडे । एक स्ति अपनी पत्नी को लेकर वह भाग गया ।

पौछ से टाकुर साहब ने भी कायवाही आरम्भ की । सब प्रथम उन्होंने उनकी जमीन जवाब कर ली, तदुपरांत उमका धान पेटिका जो उने हर माह कुटुम्ब के भरण पोषण के लिये बतौर भत्त के रूप में मिलता था, बं कर लिया । ठकुराइन-सा के पास जा जेवर उसकी पत्नी के रस हुए थे,

उह भी हज़म कर दिया गया। अभिप्राय यह है कि उसकी चतुर्घोर प्रचल सम्पत्ति पर ठाकुर साहब ने पूणतया अधिकार कर लिया।

दो साल के बाद भोला जब वापिस गवम लौट कर आया तो नौ माह के गेहू के अतिरिक्त उसके साथ कोई नहीं था। उसकी पत्नी एक लम्बी बीमारी में चल बसी। अब वह मादक उमादकभी का उतर चुका था। निराग, विपन्न और व्ययातुर भोला सीधा जाकर ठाकुर साहब के परामें पड गया। गिडगिडा कर अपने अपराध की क्षमा मागने लगा। एक बार नौ ठाकुर साहब बड़े नाराज हुए परन्तु भोला की यह शोचनीय अवस्था देख उनका दिल पसीज गया व अचानक कृष्णा के सागर बन गये। उन्होंने उसकी जमीन जायदाद वापिस लौटा दी।

भला भोला इस ऐहमान को कस भूल सकता है !

बताइय सरकार ! आप कस प्यार ?' —अवनी असीम जिनामा को दबाकर उसने पुन पूछ दिया।

ठाकुर साहब चिंतित हो बठे।

भोला ! आजकल कुंवर के रग डग अच्छे नहीं लग रहे हैं। उम शहर की चमक ने चक्काचौंध कर लिया है। उसमें वह अपनी मातमयादा और धन का भी फूक रहा है। जिन राह पर चलकर हमारा सत्यानाश हुआ है—वह उसी पर चपना चाहता है। समय रहने इस नाममन्त्र पर काबू नहीं किया गया तो कहीं के नहीं रहेंगे।'

'यह तो बुरी बात है।'

'हा भोला ! —ठाकुर साहब ने एक सद आह खीची। उनका रोबीले मुख पर चिना की रेखायें गहरी हो गईं।

थोड़ी देर के बाद वे कहने लगे— मैंने तय किया है कि मैं खुद कुंवर के पास जाकर रहूंगा तो उसे शायद कुछ गम पड़े।'

'गर्म तो पड़ेगी हज़ूर !
हां। इमीलिये जाने की तयारी कर रहा हूं। मर्दिन यह का
फिरा भी कुछ कम नहीं।'
यह क्या है ?'

'ठगुरानी की रावल में किमक मरोग छोड़कर गाऊ ?'
इसके लिये आपका यह पुराना सेयक हाज़िर है। — ४० उस्ताह
म भोला ने यह प्रस्ताव रखा।

सच ! — ठाकुर साहब एकम बिना मुत्त हा जस प्रस न भाव
से बोले।

उहे बिशवास नो वा कि भोला इतनी जल्दी मान जाएगा।
आप सुगी सुगी गहर जाकर रह। बाकी यहाँ में गव सम्भान
लूगा।'

इसमें तरी बहू की भी मद मिनगी ?
'जरूर !'

निश्चय हो गया। भोला चौकीदारी करेगा और उनकी बहू रावल
में ठाकुराइन सा के पास रहेगी।

कुछ देर तक इधर उधर की बातें होती रही। कुछ घर की— कुछ
बाहर की। वतमान दशा पर भी थोड़ी सी चर्चा चल पड़ी। उसी बीच
ठाकुर साहब ने पूछ लिया— भोला ! मैंने सुना है कि तू सब दारू भी पीन
लपा है ?'

भोला सिटपिटा गया। उतने एक भीरु दृष्टि घर के दरवाजे पर
डाली जिसकी झोट में खड़ी गोमा सारी बातें सुन रही है।

हज़ूर ! धीरे बोलिये, वरना वह सुन लेगी।'

ठाकुर साहब हस दिय ।

“बडा डरता है ।

खीसे निपार कर भ ला बोना— लोडी जी (दूमरी पानी)
है ना ।’

ठाकुर साहब पुन हम दिय ।

अब उठने हुए बोले— अठ्या गायन में कल ही चल दू गा । तू
धीर तरी बहू योडी देर में आ जाना ।

‘ हा । आ जाऊ गा ।’

भोला की खुशी के तो पल लग गये । वह एक पन्नी के समान
आकाश की गहराइयो में बंधक उडन लगा ।

गोमा ने टोकरी गिर पर स उतारी और उसमें से रोटी, सजी और धाने की अम्य सामग्री निकाल कर रखने लगी ।

रात भुक्त भ्रातृ । दूधिया चाटनी में नहाकर गगन मडल जगमगा रहा है । छोटे छोटे तारों के साथ मुन्दर मलीना चन्द्र भी बिलखिला रहा है ।

शम्भू भ्रमण पर भ्रमेला लेता है । उसकी दृष्टि विस्तृत आकाश पर बिछ जाती है । एक अजीब सा सूनापन उसके मन में भर जाता है । सत ऊष रह है । कभी कभी जगली जानवरा की भयावती आवाज गुंज उठती है ।

शम्भू उठा । इस मनडूम ऊब और तनहाई को दूर धकेल कर वह स्वस्थ होने लगा ।

‘घान तो दर हा गर्, दवर ! —गोमा न कन ।

‘कीई बात नही है भाभी !’

शम्भू हाथ धाकर घाली पर बठ गया और धीरे धीरे गाने लगा ।

रात्रने में काम करन के कारण गामा घातकन कम ही बाहर निकल पाती है । ठगुराना-भा ने सारा काम उस पर डाल रखा है । रसोई-गानी से लेकर घोंटा पीमना तक कम्ना पडता है । बुद्ध व घपन स्वभाव में साधारण है । स्नि भर एकारना रहनी है । कभी तो उस राप आता है—साभ भी उरप्र हाती है नजिन नौकरी है—गिर भुता कर सब मलना

पडना है अब तो आदन सी पडनी जा रही है ।

ये नेवर भी एक हैं ।—स्नेह सित्त दृष्टि गम्भू पर डालकर गोमा मन ही मन में बोली ।

बस हाथ धोकर पीछे ही पड गए ।

भाभी ! आधा खेत तुम जुतवाला ।

गोमा ने कहा— दवर ! हमारी नौकरी लग गई है ।

‘तो क्या हुआ ?—गम्भू अपनी बात पर अड गया— हमारे बाप टाटा किसान थे और उनकी ओलाद हम भी किसान हैं । फिर नौकरी में कोई बरकत भी नहीं है।

तुम नौकरी क्यों करते हो ?’—गोमा ने हस कर पूछा ।

क्या करू भाभी ? अकेला जीव हू ।’

इस प्रश्न का सीधा कोई उत्तर नहीं । यद्यपि गोमा ने शरारत के भाव लेकर रसपूण स्वर में कहा — ता लुगाई ल आआ लाला ! मैं त खुद अपनी दवराना की बड़ी धमड़ी में बाट जोह रही हू ।’

गम्भू शरमा जाता है । गोमा खिन्खिला उठती है ।

‘लो एक रोटी और तो ।’

थाली खानी देखकर गोमा ने आग्रह पूर्वक कहा ।

नहीं भाभी ! मैं बहुत खा चुका ।

तुम्हें मेरी कमम ।’

और गोमा ने दो रोटियां थानी में डाल दी । साथ ही तरकारी और बत्ती भी परोस दी ।

अरे बस बस बस ।

क्या बस—बस !—गोमा नटखट स्वर में बोली— देखो

माना ! यदि भ्रम रह गये और आधा रात को पेट में चूहे दीडन लग तो फिर मैं पकड़न नहा झाऊगा ।”

नती भाभी ! आज तो तुमने बसकर खिला दिया ।

तबकि ठहर कर उसने आहिस्ता से कहा — ‘तुम्हारे हाथों में क्या नहा क्या अंतर है कि एक ढ़ो रोटी में ।

भावायेन में वह वाक्य अधूरा छोड़ गया ।

बस बहाने बनाना छोड़ो ।”

बड़ा जुनम है भाभी !”

जुनम ! —क्या करके गोमा ने कहा— देवर ! मन्गी भाभिया जुनम करती आई है । इसमें नई बात कौन सी कही तुमने ?

‘मच !’

अचानक एक गद्द जीभ पर आकर रुक गया । शम्भू के हाँठों पर एक हृदयघ्राही मुस्कान खिल उठी ।

शम्भू का चुका । उसने हाथ मूह धोय और इतमीनान में बटकर बीड़ी पीने लगा ।

देर मारा घुआ उल्ल कर शम्भू ने कहा — ‘भाभी ! रूपा भोजी को राबन में रखकर तुमने बहुत बड़ा उपकार किया है ।’

‘वाद ! इसमें उपकार क्या ?’ —हठात् गोमा ने पूछा ।

चौधरा घर की बहू है । बेचारी कहा भारी मारी फिरती ।

गोमा हस पड़ी ।

बस एक औरत आकर तुम्हारे गले पक गई तो घबरा गया ।”

एमी बात तो नहीं भाभी ! लेकिन लेकिन ।

मचमुच शम्भू मकपका गया ।

“वयो देवर ! भाभी से भी बनते हो ?”

गोमा पुन हस पडो । इन हसी की मोटकता ने वातावरण को अत्यंत आह्लात्पूर्ण बना दिया ।

राम्भू लज्जालु मुस्कान लिये खामोश बँटा रहा ।

अचानक चुप्पी का एक बोभिन सा टुकड़ा उनके बीच में आकर निगाह घूमने लगा ।

गोमा ने इस चुप्पी को तोड़ा—

“देवर ! उपकार तो समने किया है ।”

गोमा की मुद्रा अत्र क्रमश गम्भीर हो गई ।

‘मने ? —चौंक कर राम्भू ने पूछा— ‘भला वह कते ?’

‘हा । —गोमा ने कतनता से भरी एक निगाह डाली— तुमने हमारे लिये नेत जोता है रात रात भग जाग कर उमकी रखवागी करते हो । सँ, गर्मी और बरखा को बगान्त करते हो । वह सिफ हमारे लिये —।

और देखन देखते गोमा की भाव विह्वल भावें महसा आत्र हो गई । मचमुच उसमें स्नेह की तरलता घनीभूत हो गई । थग्घरान अत्ररा पर हृय की समस्त सरसता और कोमलता थिरक उठी ।

भाभी ! तुम्हारे गियाय मरा दूसरा कौन है ?

राम्भू न यह वाक्य अनजान ही बहता हवा में फेंक दिया, मगर गोमा ने उसे अविलम्ब ही पकड लिया । वह किंचित् मुस्काराकर बोला— ‘देवर ! कैसी बहकी-बहकी बातें करत हो ? तुम हमार से जोर हम तुम्हार विश्वास नही करोने कि मैं तुम्ह ।

बीच ही में कण्ठावरोध हो गया । राम्भू का हाथ अवन हाथ में लकर वह थपथपाने लगी ।

शम्भू व गारे बदन म विद्युत् लहर गा दीज गई । गामा न निच मे निबन्ध इन गम्भीरों को बह ता मधु की तरह वा गया । और उगक स्वप्न की माह । उगन गोमा की घाता म भाका और धीरे न पुष्ट निमा—' गच मानी ।

हा । सर ।

गोमा न अपन पुत्रकते हुए हृदय का सम्भाला फिर उठने हुए बोनी — 'अच्छा देवर । सब मैं चरता हू ।

गामा मचान से नीच उतर कर चन की पगडडी पर धीरे धीरे घप्र सर हो गई । शम्भू उन अपत्य देवता रहा, जब तक वह एक काना बिंदु बनकर दृष्टि पथ से आभन नही हो गई ।

चात्री अधिक उठना और चुभावना हो गई ।

मुह अंधेरे ही रूपा उटती है। नित्यकम स निवत्त हाकर लग जाती है। हूँली म गाँव है भसँ हँ घोर है बना की जाडिया। सानी पानी करना पहता है। वह दूध दुहती है। गरम करती है मयनी है और मक्कन गरम करक घो तयार करती है। रोप तिन पायन पदन हैं।

यह काम भी थोडा नही है। नखन दसत मूरज छिया ज बडा व्यस्त जीवन है उसका। अब घोरे घोरे वह मभ्यस्त हँ रही है।

तेजिया जात का नाड ३। टाकु माह्व का पुराना विन् मेवक है। बतन माजता है, कपड घाता है भाडू लगाता है। प्री ४ उमकी। मिर क वान विचडी हो गय हैं। बुद्ध आत्ममी काहिल घोर सा है। सनकी भी परल मिये का है। रामदेव बाबा की गवा पूजा है। कभी कभी काम निबटा कर आधो गान नक पूजा मे लगा रह तिन म भी काई निश्चिन ममय नही है। तब फुगत मिन्ती ३ टोकर कर धूप मन लाता है।

परन्तु उमका एक नियम धरक का तरह घटन हैं। वह एक बार रणिध अवश्य जाता २ और राम देवर पर श्रद्धा पूवक लगाता है। प्रमा चढाता है और 'जागण' भी दता है। बाबा क प्रति भक्ति घट्ट है - अगाप है।

हास आता है। फिर वह उन गंदे कपड़ों को दूर फेंकता है। उनमें से ऐसी दुग्ध उड़ती है कि मिनली आन लगती है।

और रात को सोता है तो उठे पहनकर। ठाकुर साहब के उतारे जूने वह हर वक्त पहने रहता है। जब तक वे ऊपर से सिकुड़ कर सख्त नहीं हो जाते उनकी शकल बदल कर भद्दी न हो जाती और नीचे से तना धिम कर न निकल जाना तब तक वह उनका पीछा नहीं छोड़ता। बच्चा क लिये वह बिलीना है और हम जालियों के लिए हास परिहास का अच्छा खासा मसाला है।

जब स रूपा हैरी म आर्न है तेजिये मे थोड़ा परिवर्तन सा आगया है। यह स्वाभाविक है या अस्वाभाविक—कह सकना कठिन है। अलबत्ता, उसके बुझ हुए मूने मन में कुछ हलचल मी मच गई है। उसके सुस्त उठने वाले पैरों में थोड़ी स्फूर्ति सी आ गई है। मुरभाय चेहरे पर सजीली मुस्कान का रंग कभी आता है—कभी जाता है। गहन चिन्ता में डूबी सी जाखा म नश चमक भर गई है।

उसके बाल छट गए हैं। तिरछी माग काढ़ने लगा है। कपडे धुने हैं। अभी गाव के मोचा से नई जूती पहन कर आया है।

रूपा ! हा, मैं गाय मेल (दुह) दू।”

रूपा चकित सी उमे दखती है। तेजिया के रंग ढग उससे छिपे नहीं हैं। उसके हृदय गत भावा से वह भली भांति परिचित है। उस एक ओर गुस्मा आता है—तो दूसरी ओर हसी भी आती है।

“बाबा ! मैं ।”

बस रूपा इतना ही बोल पाती है और तेजिया बल उठता है।

‘देख रूपा ! खबरदार जो मुझे आइदा कावा कहा। मुझे सुरा कोई नहीं होगा।’

❀ ❀ ❀

साँझ का मटमैला अधेरा भुँक आया है। सूरज त्रिज की रखा पर आधा लटककर धरती पर जा लगा है। उसकी किरणों पेड़ों की शाखाओं में से आ आ कर आँखों को चुंधिया रखा है। जगह जगह जमान पर या पत्तियों में प्रकाश के न ह न हें ध व थरथरा रह हैं, जस चाश और चिड़ियाँ उड़ते हुए अपने पंख बिखर गई है। चुप्पी साधे खड़े पड़ा म से मिठास सी निकलती मालूम पड़ रही है।

आज पूरे खेत का चक्कर लगाने के बाद भोला बुढ़ी तरह थक गया है। मुण्डेर पर बैठकर वह अपनी ठगड़ी सास को रोक्कर वापिस सामान्य होने की प्रतीक्षा में है। भान पर आए पसीने को घोंती के पत्तन से पोछकर बड़े ध्यान से नई फमल की गुनगुनाहट सुन रहा है। सारा दृश्य कितना रमणीक और सुखदायक है।

ठाकुर माहव की हवनी पर चौकीगारी करने हुए उसे काफी समय हो गया है। इस बीच वह कम ही बाहर निकल पाया है। गाव वाले वही पर आ आ कर उसकी कृपण क्षेम पूछ लते हैं। एक चिाम तम्बाकू के पीछे उसे गाव के सब समाचार विदित हो जाने हैं। दा घड़ी की गणगण में मारा कच्चा चिट्ठा छुनकर सामन आ जाता है।

आज बड़े बड़े जच गई कि नयों न मेत पर ही जाकर गम्भू स भेंट की जाय। उसके बड़े एहमान हैं। इम ज म म उसका श्रुण बुकाना तो यद्यपि गम्भव नहीं है, मगर मु ह से कहकर जा को बहलाया जा सकता है। निगान, वह साठी लकर चल पडा।

‘भैया !

गम्भू का ता रिस्मय स जसे मुह मुन्ना-का मुता रह गया ।

घोड़नी की तरह पून आई गास की रोकन का अगफल प्रयत्न करने हुए भोला न कहा—‘गम्भू ! बठे बठे जो उकता गया सो सो ।’

अब घम स जमीन पर बठ गया, ताबि यमान मिटा सक ।

तुम्हारा भी जवाब नहीं है भय्या ! —गम्भू मचान स नीचे उतरकर बोला— अगर मिलन की इच्छा थी तो मुझे बुता लत ।’

तो वीन मा गजब हो गया हूम् !’—भोला क चहरे पर खिसि यानी हसी फल गई ।

तू तो ऐसे गल पड रहा है कि कोई अनहोती कर बटा है ।’

गम्भू गम्भीर हो गया ।

‘ऐसी लापरवाही कभी कभी बडी दु सदायी साबित होती है ।

जा जा ! तू तो ब बात ही तूत दे रहा है । भगवान की मेहर बानी से अब मैं ठीक हू । ज्यादा बहम ना कर । ला बिलम पिला ।

‘भय्या ! यह तुम्हारी ज्यादाता है ।’

बिलम तयार करत हुए भी गम्भू जसे समाप्त हुई बात की लाग को घसीट कर बोला—

अच्छा अच्छा ! हमारी ज्यादाती ही सही । अब ता पिड छोड । तू जीता मैं हारा । आइदा ध्यान रखू गा ।’

भोला न इस सफाई के साथ पटाक्षेप किया कि गम्भू मन मारकर रह गया । आज उमका मन कुनमुना रहा था । भोला की देख अकसमात् चि. गया । साचा—उनकी आड़े हाथो तू गा और कुछ खरी खोटी मुनाऊगा

लकिन उसकी मुराद पूरी नहीं हुई ।

भोला ने बड़ी हसरत भरी निगाहों से उन भूमती हुई बातियों की देखा । एक विचित्र सा ममता का भाव उसके हृदय में भर गया—जैसे अपनी सतान का देख वह एका एक आप्लावित हो उठता है । उनमें चलन वाली जिदगी और किसानों व सौभाग्य की आगापूण भक्तों को निहारकर वह गद गद हो गया ।

अचानक वह दृष्ट विभोर हो शम्भू के गल में लिपट गया ।

शम्भू ! तू मरा भाई ही नहीं तू ता ।'

और उसकी आँखें नम हो गई । विह्वल स्वर कण्ठ में आकर फस गया ।

वह भावुकता अप्रत्यागित है—शम्भू तो सहमा स्तब्ध रह गया । फिर कहने लगा— भया ! तुम तो बकार में ।'

बस, कष्टावरोध हो गया । साथ ही वह समझ भी नहीं पा रहा है कि क्या कहा जाय ?

इस मधुर मिनत के उपगत इधर उधर की बानें होनी लगी । उनमें कृद्ध घर की और कुद्ध बाहर की भी आकर शामिल हो गयी । वहीं ज्ञात हुआ कि आजकल शम्भू की तबीयत थोड़ी नरम रहनी है ।

भोला ने चिंतित होकर कहा— रात में ठण्ड पड़ती है । कपड़े सतों से पूरी सावधानी रखने की जरूरत है । देख तेरी सतत इन दिनों कितनी गिर गई है ।

भइया ! तुम भी एक हो ।"—शम्भू के मुँह से निरतिप्त हसी फूट पड़ी— जरामा जुकाम क्या हो गया बस किसी महारोग का मुँह पर जैसे हमला हो गया है—एसा सोचकर बठ हो । मुझे कुद्ध न होगा विश्वास रखो ।

“तुम्हें तुम्हें कुछ हो गया तो तो ।

पता नहीं आज भोला इतना सवेदनशील कम होगया है ? शम्भू के प्रति स्नेह की धारा प्रबल बग से उमड़ पड़ी है । इसका प्रतिरिक्त सारे गाव में एक प्रकेला बड़ी यक्ति है जो उसकी दूटी जीवन तथा का एकमात्र सेवनहार है ।

शम्भू भी द्रवित होगया, लजिन उसके शब्दों को न मिली । वह चुपचाप सा रहा ।

अब उनके बीच में आकस्मिक मौन का बोझिल सा टुकड़ा आगया । दोनों वित्र लिखित से गदन टटकाये बठे रहे ।

कुछ देर के बाद शम्भू ने आग्रहपूर्वक कहा — अब लौट जाओ ।

मैंने रे थोड़ी देर बठा हू ।

भइया ! गोधूलि की बेचा है फिर सध्या पड जाएगी ।’

मभी अभी चला जाऊगा ।

फिर भी वक्त पर जाना ठीक रहेगा ।

अच्छा ! जल्दी तैरती मर्जी ।

भोला न अपनी लाठी सभाली ।

शम्भू भी आगे माग तक उस छोठने आया । जब वे विना होने गये तो भोला न कहा — ‘अब तू जा ! राम राम ।’

‘राम राम ।’

उमन चतत बसत फिर कहा — शम्भू ! अपनी मृत का जहर ख्याल रखना ।

‘हा भइया जरूर ।’

यह प्रेमपूण भेंट भाना क हृदय पर एक स्थायी प्रभाव छोड गयी है । उसक अ तस का कोना कोना रम प्लावित हो गया है । शम्भू क साथ बीन इन सुखद क्षणो को बारबार स्मरण करके वह ग्रान द क महासागर म डूबडूब सा जाना है ।

अरे यह तो सपना भोला है खि खि खि । — पीछ से आकर किसी ने बेतुकी हसी हसते हुए उसका कंधा छुआ ।

दतने म, उसवे चारो ओर घंरा डालकर चार मादमी आकर बठ गय ।

‘यार हम तो तुम्ह रोज याद करत हैं पर बटा, तू तो ऐसा बिल म आकर छिपा कि अतापता तक गायब ।’

उनकी लडखडाती जीभ विवृत्त मुखाकृति और अनावश्यक बहकी बहकी हमी से स्पष्ट पात हा रहा है कि व अपने आप म नही है ।

‘होन फोरन ठरें की बोतल निकालो । भोला के होश उड गय ।

घब आयगा मजा ।’

‘अपना बिछडा हुआ यार जा मिता है ।

‘जय दुर्गा ।’

बातल खुली । एक एक ने मुह से लगाकर पोना गुत् बिया ।

भोला घबरा गया ।

देखो भई ! मेरी तबीयत ठीक नहीं है ।’

‘खि खि खि ।’ — उनसे से एक वही चिर परिचित ग्रमगत हसी के साथ बाला — लो इसकी भी सुनो । फिर यह समुरी किस मज को दवा है ।

सबक सब एक साथ टहाका लगा उठे ।

दूध गराबियों की सगत, हवा में घुल आरू पाक की नगीची मटक
 घोर गामने रगी ठरें की बोगल ! इन गबन मिनकर उव पर जादू का मा
 असर दाला । एक विचित्र-गा आकषण उनके मन में भर धाया । एक
 अश्रीब गा दशा-उमक हीरों पर लग गया । एक गायन बारा दन बाला नगा
 उनके म्लि य म्मिग पर नुगे सरह छा गया । यद्यपि उमन टानन क धमि
 प्राय से कहा—' माप करो भाई मैं अब छोड़ दी है ।'

छोटे तरे दुमन ! आत्र तो मुझ हमार गाय वाली ही पंगी ।

नही नही ।

अरे घन । नहीं-नही का बच्चा । —एक बातन उठाकर बोला
 —“गुनाम” करत है तो मगुरा घबहता है । पक डाल और मैं ” ।

बग, कहने भर की देर थी और मोला की गहन उनके हाथ में
 धागई ।



ठाकुर साहब के नातो पोते शहर से ब्या आ गये हैं, बस गोमा क गले नई मुमोबत पड गई है । यू ही सिर उठाने की फुसत नही मिलती है । काम स इतना परेदान नही होना पडता, जितना उनकी फरमाइशों पूरी करने से । कोई रोता है— कोई हंमता है । कोई किमी चीज के लिय तग करता है । कई बार एमी चीज को हठ पकड बैठत हैं जिनकी उपनधि सम्भव नही है । कोई कहती है—वही रोटी खाऊगी, तो दूसरा दूध के लिय चिल्लाता है । तीसरे ने कपडे खराब कर दिये हैं और चौथे ने एमी प्रकार गोमा एक फिरकनी की तरह उनके बीच दिन भर घूमती रहती है । यदि घोड़ी भी भी चूक हो जाय तो ठकुराइन मा भिडक पडती हैं ।

गोमा बुरी तरह थक जाती है । इस चीख पुकार से ऊब उठती है । कभी कभी तो भल्लाकर इस निकम्मी नौकरी को छोडर मारने की तैयार हो जाती है, लेकिन उसका जाग्रत विवक उस इस सीमा तक आगे बढने नहीं देता ।

रूपा ।'

एक दिन तनिक अवकाश पाकर गोमा ने पुकारा ।

हा जीजी !'

हाथ का काम छोडकर रूपा भट उसके समीप आई ।

दोनों धामने-मामने घाइ तो गामा ने घ्राश्चय से देखा कि जैसे वह उरसाह और मोहक हुमी रूपा से रुठ गई है । उसकी मायूस घ्राखो मे भाक

है। यह उत्साह तो जमे मदा के लिये बिदा हो गया है। श्रुति मघर हमी का मोत तो असमय म ही सूख गया है। उसकी सदव चहकती जीभ को भी लकवा ना मार गया है। लहरो की सी चचनना तो मानो श्वेत हिम लपनों क नीचे दब सी गई है। गिरि शृङ्ग की भाति बड़ गात और निम्न दिखलाई पडती है जिसके अतस का ज्वालामुखी अभी अभी फूटकर मोत हो गया है।

प्रति उत्तर न पाकर गोमा निराग भोगई।

अच्छा। जान दे। मैं मैं

आत्म केन्द्रित रूपा अचानक चोक पडी। गोमा के इन गे न उस पर गम्भीर प्रभाव डाला है। आत्म विस्मृति की केंचुली को छोडने का प्रयास करते हुए उमने कहा— जीजी! मैं तुम्हारा काम कर दूगी।

‘हा SSS ।’

गोमा को विश्वास नहीं आया। रूपा का यह विचित्र स्वभाव समझ सकना प्राय सम्भव नहीं है। धीरे धीरे वह एक पहेली सा बनती जा रही है। जो अपन मन की गांठे किसी व आग खोले नहीं तो क्या पता चने? उमका चरित्र तो रहस्यमय बनता जा रहा है। एक ओर जिस मुह से इकार करती है—दूमरी ओर उससे हा भी भर लेती है बमी हो गई है रूपा ?

गोमा न पानी निगाहों से पूरकर क— अच्छा आज शाम को चले जाना।’

ठीक है जीजी! मैं पानी ब्राऊगी।”



रूपा जब हैली के बाहर निकली तो उस बड़ा मजीब मा लगा । वह जानी पहचानी जगह भी उसे बड़ी अनजान-सी लगी । ये ठेड़ी मेठी गलियों ये सीधे-मपाट रास्ते उसे अिल्बुल नये नये म नये । वह नो जैसे भूल से किसी अपरिचित गाव म आ गई है । सचमुच हैली का चहार दीवारी म बंद रहकर वह तो एक पिजरे का पछी बन गई है ।

धीरे धीरे कुछ भूली बिसरी स्मृतिया के चित्र उसकी सुप्त अत द्चेतना मे उतर कर आकाश गगा के मार्गि फल गए ।

स्वप्न !

स्वप्न तो स्वप्न है । अक्सर व्यक्ति उठ निद्रित अवस्था म देखा करते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी बिरले हैं, जा जाग्रत अवस्था म भी स्वप्न दखते है । स्वप्न कुछ माठे तथा रसीले के उदास व दुखी मन को पुलकित कर देते हैं । कुछ स्वप्न अप्रिय तथा कट्ट हाते हैं जो मुदित मन को अवमाद गोक व चिंता स अभिभूत कर देते है । बड अद्भुत हैं ये सपने उनकी गति भी विलक्षण है ।

इहीं विचारों क ताने बाने चुनती और उधेहती रूपा चली जा रही है । यह बात अवश्य है कि इसमे रास्ता कटना सरल हो गया है । कभी कभी ध्यय के विचार भी बडे सहायक सिद्ध होने हैं । बीहड और कटका कीण माग भी फूलों की सज की तरह कोमल बन जाता है ।

उसके पर धरने घाप दाम्भू के खत की मु ढेर पर पहुँच गए । वह सनिक ठिठकी । खत के बीच म से जाने वाली सीधी पगडडी पर वह आगे

बड़ गर्म ।

चारों ओर अधिकार छा गया है । खण्ड चन्द्र की मलिन चान्नी उसी से निपटो पड़ी है । हवा मौन है । यद्यपि उमम हस्तों की लाजो खुसबू बस गई है । धरती के धानी आचल पर काली चान्दर भी विद्युत गई है । सान एक मरत अजगर की भांति निश्चित तथा नीरव पड़ी है ।

गम्भू के मचान को खोजन में उसे कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई । उसने कुप्पी के धीमे प्रकाश में आरचय के साथ देखा कि गम्भू मचान के नीचे घास पर कम्बला बिछा कर पड़ा है । उसका सारा शरीर ढका है । वह काय रहा है ।

रूपा ने टोकरी नीच रखी । पुर्ती से आग बली । कम्बल को थोड़ा सा हटाया । सलाट पर हाथ लगाया तो जात हुआ कि बदन तबे की तरह तप रहा है । बप बपी इस कदर बड़ गई है कि लान बज रहे हैं । हाथ परो में ऐंठन सा हा रही है । आँखें सुख अगारों सी दहक रही हैं ।

रूपा ने गम्भू का सिर अपनी गोदी में रखा । धीमे धीरे उस दबाने लगी ।

देवर ! —रूपा ने व्यग्र कण्ठ से पुकारा मगर उसकी आवाज गम्भू की उम हो हो में डूब गई ।

उमने पुन पुकारा— देवर !

'टूम ! —गम्भू ने टान भीचे । वह अपनी बाभिल पलकों का भ्रमक कर रूपा को देखने लगा ।

'कीन ? — गम्भू चींड़ कर बोला— कीन कीन ?

रूपा ने मुह खोल कर कुछ कर्ना चाहा मगर सभी गम्भू उमना घमन रोगी की भांति बकन लगा ।

'भाभी ! तुम तुम तुम । मैं मैं मैं बब म अजीब

रहा हूँ और तुम हो जो धार्द ही नहीं भाभी !

‘ है ! —रूपा के मुह से हठावू निकला ।

अब रूपा का हाथ गम्भू के हाथ में धा गया । अपनी छाती पर खीचकर बोला— भाभी ! तुम्हारा यह स्वर अभागा है । तुम्हारी स्नेह भरी मुस्कान से तिर गया है ।

रूपा को रोमाच-सा हो आया ।

‘ तुम तुम में मैं आह ! ’

गम्भू के कापन हाथ कुछ अजीब-नी हरकत करने लग । हवा का तेज भोका आया और वह क्षीण प्रकाश भी बुझ गया ।

रात का सन्नाटा ! घरती की गादी में साय पड़े खत ! घडकने जवान दिल । गम गम उफनती नि स्वासों ! ओह !

रूपा स्तम्भित रहकर सिर झुकाए बठी रही ।

सुबह जब गोमा की रूपा से भेंट हुई तो वह उसके सामने एक नये रूप में आई। यद्यपि उसकी आत्मा लाल है तथापि उनमें उल्लास है—
 खुमार है। बासी मुँह पर एक प्यारी सी मुस्कान खेल रही है जैसे मुरझाई
 कली वर्षा की पहली फुहार पाकर पुलकित हो उठी है। उसका हृदय
 शाही रंग सावरे अघरो पर मचती धारजू बन कर खिल रहा है। उनीची
 आँसों की गहराइयों में अभी तक रात के खामोश अपसाने सोये पडे हैं।

गोमा को अचम्भा हो रहा है। यह परिवर्तन अप्रत्यागित है। वह
 भी केवल एक रात में। यह बाहर की हवा का प्रभाव है या उसके अज्ञेय
 चरित्र का यह भी कोई रहस्य है। वह एकाएक कुछ निश्चय न कर सकी।

‘तू रात को जब आई रूपा ? — गामा ने पूछा।

‘जी जी !’ — तनिक हकजाते हुए रूपा ने कहा — ‘मैं
 मैं तो धा गई थी।

रूपा को यह भावनी लज्जिली दृष्टि गोमा को मा गई।

‘अरा आई कब ?

गोमा की इस जिनामा को गाना करना आवश्यक है अथवा
 अविश्वास तथा भागना का विषया विचार अदुरित होकर कही स्थिति को
 घोर अधिक सदंहास्य न बना दे। इससे अतिरिक्त गामा का इन प्रकार
 प्रत्यक्ष निष्प्रयोजन भी नहीं है अतः वस्तु स्थिति को स्पष्ट कर देना अनु-
 चित नहीं होगा।

रूपा न अपनी भुकी भुकी पलकें उठाकर कहना आरम्भ किया—

ज जी ! दवर की तबीयत खराब थी सा मैं दर से लौटी ।

दवर की तबीयत फिर खराब हो गई । कब कस ? मुझ से पहल क्या नहीं कहा ।

‘जी जा मैं ।

रूपा सचमुच घबरा गई ।

गोमा न कहा — अच्छा मैं खुद लख जाऊंगी ।

गोमा इतना कहकर चली गई पर तु रूपा के जनाट पर स्वद कण चमक आए । अनायाम नी उमक तिल की घडकन बठन मी लगी । पता नही किस अनात भय की छाया उमक प्राणा पर छा गई और उमका प्रतिबिंब मुगट पर स्पष्ट भलकन जगा । उमक मुह स सहमा एक ठनी सास-मी निकन पही ।

प्राय घण्ट भर के बाद गोमा लौट आई । उन शम्भु न मिला । पूछ ताछ करन स पता चना कि वह दूमरे गाव म अपने किनी दास्त क लडक का आज सगाई ह इसलिए वहा चला गया है । गोमा तब लौट आएगा ।

गोमा न आत ही अपना नाराजगी प्रकट की ।

बालो कैम सिर फिर आदमी है ? कत तक उनकी तबीयत खराब थी और आज चल तिय मगाइ म । वहा उच्छ्रब हागा जिमम उल्टा सीधा खान पान चलगा । उसन सहत का मुक्कान नही पट्टचगा ?

रूपा मौन रही ।

आज गोमा को मैं जाऊंगी और इसके तिए उह खूब फटकाऊंगी ।

रूपा पूबवत् चुप और निरचल रही । गोमा अपनी घुन म बकवास

बग्नी जा रही है। उगने का जो विशेष ध्यान नहीं किया और जो आर्द्र थी—वस ही चली गई।

सूक्ष्म सरोवर की प्यासी धरती का हृदय दारुण पथ्या स क पडा है। घुन मिट्टी हवा व साप मिलकर आसमान की ओर जा रही है। सूक्ष्म पत्तों पूष और निनत्र भी उड रहे हैं। जब गम तू चलता है ता उसक मन प्राण भुलस जात है।

परन्तु आषाढ का पहली बढनी उठनी है और धीरे धीरे नीलाम्बर उमवे काय आवन म गिमटता चना जाता है। शीतल वायु व भोंके आत है और उमके स्पन म अपूव गुण मिलना है। छोटे छोटे जल सीकरो की धीमी धीमी रस वर्षा होती है और प्यासी भुनमी हुड धरती का कण-कण आनन्दे त्वास स खिला उटना है। उमके तृपित प्राण उमिल हो उठने है।

इस सुखानुभूति को विस्मरण करना प्राय सम्भव नहा है।

हवा !

व्याकुल रूपा यकी है निराश है प्यासा है तिरस्कृत है प्रताडित है अपमान की यत्रणा स कीडित है। परन्तु उसक कस मृत प्राय जीवन मे गम्भू न जसे अमृत रस सा उभेन दिया। उसकी निस्पन पलकों खुली। निष्प्राण अक्षरों पर मुस्कान धरकी। निष्क्रिय हाथ परो म नर् गति सचरित हो गई। बठार, निर्जीव और स्थिर पढी देह म पुन प्राण प्रतिष्ठा हो गई। उसका जीवन के प्रति मोह प्रबल वग से उमड पडा।

यद्यपि शम्भू की प्रत्यक अनधिकारपूण चण्टा को त्त सव प्रयम हपा दग रह गई। ठमक स्पश म रोमाच है उसकी वाणी म उ मा है और उवर कीडित तन में कम्प है। उसका प्रत्यक क्रिया अपने आप म डनी मोहक और लुभावनी है कि उसकी सुष्ठ मानसिक चतना को जाग्रत कर रही है। गरीब से लिपटती बाहें अक्षरों का विबल स्फुरण और अधेर मे चलती दवास प्रश्वात्त की तीव्र गति न उस पर जादू का सा प्रभाव डाला है। उसके

भूने अतः करण म हतबल सी मच गई है । बीरान बगिया म बमत की नव
 वहार की छटा बिखर गई है । चारा झार नय फूत्र खिन हैं । पशी गा रह
 है । मद मस्त वायु झटभेलिया करती हुई बह रही है । वह अतीविक
 आनद की गगा म सुख-चुष खाकर डूब गई है । अपनी वर्तमान स्थिति को
 भूतकर मपनों के समार म विचरण करन लगी है । उन अभिगाप प्रस्त
 जीवन की विडम्बना को विस्मरण कर आज नए सुख म पखा पर बठ कर
 उड रही है ।

पशी की धृतत पिपामा बड गई है थीर वह गगन-मडस म निष्प्र
 याजन तथा दिगा-हीन भटकन लगा है । कहा ठिकाना है—कहा मजिल है ? —
 इसम बड मवया अनमिन है । वह तो केवल इस समय उडना जानता है
 बस, वह आममान की नीनी घाटियो में निर ेय गोने खा रहा है

गाम हुआ। विरह घावाग म तारों का रमणाज वभव फन गया।
रूपा तयार होकर आई।

घाज उतने साफ-गुपरे कपडे पहने हैं। गहने तो ३ नगे फिर भी
बाज्र गीको लगाने का सोम गवरण नहीं कर गकी है। मिर म सरमा का
तेन टापन सीधी मांग बाड़ी है। इन सगने उगके माटे गोप्य को सूक
निगार रिया है।

रम नव परिवग म गोमा ने उस घाजरज भरी निगाहों मे देखा।
अपनी चिबुक पर उगती रम कर उगन पूछा—

घरी रूपा ! यह कहाँ जाने की तैयारी कर रही है ?

रूपा तनिक सजा कर चुप चुप सी खड़ी रनी।

लकिन गामा को कही अनुचित सदेह नहीं हो जाए घत उतावली
म बोन पडी— कही भी जाने का इरादा नहीं है। बस एस ही पहन
दिम्य है।

अंतिम वाक्य तक घाते आने उमकी आवाज धीमी हो गई।

अच्छा, कोई बात नहीं। मगर बाहर मत निकलना, बजार म
नोग बात का बतगड बनाय मे।'

अच्छा जीजी।

रूपा ने रम आन्य को सिर झुका कर मान लिया।

गोमा सोचन लगी—बचारी विधवा है। सधवा औरतों की दला

स्त्री इस भी आज उजन कपडे पहनने का शौक ले गया है। बनाव मिगार करने की स्त्री मुनभ झाकाणा को दवा मकना क्वाचिन आज उसक निय अमभव ले गया है। वह रुठे हुए भाग्य का जैम मनान के निय प्रयत्नगील है। उजडे चमन का पछी अवन भग्न हून्य को बहलान क उद्श्य से जमे यथामाध्य उपकरण जुग रहा है। उपशित मन म अस कामना के नय अनुर पूट रह है।

गामा एक सरन हसी हमी फिर बाली— अच्छा नू यहा बच्चो का देखभाल करना। मैं थोडो दर म लौटकर आती हू।

‘कहा जा रही हो जीजी ? —घाशकित होकर रूपा न पूछा।

आज देवर का दख आने का विचार है। दिन मे व किमी सगार्द बगाइ म गय है सा अच्छी खबर लनी है। बस, थोडो सी नील मिलने ही मन की करने लग।’

हैं। —रूपा तो मानों आसमान से गिर पडी।

गोमा न कोई ध्यान नहीं लिया और वहा म चली गई।

‘ओह ! —रूपा क मुह स एक सीत्कार-सी निकन पडी। वह गिर घाम कर बठ गई। घातन पथी क समान वह तडप उठी। उमके समस्त अत करण म अस ज्वाला-मी भटक उठी।

थोडो दर म उमकी आर्खों में आमू धा गय। उगाम निराग और तुगी लुगी सी वह अपने भाग्य को कामन लगी जैम उसका सबस्व उमकी आर्खों के आगे समाप्त हो गया है।

गोमा ना यह विचार कि गम्भू गन म ही मिलना—जिरा गर गाबिन हूपा । उगने इधर उपर ताका मगर नो-तोन गाया क अतिरिक्त उग मून मल में बिल्कुन गनाटा द्वाशा हुआ था । एक दिविस प्रकार का ध्वनि गवत्र ध्यास थी त्रियन भवमान होना स्वाभाविक है । उगन गावाज भी रागाइ कि नु इगका परिणाम भी लाभदायक सिद्ध नहीं हुआ । घिरन हुए अंधेरे एक सेत की जन गूँघ नीरवना ने उस पधिक २१ तक ठहरने की आशा नहीं दी ।

गोमा हुताग होकर वापिस लौट पडा । लेकिन उसकी समझ म नहीं आया कि आसिर गम्भू गया कहा ? गोमा तो हो नही सकता कि अभी यह दूसरे गाव स आया ही नही हो । इस अउर तक स्वना प्राय सम्भव नहीं है । सोचत सोचते वह थक गई । अब तो उसके पाव चलने चलत गम्भू के घर की ओर बढ़ गये ।

देवर !

घर के द्वार पर पहुँच कर गोमा ने पुकारा । प्रति उत्तर न मिला । उसने भिडे हुए किवाडों को ठेककर अउर आका—गम्भू आये बस किय खाट पर चित पडा है ।

वह अउर घुमी । टोकरी एक ओर रख दी । कुप्पी के धीमे प्रकाश मे घर की अस्त व्यस्त अवस्था को देखा । उअर से ध्यान हटाकर बानी—'देवर !

४३ ।'—गम्भू चौक कर उठ बठा ।

“देवर ! सुना है कि तुम्हारी तन्वीमत ।’

गोमा के मुह में नेप गन्ध जम जम से गए । गराब की तीखी गंध उसका नास में घुमकर निमाग में कील सी गड गई । विस्मय में उसकी आत्म फटी रह गई ।

दे व र ।

शम्भू उठा । उसको हमती आँवों में एकदम गगरत का भाव घनीभूत हा गया जिस गोमा न आज तक नहीं दखा । प्रथम बार उसकी हसी में आज गमी गंध आ रही है जिसे कभी उसने अनुभव नहीं किया । आज उसकी दृष्टि में मीनापन है । होठा पर जैसे प्यासी जीभ बड़ी बकलो से घूम रही है जिनमें उसका मन की गदगी का बाहर उगल लिया है

‘देवर ! तु तुमने दाब पी है । —गोमा न अविद वागपूवक कहा ।

‘भा भी ! दाबन में दो स्नों न पिला दा है पर पर तुम तुम में मैं तुम्ह प्यार करता हू ।’

शम्भू की यह उमत्त हमी स्ननी बडवी है कि मुन कर गोमा स्त ग्य रड गई । आज उसका प्रिय देवर एक भिन्न रूप में उसका सम्मुख खडा है । घोर इस रूप की कल्पना तो वह स्वप्न में भी नहीं कर सकती ।

‘म नित उज प्रेम निवेदन को वह केवन नग की कुमारी समझे या ? वह एकाएक निणय न कर सकी ।

भा नहीं गोमा ! तमन प्यार क साथ अपनाया है । मचमुच मैं मैं ता निहाल हो गया । ओह ! कल की वन नशाना रात । तुम्हारा वह वह कोपल गी । जीर घोर वि ति ति ।

वहा उ माइक हमी । गोमा भीचकी रह गई । शम्भू का यह

प्रजाग रमी भर भी गम र में नगी घाया ।—

मा नहीं गाया । — राम्भू गामा की धार बड़ा— छोह
हिष् ।

इस द्वितीय क गाय छर सारी बन्धु पन गई । साग वातावरण
इतना अधिक् गम धोर लपधा हा गया है कि गामा के लप घटा माग
सना भी दूभर होना जा र । है ।

गो मा ।

राम्भू न मर्यादा का अनिद्रमण कर आवग म गामा की बन्दाई
पकड़ ती ।

है है है ।

इस जहरीली ह्मी न उम डम लिया । गोमा ता महमा हन प्रभ
सा रह गई ।

मैं ता बच स तुम्हे प्यार करना हू पर छव न्त
जार की घडियां खत्म हो गई हैं आमा आघो और मेरे घडकते
सीन से लग जाघो ओह हिच ।

इस प्रकार के अनधिकार प्रेम निवदन एवं निस्सकाच भावनाओं की
अभिधक्ति स किसी भी स्वाभिमानो का काधित हो जाना असम्भव नहीं है ।
उसका अन्तमन आहन होकर चीख पडता है । हृदय में दोष का आवानल
प्रउज्वलित हो उठता है धोर वह प्रतिकार करने के लिए तत्पर हो जाता
है ।

कदाचित् विस्फोट की वह घडी निकट आगई है । पहाड की
कठोर छाती को चीरकर आग और धुण की लपटें निकलने क लिए बेताब
हो उठी हैं ।

काम पिपासा से अघा नराधम सभल न सका । उसकी नगी

कामुकता अपने बीभत्स रूप में अट्टहास कर रही है । विवेक गूँथ होकर वह एक मदाध पशु बनकर गुराँवा— 'गोमा ! मरी गोमा !'

बलिष्ठ भुजाओं की नागपाण ने नारी के पवित्र गौरव का कलङ्कित करने का उद्देश्य में घेरा । परन्तु गीघ्र ही वह भ्रम दूर हो गया । वह दुबल नारी एक तिडर शेरनी बन गई । उसकी आँखों से चिनगारिया बरसने लगी । पल भर में वह एक लपलपाती जवाना मी बनकर तड़प उठा । उसने एक झटका मरग और दूसरे ही क्षण वह मुन्न हो गई ।

पशु घूँस चान रहा है । घृणा और विरक्ति की जलता दृष्टि फेंक कर गोमा पाप को इस क्लृप्त टाया में दूर धली जा रही है ।

गम्भीर पातुर है उद्विग्न है, विवागवान की भावना से व्रतन ३
 नज्जिन है । अब तो उसके पास केवल व्यण्डित हृदय है जो स्वयं को ही
 छन जाता है । वह यथ व भावों एवं अवाद्यनीय विचारों का भण्डार है ।
 उसकी अत्यन्त गहराई में भाङ्गना है तो गूथ के प्रतिरिक्त कुण्ड नहीं मिनता ।
 बस असीम खानि में डूब डूब जाता है ।

आज उसके जीवन में अप्रत्याशित घटित होगया है । रह रह कर
 रात की घटना गूथ साँ चुभ जाती है । गामा की प्रज्वलित दृष्टि तो
 मन के अतल में उलती मगान की भाँति उतर जाती है । ओह ! वह
 धावा से बरसती अपार घृणा और आङ्गोपूण निरस्कार । अधरा पर
 पड़ती वह भीन अभिगापपूण दुःखिया ओह !

उसका समस्त आशाओं पर तो जम तुपागवान हा गया वही तो
 दुःख की बात है । वह तो समझना था कि गोमा क हृदय में उसके प्रति
 कवल सद्भाव ही नहीं अतितु प्रेम और आकषण भाँ है । यदि निरपेक्ष
 दृष्टि से देखा जाय तो उसके भावोद्देश का कारण उसकी वह स्नेहपूण
 भविमा थी जिसके सहृदयतापूण निमग्न को अस्वीकार करना प्राय
 सम्भव नहीं है । उसके मृदुल रूप में खनी आत्मोपता और वात्सल्य था
 जो सुख, नीरस और अनावश्यक जीवन को सुखी तथा सायक बना सकता
 है । उसकी खनन प्रवृत्तियों का प्यार भरा प्रोत्साहन मिला । उसके सम्पर्क
 से अपूव रूपनि मिलती थी जिसमें प्रेरक सजीवनी एवं विद्युत् शक्ति का सा
 प्रभाव है ।

यद्यपि यह उमका भ्रम मान ही निकला । गोमा ने तो देवन उसे धपनाया भर—देवर का मघर स्तब्ध देख उमे अनुग्रहीत किया । कई बार सक्ता द्वारा उसने पपनी स्थिति का स्पष्टीकरण करने की चेष्टा भी की मगर उमकी आंखें न खुली । उमके तामास्य की मुख्य अनुभूति स वह आत्म विस्मृत हो गया और मावापन में दुराग्रह कर बैठा जिसका दुष्परिणाम आज भगवता पहा है । वह भूल जिसन एक ही गण में उमक अतीत, वतमान तथा भविष्य का कलकित कर दिया है ।

आह ! आज उमका प्रेम मर चुका है—रह गई है देवन वासना—जो प्रेम के शव को उठाए उठाए फिर रंगी है । जिस नतिष घरातल पर वह आज तक गन था, वही स अचानक उमका पर पिगन गया है और वह आपात मरितक पाप पक म डूब गया है । अब अब ' रात क उम सप्राट म उमक अगफन प्रेम की आन चीत्वारों सामो ग दीवारों म टकरा-टकरा कर मिर पीट रही हैं । उमक उल्लसित हृदय के कामनाया क फूल मुरभा गण है । और उसकी मृतन कल्पनाया के पत्र तो भुलम गए हैं ।

पर तु वह प्रामाणिकत करेगा उस पाप का जो तिल तिन कर सपनी प्रचण्ड घमिन म जाता रहा है । वह पाप जा गीघ्र ही उसकी यन जावन नीला समाप्त कर देगा । गाति ! मानसिक तनाव दह जान क कारण उमकी गाति मिट गई है । शोभ की चिता धू धू करक जलनी रहती है । अब तो गोमा के सम्मुख अपराध क त्रिग क्षमा पाचना करने स ही मन का वह धन लौट सकता है । कदाचित् वह उमक इस गुरतर अपराध को शमा कर द और उम वही प्यार सम्मान तथा देवर का पूरा अधिकार देकर उसके सून वीरान जीवन म आन द उल्लाम का अमृत भर दे ।

कुछ आशा बधी तदुमार सुबह जब गोमा मंदिर स लीट रही थी तो उसने साहस करके पुकारा— भाभी !¹⁴

गोमा न उसे देखा भी लेकिन बोझी कुछ नहीं । उसकी पातों में अभी तक चाहत अभिमान और होठों पर कुचन हुए विश्वास का छुर भाव विद्यमान है ।

एक बार सहानुभूति दिखाकर उसे मन्दपूजक अपनाया तो उसके प्रतिशान्त म अवांश ही पुरस्कार मिला है । अब वह अभी भयकर भ्रम कभी न करेगा । सच है दुबल अरात्र व प्रति व। गई प्राति सन्ध हानकारक हाती है ।

इस बार शम्भू दीवार बन कर गोमा के माग में लडा हो गया । विवश हो गोमा को दबना पडा ।

गामा ने कठोर स्वर म कहा — दूर हट जाओ ।

“भाभी ! मुझ माफ कर दो ।

विगमित कण्ठ से निकल उन ग.ों के साथ शम्भू ने अपन हृदय का समस्त कलुष गोमा के चरणों में उ डल दिया ।

लेकिन गोमा चुप रहकर आगे बढ गई । स्पष्ट है कि उसने शम्भू की प्रार्थना को निममतापूर्वक ठुकरा दिया ।

भाभी ! — निराग और दुखी शम्भू चिल्लाया — ‘अगर तुम माफ नहीं करांगी तो तो मैं मैं घुट घुट कर मर जाऊंगा ।

शम्भू की आवाज छलछला आई ।

एक क्षण के लिए गोमा ने तीली उजरीं स घूरा, फिर उसने इस भावुकता पर निमम चोट की ।

‘उम समय तुम मेरे प्रेम में दीवाने हो रहे थे और अब घुट घुट कर मर रहे हो ।

गोमा क होठों पर विद्रूप मरी मस्कान फल गई ।

‘नोबता की हूँ ही गई ।’

शम्भू ममाहन हो गया ।

“वाह रे छत्रिया ! घोवेबाज !”

गोमा ने इन तिरस्कारपूर्ण शब्दों के साथ जने एक निष्ठुर ठोकर मारी । शम्भू तिलमिला उठा ।

चुप हो जाओ, भाभी ! वरना वरना मैं पागल हो जाऊंगा ।

शम्भू का चेहरा एकदम क्रूर और विकृत हो गया ।

‘और अब पागल ! हा हा हा !’

गोमा का क्रूर हास्य तो शम्भू के अंतरतम को चीर कर निकल गया ।

‘भा भी !’

शम्भू का स्वर काप गया ।

गोमा की आंखों में प्रतिहिमा का भाव गहरा हो गया ।

तुमने मझे ही नहीं मेरे विश्वास को छला है । मेरी भावनाओं को टगा है । दूर हो जाओ मेरी नजरा से ।

शम्भू पर जैसे बज्र प्रहार सा हो गया । वह कातर स्वर में गिड़-गिड़ाया—‘नहीं भाभी, नहीं । तुम मेरी सब कुछ हो । इस ममार में मेरा तुमसे अधिक अपना कोई नहीं है विश्वास करो भाभी ! विश्वास करो !’

‘अच्छा !’—गोमा के क्रोधित नेत्र खिंचकर विस्मय से कपाट पर चढ़ गए ।

क्षण भर ठहर कर वह पूछ बठी—‘तुम मुझमें प्रेम करते हो ?’

कैसा प्रश्न ?—शम्भू की निरीह आंखें धक्कसात पटी रह गई ।

बोलो ! —गोमा चिल्लाई— इसके पीछे क्या कीमत ३ सफने हो ?'

गोमा न निमग्न क्याथ किया ।

कीमत ?

गम्भू चौक पडा । सहसा उसकी समझ म कुछ नही धाया ।

'बोलो । क्या कीमत दे सक्ने हो ? --आगे में गोमा चिन्ता ।

उत्तेजना का एक प्रबल भोका सा आया और वह गम्भू के अत कारण म आधी बन कर घूमने लगा । इसके साथ विचित्र मा अतद्बद्ध छिन्न गया । थोडी दर तक घात प्रतिघात करती हुई विरोधी लहरें अबाध गति से बहती रहीं । धीरे धीरे उनकी गति मन् पडती गई और एक समय ऐसा आया कि सबथ गति छा गई । एक अज्ञान प्ररणा से प्रेरित हा वह स्थिर कण्ठ से बोला — ' मैं अपनी जान तक ।

'बस बस । —आगे में गोमा बीच ही में उबल पडी— बन करो बकवास । जानत हो लाना । जो गरजन है—वे कभी नही बरसते । हा हा S S S ।'

इतना कह कर गोमा अन्तिम रोपपूर्ण दृष्टि फेंकती हुई चली गई । गम्भू खडा रहा मौन—निश्चल ।

सारी रात आँसों में कट गई । नींद को सपनों की परिधि उड़ाकर
न गई । सपने—जो टूटे हुए दिल के ददनाक भ्रममाने हैं—काली छाया
बनकर मस्तिष्क में छा गये हैं । हृदय की सारी खुशी शबनम की तरह रात
की भारी पलकों में कर्ण क्रन्दन कर रही है ।

रूपा की बचनी बढ़कर छाती में घुमडने लगी है । मुदित मन से
अपनी नई मुतङ्गनी घर र रमणीक प्रेम की ढगर पर पाव रखा है, मगर
सगना है कि कृपी ने उह पीछे म खींच लिया है ।

आज वह सडप रही है ।

गोमा कब आई ?—उमे नात नहीं । मुवह उठकर बह काम में
लग गई । गोमा उमके सामन पडी तो वह चुपचाप निकन गई । कुशल
मङ्गन के अतिरिक्त कोई विषेय बात नही हुई । सदब की भाति वह प्रसन्न
नही लग रही है—यह उमकी भङ्गिना देखकर निश्चित रूप से कहा जा
सकता है । आज वह उदास है—घ यमनस है ।

पता नहीं कसे उमे यह विषयाम होता जा रहा है कि गोमा ही
वह दीवार है जिसकी ओट में कामना का मधुर फन छिपा पडा है । घीरे
धीरे उनका मन खिचता है और खिचता चना जाता है ।

अस्थिर अगान्त तथा अ-पवस्थित मन स्थिति लेकर उसन जैम-
तम सारा दिन काटा । परन्तु ज्यों ज्यों दिन ढलने लगा—त्यो त्यो उसकी
प्रतीरता तीव्र होती गई । किसी भी काम में जी न लगा—जस सारी हैली
उम काटने को दौडती है । एक अजीब सा पागलपन मवार हो गया है ।

मोहास्र एव घत्रचासित की तरह उमने घपने ऋगडे पहने । गिर में तन डात्रकर बाता की गवारा । तलाट पर बिंदी लगाई और काजल की हली सी रेखा नयनों में खेरी ।

नय नहमे जीर जोरनी में वह एक नव बधू सी खिन्न उठा है । काचनी कुर्ती भी नई पहन ली है । परो में पायला के लिए उसका हठीला मन मचल मचल उठा है । उसनी भङ्गार तो हृदय में मधुर रस भर गेता है मगर गेद है कि वे उसके पास नहीं है ।

भाज गाय दाले चाहे टोकें तीखी निगाहों से घूर बटु ग गो में सना कर पर तु वह अपन मन की मुरात पूरी करेगी । प्रलय भा घा जाय तो यहा किसको चिंता है । भाज वह अपन प्रीतम से अभिसार करन जाएगी । उसका निश्चय अटल है - धमर है ।

अधेरी गलियें कटकाकीण माग और उस घटाटोप डरावनी रात में रूपा हेली के बाहर निकल गई । कुत्त शीके दूर कही गादडों की मनहूस आवाज भी सुनाई पडी । लकिन अविराम बढन वाले परो को रोकना तो सम्भव नहीं है ।

तेज हवा चलने लगी है । बादलों की धीमी धीमी गडगडाहट आरम्भ हो गई है । रात का सघना घचानक सिर उठा है । पेगो पर विधाम करने बाने पक्षी भय वस्तु स्वर में चीख पडे है । बस घुन के पक्की लगन की सच्ची रूपा घपने निदिष्ट पथ पर धीरे धीरे अग्रसर रही है ।

प्राय कुछ ही देर में रूपा घपने अभीष्ट स्थान पर पहुंच ग भिडे किवाडो की दरार में से कुल्पी का घीमा प्रकाश भाऊ रहा है । गम्भू के अग्र होने का पक्की साक्षी है । किवाडो का ठेककर वह अदर गई ।

गम्भू दोनों हाथों में सिर घामे विपण्ण मुख लटकाये चुपचाप

है। उसकी चितातुर आवृत्ति कुप्पी के कपकपाते प्रवाग में स्पष्ट दिख रही है।

देवर ! —रूपा ने अपन स्वर म मधु सा घोलकर पुकारा।

‘कौन ? —गम्भू जैम अघ-मुप्त अवस्था म से सहमा जागा।

गम्भू की आँखों में अपनी दृष्टि गटाकर रूपा मुहुराई। उस मोहक मस्कान का जादू उमकी काली गहरी पलकों में भर गया जैसे उषा की सलज्ज गुलाबी आभा हमन लगा है।

गम्भू चकित—विस्मित !

‘देवर !’

रम वार रूपा का स्वर भीग गया—जम उममें प्रेम की पर्याप्त नमी घुन गई। अतस की विक्रम धरधराहटें एक अनोखे रग में रगकर मधुर गीत की मूक स्वर लिपि की भाँति अचरो पर विखर गईं। उसमें म माना धीर-धारे दृश्य प्राणी रम की लहर से फूट रहो है।

गम्भू की हठानु विद्यत नहर से छू गई।

उसे लगा कि आवाग का भोला भाला दुबल चद्र पूनम क दिन अपनी समस्त कलाओं से आवृत हो मव मुदर एव सब प्रिय बन मागर की विगत छाती पर अटमेलिया करने लगा है। दूना सागर भी उमल हो गर जन क नित्य बर्चन हा जाए धीर उमकी उद्दाम योवनपूण तरंगों उम अपन बाग पाग म भरने क लिय धधीर हो जाए कम उतका उद्देश्य एकमात्र यहा है।

लकिन इमम वर मफन भा होगा—मदह है।

रूपा कहने लगी— तुमन मुम उवार लिमा है। तुम और मैं दोनों पिल कर प्रेम की एक नई वस्ता ।’

तड तड तडाक तडाक तड ।

दुष्ट प मेघ गरजे । दुर्निवार वज्र के प्रहार से आकाश का हृत्प
विदीर्ण हो गया । निद्राहण भय एव घातक से प्रवृत्ति का रोम रोम सिहर
उठा ।

‘नहीं ! — शम्भू चीख पडा ।

देवर ! —हृषा स,सा धरु-सी रह गई जीमे उसर सपनो के
मधुवन म प्राण सी लगा दी है ।

‘हा भाभी ! यह सब झूठ है । मैंने तुम्हें कभी प्रम प्रे
म नहीं किया है । तुम्हें यह धोखा हुआ है ओह !

शम्भू उदर पीडित व्यक्ति की भाति कापने लगा ।

रूपा पर तो भयकर गाज गिर पडा । क्षण भर के लिय उगकी
चेतना तुलप्राय सा हा गई । यह घाघान किचना दाहण और निर्मम है ।
दुर्भाग्य ने आज एक और ठोकर मारा है ।

उमन उमडने आमुषो का घूट पीकर भरपि वण्ट स पूछ लिया—
‘तो ता उस रात तुमने मुझे अपनाकर छन किया था ?’

है ! —शम्भू क नेत्र विस्फारित हा गय— ता तो
उस रात तुम थी तुम थी ।’

‘हा !’

यह मरिस्त सा उत्तर उम डम गया ।

‘ओह ! —शम्भू जमे घातनाद कर उठा ।

एक भयकर व्यथा ! एक घानक उत्थाहन ! त्रिपत घुण की घुन
म उसका दम घुन गया ।

अब ?

भ्रम भ्रम भ्रम ।

रूपा की आँखें खुल गईं — "तुम काली यवनि का उठ गई है ।

क्यों हास्यास्पद विदम्बना में पड़ गई है वह ! क्या धाखा लाया है उसने ! उस विश्वास की कमी निःछुरता पूर्वक हत्या हो गई है !
आह !

परन्तु अब वापिस लौटना सम्भव नहीं है । अब
अब ?

आवेश का एक भ्रम का मा आया जिसमें वह अपना मानापमान भूत गई । नयनों में नीर भर कर वह एकाएक कातर बन गई । तारी के उस गौरवगान्धी स्वाभिमान का परित्याग कर वह एक माधारण परित्यक्ता की भाँति गिड़गिड़ा कर प्रेम की याचना करने के लिये विवश हो गई । बस, उसे प्यार चाहिए जिसके पीछे बड़े से बड़ा त्याग करने की भी प्रसन्नता है ।

उसने अंतिम प्रयास किया — मैं वापिस लौटना नहीं चाहती
अब तो तुम ही सब कुछ हो मेरे अंतर्यामी ।

चिन्ताकर गम्भीर अपने उद्भ्रान्त मस्तिष्क की धामकर धर के बाह निकल गया ।

तभी भयङ्कर गरज के साथ माटी माटी बूद टपकने लगी । कुछ देर में भीषण वर्षा आरम्भ हो गई । धरती और आकाश जैसे एकाका होकर उस तिमिराच्छन्न रात्रि में डूब गए । उनका धीरे धीरे पाना भी कठि हो गया है । केवल चारा धीरे लोमहृषक स्वर सुनाई पड़ रहा है । लगत है यानों इस चेतन जगत का सारा अस्तित्व समाप्त प्राय हो जाएगा ।

रूपा खड़ी रही निराशा, निःसम्बल और निःस्पृहाय । कुछ देर चिये तो उसके प्राण दह में मुक्त हो गए और वह पत्थर की प्रतिमा बन के जड़ हो गई ।

अचानक रलाई का तीव्र आवग छाती में घुटकर रह गया । हृदय टुकड़े टुकड़े होकर बिखर गया । और उसका सोभाग्य लुट चुका है—जन बचा है । रह गई है कवल मृट्टी भर राख जिम उडाने के लिये हवा यप्र है ।



‘तेजा !’

“

‘तेजा ।’

‘हुम् हा हुम् ।’

तेजा उठ ।

‘कौन है ?’

तेजा आँख मलते हुए उठा । अधेरे में दूढ़ ढाढ़ कर माचिस से गुणी जलाई । एक मुस्त उवापी लेकर इस अवस्य में जगाने वाल को वह थोड़ा गौर से देखने लगा ।

“रूपली ! —तेजा मुस्कराया ।

बाहर बादल गरज रहे हैं । मूसनाघार बारिश हो रही है । बिजली बौंध रही है । ठंडी हवा की लहरें बेघडक मू से बरके बह रही हैं ।

रूपा !

एकदम भीगी खड़ी है । उसके गरीर व कपडों में रिस रिस कर पानी पग पर जमा हो रहा है । परंतु उसकी आँखों में अद्भुत चमक है ।

तेजा उठ । ‘—रूपा ने माग्रह कहा ।

‘ग्राह ने अधपूण दृष्टि वाली तरपन्चान् मावय पूछा— क्या बात है ?’

रूपा की स्थिर और कठोर दृष्टि तेजा के मख पर जम गई । उसने
एक स्वर म पूछा— तू मुझे प्यार करता है ना ?

है । — प्रौढ आगिन उस प्रश्न को सुनकर अचानक चकराया ।

बोल । — रूपा की कण्ठ ध्वनि प्रखर हो गई ।

वचारा नाई घबराया यद्यपि उसने धूक निगल कर बड़ी कठिनाई से
उत्तर दिया— हा ।”

तो उठ और चल मर साय ।

कहा ?

‘कही भी चल ।

रूपा झलनाकर बोली और उसने बाह पकड़ कर तेजा को भकभोरा ।

तेजा का भयाकुल मन अनात अनिष्ट की आगका से काप उठा ।

मैं कहती हूँ कि जल्दी कर ।’ — रूपा ने भिडवा ।

अच्छा अच्छा । मैं उठता हूँ ।’

विवर्ण हो तेजा उठा । अचानक भय को वह छाया उसकी निरीह
आंखों में घनाभूत हो गई ।

चलना कहा है ? — नाई ने सहम कर पूछा ।

रूपा ने कोई उत्तर नहीं दिया ।

अरी भागवान, मेह बरस रहा है है ।’

‘क ड ड कडारु ।’

वाक्यों की हम भयानक गहगडाहट में नाई का स्वर एकत्रम टिन
भिन हो गया । भय व धानक की एक प्रज्वलित लहर उसके सारे तन में
मनसना उठी ।

ह शवा ।

‘जल्दी चलो ।’

हृय पकड़ कर रूपा न तेजा को बलान् मीचा ।

भोगी बरसती रात ! पानी स भरे रास्त । रह रह कर चमकने वाली बिजली ! इन सबने मित्रकर बानावर्ण को अविक्त डरावना और हीन त्रिन बना दिया है ।

हे बा बा हे बा बा ।’

तेजा का यह कण्ठ स्वर फल बास के समान उस गरजते तूफान में ध्वनि होकर डूब गया ।

‘जल्दी चलो ।’

रूपा चिल्लाई । तज बोझार का पानी उसक चेहरे पर चाबुक सा पडा और लाचार हा वह चुप्पी लगा गई ।

अरी मुझे कुछ दिखाई तनी देता ।’

लो । मेरा हाथ पकडो ।’

अरी मुझ पर पर र द या मा क र ।

और उस अंधेरी तूफानी रात में तो पथिक अनजानी डगर पर बढ चने । एक का अस्तित्व हृद्य अपनी मूलता पर पछना रहा है और दूसरे के मजबूत पर निरंतर आग बढ रहे हैं ।

एक भयानक विस्फोट हो गया है। रूपा का तेजा के साथ भाग जाना कोई साधारण घटना नहीं है। सारे गाव में खनबली सी भव गई है। चौधरी घर की बहू ३। एक मामूली नाई उसे भगा ले जाए—बड़े अपमान की बात है। बस गूजरी की तो नाक ही बट गई। उ होने अपन लट्टु सम्भाल और सरगर्मा से खोज प्रारम्भ कर दी।

ठकुराइन ने सुना तो तन बदन में घ्राग लग गई।

गोमा गोपा।

जो जो ई ई !'

गोमा दीडकर आई।

आजकल ठकुराइन सा का स्वभाव चिडचिडा हो गया है। जरा जरा सी बान पर तिनक पड़ती हैं। आज तो उ होने विबराल रूप धारण कर रखा है।

यह मैं क्या मुन रही हूँ ?'

क्या ?

तेरा सर !'—ठकुराइन सा भक से बल उठी—'ऐसी भोली बन कर पूछ रही है जमे कुछ पता नहीं।

सचमुच मुझे कुछ ।'

बुप !—ठकुराइन सा आखें निजात कर भिड़क उठी—'तू झूठ बोलती है।

'नहीं। मेरी बात का भरोसा बीजिए।

भरोसा हूँ।' ठकुराइन मा का मुह घणा एब फ़ीव से विकृत
गो गया।

आप आप मरा।

गामा का स्वर अचानक काप गया।

मैं तूब जानती हूँ कि यह सब तरी कारस्तायी है।'

इन आरोप का मुनकर उमकी निर्दोष आत्मा सिहर उठी। उमकी
आँखें भर आईं लेकिन ठकुराइन मा ने इन आसुओं की उपेक्षा कर दी।

'तू कहने में उस कलमु ही को मैं रावल में रखा। काम दिया।
खान-कपड़े का प्रब ध किया। गिर छिपान को ठीक दी, मगर इन सब का
बचना उसने प्रच्छा ही दिया है। आखिर मल दी ना हमारे मुह पर
कालिब।

गामा मुबक पड़ी।

यह रोकर किमी और बो डराना। मैं चक्कर में आने वाली
नहीं।—ठकुराइन मा चित्तार्क—'बम अपना बोरिया बिस्तर बाधो और
निकलो पहा स।'

'ठ कुरा इन सा।

गोमा पर तो मानो गाज गिर पडा।

'अहा हा हा, क्या म ह बनाया है बिचारी ने?'—
ठकुराइन मा पुन गर्जी—'म सब जानती हूँ। तुम नीच हा—कमीन हो।
जिम थाली में खान हो—उसी में छेद करते हो। दूर हरो मेरे सामने
से।

गोमा की हिचरी बघ गई, पर तू सब यथ । उम पापाग खण
पर लेसामात्र भी प्रभाव नही पडा । व सडो रही लुटी लुटी सी ।

एक आसरा था—वह भी टूट गया । करे कोई—भर कोई । कसा
नस्तूर है इस दुनिया का ! ओह !

जब यह समाचार शम्भू के कानों तक पहुँचा तो उसका रूप क्षणभंगुर और विवृत हो गया है। कहने वाल ने खूब नमक मिच अपनी ओर से लगाई। उसका तो दिल ही बँठ गया। यह स्त्री के चरित्र का कौन सा रूप है—शम्भू की समझ में कुछ भी नहीं आया। स्त्री चरित्र की यह गूढ़ रहस्यमय पहली मुलभाने में उसकी बुद्धि भ्रममय है।

उसका चिन्तित होना तो स्वाभाविक है। जहाँ तक जिम्मेदारी का प्रश्न है—अप्रत्याश रूप से उस पर आती है। एक प्रकार से वह उसी क संरक्षण में रहती है। मारा गाव जानता है। भव ?

चौधरी ने तभी भाकर दरवाजे पर हाक लगाई।

'शम्भूमा ओ शम्भूमा।'

शम्भू के बाटो तो खून नहीं।

'शम्भूमा ! आ बाहर निकल !"—चौधरी क्रोध में गरजा।

शम्भू धपने टूटते साहस धीरे सडमडाते परा को पसीटता हुआ बाहर निकल आया।

'क्यों बेटा !"—चौधरी चिल्लाया—'बाट ली है ना हमारी माक ? बोल, तूने किस जन्म का बदला लिया है '

बाबा ! मुझे कुछ पता नहीं।

शम्भू विड़गिड़ाया।

‘ भूठ बोलना है । — चौधरी की आँखों से चिनगारिया बरसने लगी— तूने मेरी इज्जत पर हाथ डाला है । जाज तू नहीं या मे नहीं ।

‘ भगवान की सागंध, बाका ! मुझे कुछ पता नहीं । गम्भू ने अत्यंत दयनाय बनकर करुण स्वर में कहा ।

तो सम्भल जा ।

चौधरा पर भूत सा सवार है । विषक गूँथ सा हो गया है वृ । भल बुरे का नाम प्राय सुप्त-सा हो गया है । वह अपने साथ कुछ सम्बन्धियों को लेकर आया है । सबक पास लाठिया हैं । उनकी क्राधात्तेजक भाव मुद्रा से स्पष्ट न न हो रहा है कि वे सब मरने मारने को तयार हैं ।

सब की लाठिया एक साथ तन गई ।

गम्भू क भय से प्राण मूँध गये । वह एक अमहाय और पगु यक्ति की भाँति याचना भरी दृष्टि से चौधरी का तर्कता रहा ।

बाका ! ठहरो ।

अचानक भोला लाठा टेकता हुआ घटना स्थान पर आ गया ।

कौन ?

यह तो मैं हूँ भावा

अच्छा, तो तू भी इसकी जिमायता करने आया है ।’

चौधरी न दूर ही से उलफारा मगर भोला ने गान स्वर में उत्तर दिया— नहीं बाका ! तुम्हारे बिनाफ जाकर मैं इसका जिमायती नहीं कर सकता । तूम बटे हा—मर बाप क ममान ।

वम कण्ठवरोध हा गया ।

कथन अपन प्राप म मार्मिक है । कहने वाले ने भी बड़े सयत स्वर मे वयपूवक कहा है । उसका आता पर तत्काल ही अनुकूल प्रभाव पडना प्रावश्यक है ।

चौधरी ने निरस्कार पूण दृष्टि शम्भु पर डाली जो उसकी भय भक्त आखो म खा गई । अपराधी का चेहरा छिप नहीं सकता । कहा न कुटिल व घाघ भावें—और कहा य निर्दोष व निष्कपट भावें । कहा वह दुष्ट और छत्रिया का घृणित छद्म रूप—और कहा यह क्षमा और दया का पात्र ।

चौधरी न अपन दोष साधियों की ओर देवा । व भा अममभस म पंकर कभा भोला और कभा शम्भु को निहार रहू है ।

धनुकून अवसर देख बोला पुन भोला — काका ! शम्भु ता तुम गम से मरा जा रहा है । इसम कमूर भी उमका नहीं है ।

चौधरी कवन भोला का मुह जागता रहा ।

इसन ता वहू का मरन स वचाया है इज्जन म रहने का ठिकाना दिया है, पर इस पर भी बह कुवम कर बठी तो इस वचार का क्या दोष है ?

भोला की बातें तरु सगत तथा प्रायोचित हैं अत उन पर विचार किया जा सकता है । परिणाम स्वरूप चौधरी का आवग धीरे धारे समाप्त होता जा रहा है । वास्तव म शम्भु न तो उसक साथ भगाई की है उसकी मान मर्दादा का रक्षा की है और वह जो ।

चौधरी का गदन नटक गई । पराजय का गानि जनक भावना उसके अतम म भर गई । वह अत्यंत नैरा यपुण स्वर म बाना — भाला ! इसमे कितो का काँ दोष नहीं है । मर दिन बुरे हैं । जसी मर्जा भगवान की ।

धोभ की भावना से चौधरी एकदम स्ति न हो गया । वह लौट पडा । उसके साधियों ने भी उसका अनुसरण किया ।

' भइया । — शम्भू एवाएक दौडकर भोला स लिपट गया—
आज बचा लिया बरना । '

नहीं रे, शम्भू । तसी कोई बात नही है ।

शम्भू की आखें कृतज्ञता से छत्रक घाइ ।

❀ ❀ ❀

बहुन दिन ो गय है । रूपा और तजा न अपनी छोटी-मी गृहस्थी जमा ली है । पाम म रूद्र जमा पू जी है जिम रूपा अपन माथ लाई है काम चल रहा है । नाक जल्मी म था इमलिय लानी हाथ चला ग्रामा । फिर हाथ पर हिनाय वगर म अनजानी ठोर म रूस निर्वाह हो ?

धीरे धीरे आर्थिक समस्या का प्रश्न विपम होता चना गया । वास्तविकता का अनावृत रूप उभर लिय चिंता का कारण बन गया । वह क्षणिक आवेग का सु दर मपना जम बालू के महन की भांति ढहने लगा है ।

अब ?

गाव क एक किनारे पर छांगी मी फूम की भोंपडी बना ली है और व उसम निश्चिंत कर रहते हैं ।

गाव कोई विशेष महत्वपूर्ण अथवा उत्तुखनीय नहीं है । साधारण-सा है । यद्यपि उसका वातावरण निमल है—गात है । अधिकांश पिदटा जाति के लोग हैं जो सेवा बाड़ी करके अपन परिवार का भरण पोषण करत हैं ।

मत्र प्रथम तो उन दोनों को देख कर गाव वालो ने बडा आश्चय किया । नाम धाम जात पात सब पूछी, लेकिन रूपा ने भी झूठ बोलन मे कोई कसर नहीं रखी । जब परस्पर सम्बोधन के बारे म प्रश्न किया गया तो उसने नि सकोध धापणा कर दी कि य भेरे कावा जा' हैं ।

वचारा नाई रूपा की म घष्टता से एकदम बुभ गया । उसक अविश्वासा नत्र पट क पटे रह गय । स्त्री का यह कौन सा छलिया रूप है—

उसकी समझ में नहीं आया। भवर में फसे काठ व टुकड़े के समान उसकी बुद्धि चक्कर काटती रही—काटती रही।

कुछ तक्षण युवक युवतियाँ ऐसी भी हैं जिन्हें उनके कथन पर विश्वास नहीं हुआ। उनका सम्बन्ध तो ज़रूर बनता ही गया। यह अवस्था ऐसी है। घबराकर भाग हुए नये प्रेमा जोड़ पट्टे पन्त भाई रहन अथवा बाक भतीजी बन जाते हैं यह स्वाभाविक भी है। वे रहस्यमय कथा व करक हय पड़ते हैं।

दाना महसा कैंव जाते हैं।

भूठ के पर नहीं होने। यद्यपि सब जानने हैं फिर भी भूठ बोला जाता है।

आजग में जो काम किया जाय वह धारम्भ में ठीक ही लगता है मगर बाल्यान्त में जब उसके भयकर परिणाम आलो व आगे घान है तो हृदय धरा उठता है। मय प्रथम तो मान जनि का प्रदन उठता है। रूपा गाव व सम्मानित परिवार की कुल वधू है। मसुर गाव के पच घोर चौधरी है। उनका घर छोटी गाव है। उनका घर आग ममभा जाता है। किन्तु उनमें मय मून में मित्ता किया।

गाव गाव कर रूपा का मन आगजित में मिष्ट उठता है।

और जब दवर मुनेंगे ता ?

राज भर व निय रूपा मन भी रह गई। किमी न जम टगकी अतदचनता की भक्भोर किया। परन्तु गीत हा वटु मम्भ न गई। वर भाव जिग गति म घाया था—अपना रती भर प्रभाक छोर बिना हा वता गया। फिर टगक मन व अनगन म विग ध्यात गया।

दवर । दनिया। धानबाव ।

इन्हीं कटु शब्दों के साथ उसके अधरो पर वक्र मुम्बान की विवृत रेखायें बिलर गईं । धब तो वह इन व्यय की परगानिया में मुक्ति पान के निय प्रयत्नशील है ।

तेजा एक अधजनी बीड़ी के बस पर कंग खीच रहा है । घुए के माथ लिपटी उसकी उगामी गहरा चित्ता की सूचक है ।

‘काका !’—रूपा ने आहिस्ता में पुकारा ।

“ ”

नाई ने तीक्ष्ण दृष्टि से पूरा । फिर भडक उठा—‘खबरदार रुपनी जो मुझे काका कहा । हा ५ ५ ५ ।’

रूपा हठात् हस पडी ।

ता क्या कहू ?

नाइ चक्कर म पड गया । वह अचकचा कर बोला—‘क्या कहू ?
ऐं ऐं ऐं कुद्र भी कह दे पर काका अच्चा नही
लगता ।’

‘भगवान न कुछ रिश्ता ही ऐसा बना गिया है कि मुझे काका कहना पडता है ।’—बनी सरलता से रूपा कहने लगी—‘दसो, तुम्हारी यह डनता उमर, ये सफ्त बाल ये सल पडे गान । अगर तुम्ह अपना प्रमी कहू तो कोन अकन का जया विश्वास करेगा ?
बोवो ।’

“रूपली ! —नाई चीख सा पडा ।

और रूपा अपनी उफनती हसी रोक न सकी—वह दरमाती भरन की भाति खिनखिता पडी ।

बेचारा नाई इम जवान हयो के नीचे दब सा गया ।

उसकी समझ में नहीं आया। भवर में फसे बाठ।
जसकी बुद्धि खरकर काटनी रही—काटनी रही।

बुद्ध तमग युवक युवतिया तेरी भी है जिह
विश्राम नहीं हुआ। उनका मन्द तो क्षमग बढता ही
तमी है। अकसर भाग हुए नय प्रेमी जाइ प ने पहन
काक भतीजा बन जाने हैं यह स्वाभाविक भा है। व
करक हम पडत है।

दाना महमा मेंप जात है।

मूठ के पर नहीं जान। मद्यपि सब जानत हैं फिर
जता ३

आवग म जो काम किया त्राय वर धारम्भ म टी
३ मार बालानर म जब उसके भयकर परिणाम आर्थो न धार
हृय घरा उता है। मय प्रथम ता मान गनि का प्रान उ
गाव व सम्मानित परिवार का कुन वपू ३। मसुर गाय क पच।
३। उनका घच्छी माल है। उनका पर आग ममभा जाता
जान सब भूत में मिला दिया।

गाव गाव कर रूपा का मन आगदित न गित्त उता ३

और अब दवर मुनेने ना ?

शण भर क निय रूपा मन भी रह म ३। किमी न जम
अतचनना का मकभार दिया। परन्तु गोत्र हा व ममभन म ३। व
त्रिम गनि म आया वा—अपना रमा भर प्रभाव छोड़ बिना हा
रमा। फिर जसक मन व अतगत म विप ध्यात गया।

दवर । दूरिया पागवान ।

मूल्यवान बना देती है ।

इस खतरनाक खेल की लम्बी रस्मी खुद रूपा के मन में ही पड गई । दुर्भाग्य से वह उसमें बुरी तरह फम गई है अब
अब ?

रूपा की आँखों में सूजा भेद्य ज्वकार छा गया ।

रूपा भोपड़े के अंदर सोती है और तेजा बाहर । वह सारी रात नीम तल पड़ा आकाश के तारे गिनता है । नींद कहा ? अनकानक दूषित विचार उसके मस्तिष्क में भर जाते हैं और सून की तरह चुभन रहने हैं ।

सुख चन की जिन्गी बसर हो रही थी । बड़े बिठाय सिर में तुजली चली जो घुलापे में इष्क का शोक चरमाया । इस चचन आगरा के फर में पढ़कर प्रवृत्त हुए गाव में सड़ रहे हैं ।

नाई सिर धुन कर अपनी मूखना पर पड़ाना लगा ।

न तो दिन में धाराम और न रात में धन । मन बरानी में घुटता है । सिर में दद है—आसों में जलन । है कहा इमका ?

जय प्रेम का नगा चढ़ता है तो सागर के ज्वार की तरह । मचल मचल कर उसकी उल्लास लहरें चन्द्रकिरणों को अपने आकाश में समेटने के नियम अधीर हो उठती हैं । कालांतर में जब उमका मत्त रोने रूप धीरे धीरे सात हा जाता है तो किनारों की कीचड़ से मनी स्थनीय अवस्था अत्यंत कष्टनाशनक हो जाती है—मानो सागर का दृश्य पट गया है और वह गहरी चरना में सिमक रहा है ।

तेजा ?

एक दिन सुबह उठकर जब रूपा ने नाम तन गायत्री माची दया तो धक सो रहे गई । नाई काचिन रात में ही भाग गया था । घाड़ी देर तक बट धरने मन का बहनाता रही—दि राग का अन्तिम छार पकड़ कर दापहर तक उमकी प्रतीति करती रहा । परंतु वह निर्मोही गय हुए ममय का भानि मोर कर नहीं आया । जिमको आज तक कवन ज्ञान परिज्ञान का गिगीना ममक बंगे था—ओ उमकी दृष्टि में कवय काय मात्र था उमा के प्रति इतना क्या हुआ ? मच है समय और परिस्थिति नाशक का भा

मूयवान बना देती है ।

इस खतरनाक खेल की लम्बी रस्मी खुद रूपा के मन में ही पड गई । दुर्भाग्य से वह उसमें घुरी तरह फस गई है अब
अब ?

रूपा की आँखों में सूधी भेद्य ज्वकार आ गया ।

दो बय हो गये ।

गाव के सामान्य जीवन में कोई विशेष उल्लसनाय परिवर्तन नहीं हुआ है ।

भोला की अवस्था अब जिनो बड़ी गौघनीय है । चिताओ के बाभ न उसकी प्रसमय में ही कमर तोड़ दी है । एक मात्र तो उसने गम्भीर काल में पराजय की तर्जिन दूसरे सात उग छाड़ दिया । गोमा के प्रायह स ही यह सब कुछ हुआ था और अब उगी का उन्मत्तता का परिणाम है । बस भाला मूक दणक बन देल रहा है ।

विद्युत् दिनों फिर बीमारी में उस धर पड़ाया । दरअसल में वह अपनी धातु से मजबूर है । पराजय की लत उसमें छूटती नहीं है । थोड़ी भी लचीलता सम्भली नहीं कि उसने बोलल से मुँह लगाया । फिर स्वल्प इन दिनों वह अधिक दुबल प गया है । यज्ञ तो गोमा की मश टहन का सुपरिणाम है कि वह चापिग भना चगा हाकर अपने परा पर गरा हो जाता है ।

गोमा अपनी हम गुना निष्ठा और जिगातीन अवस्था में उठरने का मयन प्रदर्शन कर रही है । जीवन का इस धुल दान से यह दूरी नहीं है - विपरीत न । है बकि प्रनिष्ठित परिस्थितियाँ में मान्यपूरक सधन कर रही है । जय पराजय का एक धनाया मय । तर्जिन भिर मुहा कर पराजय का स्वीकार करता तो एक प्रकार की जायता है त्रिमल विर उगरी आ मा कमा अ गा नदी दनी । यद्यपि कभी कभी यह पवरा ज्ञाना

है — डर जाती है, तथापि पुन नई आगा, नया विश्वास तथा नई आस्था सम्बल बन कर उसे उबारती है ।

जिदगा का 'यह' खेल आख मिचौनी के साथ बराबर चल रहा है ।

इस वय मोन में भयकर बाढ आई हुई है । उसका प्रत्यक्षकारी आवाज दूर दूर तक सुनाई पड रही है । जल की उलाल भीमवाय लहरें दोनों किनारों से टकरा रही हैं । वे बाजू की दीवार की तरह घमकत जा रहे हैं । आस पास गटे पेड भी टूट टूट कर पानी में गिर रहे हैं । बडा लोम हपक दृश्य है । चारो ओर जन ही जन जिसमें गाव खेल खनिहान और चरागाह डूबन चल जा रहे हैं । मवेशी बाढ क चक्कर में आकर बह गय है अथवा भयभीत होकर भाग गय हैं ।

बाढ का यह विस्तृत और भयानक विस्तार देखकर प्राण सूख रहे हैं । चहुँ ङिगा से हाहाकार का हृदय विदारक स्वर सुनाई पड रहा है । यद्यपि सहायता काय प्रारम्भ हो गया है मगर इस महा विपत्ति के सामन वह बहुत धाडी है ।

जो गाव ऊंचे टीन पर बस हैं, व बाढ की विनाशकारी गहरों के विषय से अभी तक सुरक्षित हैं । यदि यह बचा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह बाढ इन गावों क निवासियों क निय एक वरदान उतर आती है । यह वरदान है— वह भारी भरकम लकडिया जिन्ह व निकाले गन हैं और उन्हें बच कर खूब धन कमाते हैं । यह है जीवट का काम । अल्प्य गार्हम क बिना इस घातक मृत्यु से खिलवाड करना प्रायः सम्भव नहीं है ।

गाव के सार लाग नगे किनारे क घाटों पर फन गए हैं ।

गामा भी दूर एक घाट पर बडा छोटी मोटी लकडिया निकाल रही है । दग पर भी— बिल्कुल ही नहीं है गाव बाढ दसक आग क घ गों पर लड है धन बहुत ही कम मात्रा म उस लकडिया उपनय्य हो रहा है ।

लेकिन उसे पूरा साताप है।

आज साथ में था पा गया है धीरे भीना भी। घर में अकेले पड़े रहना उन मनासिब नहीं लगा। वह बटा बटा ऊब जाता है। मय हीन विचारा की उथेठ पुन परगान करती रहती है। तनवाई की उगास घड़ियों में तो जम उगवा मन डूबन या लगता है।

गोमा ने नाराज होकर टोका तो भाला के रक्तहीन मुख पर एक फीकी गो मुस्क न खेल गई।

“भागवान् मैं कीन सा तरे सर पर चढ़कर चल रहा हूँ।”

घोड़ी भी भा तवीयन सम्भनी नहीं कि बम हो गय खाना ।

धरी जब तू साव है तो डर किस बात का है ?

अनुगत की अस्मिम प्रभा गोमा के सावरे मख पर फन गई।

‘चनो हूँ तो तुम तो बड़ बस हा।

गोमा एक लजीली हसी हम पडी।

गोमा लकड़िया निकाल रही है और भोला उसे टकटकी लगा कर देख रहा है। वह सोचता है—गोमा स्त्री है और वह मर्द। लेकिन वह हाथ पर हाथ धरे बैठा है। वह काम कर रही है। काम जो उसे करना चाहिए।

पिछले कई वर्षों से वह गामा पर पूरा आश्रित है। वह कमजोर है—बीमार है। कितनी लज्जा की बात है? मारे घर का दैनिक खर्च आज उसकी पत्नी के परिधम से चलता है। वन उस एक प्रकार से पालती है - ।

‘ओह ! —भोला का मन कुड़वाहट से भर जाता है।

गाव वाल जब उससे मिलने आते हैं तो अक्सर गोमा

को प्रगमा करत है । उमरे अदृष्ट साहस अपुव घँय और अथक परिश्रम को भूरि भूरि सराहना करन यक्ते ही नही है । भोला को लगता है कि जम वे उम पर अग्रप्रत्यक्ष रूप से योग्य कम रहे हैं । उनकी हसना आखा स परमती कहणा उसे उत्तेजित कर जाती है । उनके रहस्यमय सकेतो की मौन भाषा में क्षाभ उत्पन्न हो जाता है और प्रगम क्षण उमका मन एक विचित्र विग्रहणा में भर जाता है ।

यद्यपि वह अपनी मनो भावनाओं को छिपाने का मघप करता रहता है । सरल भाव में अपनी दृष्टि में वीतराग तथा सतस्थता जान का चेष्टा भी करता रहा है कि कही वह उखल न जाय । अपने मानसिक विचार अथवा हृदय का उग्र अकुलाहट से उत्प्रेरित हो कही किमी के साथ निमग्न व्यवहार न कर बैठे और किसी को कुछ बगोर गान न कह दे ।

वह भली भाँति जानता है कि आज वह सवधा अग्रग है—असहाय है । जब इस निरीहता और अपात्रता का उसे बाध होता है तो उसकी आत्मा छोई छोई सी भटकने लगती है । नीच से नाच और दयनीय से दयनीय प्राणी में भी स्वाभिमान होता है मगर उसकी इस निराधार अपाहिज अवस्था में वह भा चुक चुका है । आज वह रीता है गाली है चुटा हुआ है ।

आकाश वाली घटाओं से आच्छादित है । डेर सार वादन अज्ञान निशा से अज्ञान हैं और परस्पर घुन मिग कर हटका हटका गोर करत है । हवा का वेग तीव्र है और उमम सौतल लहरें सी चल रही है । कभी छोटे छोटे न ह न ह जल सीकरों की बोछार आकार वमुधा का अभिपक कर जाती है । उमका रोम रोम पुलकित है—रस विभार होकर भूम रहा है ।

वर्षा का कोई भरासा नही । पता नही कब शुरू हो जाय ।

गाव माग का सारा घरा म निकल कर चारा और फल गया है । रेत घाट और जंगल आवारा हैं । एक नई स्फूर्ति—एक नई आशा लेकर नया जीवन जैसे धरती की छाती पर अगड़ाइया लेना लगा है । चन्त हल आकाश की आर उठी आखें गरजती सोन मे से लकड़िया निकालत हायो ने आज प्रकृति क विरुद्ध सामहिक युद्ध आरम्भ कर दिया है । आज का यह इमान भव य विजय प्राप्त करेगा । उसका विरवाम श्रद्धित है—आस्था अमर है । यह भयकर प्रकृति उसके आगे सिर झुकायगी ।

सपनों की लपटी म उसका जीवन पल रहा है ।

बाच मभधार म एक बहुत बडा पेड बहुत आ रहा है । उनम काफी मात्रा म लकड़िया, मिल सकती हैं । गाव वालो की ललचाई दृष्टि उस पर नगी है । पर तु बीच मभधार म कूद कर कौन मौत क मुह म उगली डान ।

हालांकि गोमा ने भी उन दवा मगर अपन वृत के बाहर समझ कर उमने पाछ ही उधर से अपना ध्यान हटा लिया ।

अब व पड एकाएक उड़ता और गोमा जिस घाट पर लडी थी उगी िगा म बहकर आने लगा ।

अचानक भोला की आँसो मे आशा की नई किरण या कौय गड । उमर दुबरा गरीर मे जस विद्युत लहर सी दीन पडा अतान प्रेरणा के बगामून ही वह उफनती नगी म कू गया ।

गोमा ता सडमा भोवकी रह गई । यह इतना अकामित तथा अप्र यागित है कि वह एकाएक कुछ समझ न सकी । उसके कण्ठ स ता एक चास भी फूट पडी ।

घरमर गाव के कुछ व्यक्ति लालच म अडे होकर इन प्रकार की गनती हर मान करत हैं । व आवेग म कू ता जान हैं लकिन वापिस

लौट कर नही आते । गद्दी की गरजभी तूफानी लहरों उमे एक तिनके की भाति निगल जाती है ।

“लौट आया । हम यह पड नहीं चाहिए । — गोमा वरुण स्वर मे चिलगाई ।

परन्तु भाला मुनी अनमुनी कर गया । वह पुर्ती स तैरता हुआ अदिराम थाग बना गया ।

गोमा रस्सा और अक्डिया फेंक कर अग्नि नर्तों स अपलक दखती रही । अब तो उसका दिल अनान भय और अनिष्ट की आगका मे काप काप उठता है ।

थोडे परिश्रम न बाद भाला पड के पाम पहुच गया । गीध ही उस पर बाबू पाकर वह किनार की ओर खने लगा । सौभाग्य स वह अपने प्रयत्न मे सफल रहा और धीरे धीरे गरजती लहरों का प्रनयकारा विद्रुप पीछे छूटता चला गया । अब तो उसके रुग्ण तन म जस अभूतपूर्व बल आ गया है । आज कई वर्षों के बाद उसके मुरभाय चेहरे पर विजयोन्नाम की नई काति चमक उठी है ।

गोमा तो देखता की देखता रह गए । उसके नेत्र विस्मय से फट फट रह गये । मध प्रथम उसे विश्वास ही नहीं हुआ । अपनी भय अस्न पनकों को बार बार भपका कर वह इम अप्रत्यागित चमत्कार को अधिश्चाम पूर्वक मूह बाए देखती रही । लेकिन क्षण भर प चात् मब कुछ स्पष्ट हो गया । सारा भ्रम दूर हो गया । अब तो हर्षातिरेक स आसू छलछला आए । पति व प्रति दृतना प्रेम उमड आया कि उस गान्गी के मायम स यक्त करना प्राय सम्भव नहीं है । आधेग की द्रुत लहरो के संग उसके मन उडन लगा है । और वह पति के गल म बाह डान कर बधाई दन के लिए सहसा बेनाय हो उठी है ।

सयोग की बात । तभी पीछे स एक बगवता उठ नह्य आ गई और वह पेड स टकराई । उसने पेड सहित भोला को उछावकर उम छोटी धारा मे डाल दिया, जो आगे चल कर बाढ की मुख्य धारा से मिन जानी है । इस आकस्मिक दुर्भाग्य न तो गोमा के प्राण ही जसे हर नित्रे । वह विकल बण्ड से चित्पार्ई— 'बचाओ बचाओ बचाया ।

और साथ ही उमका रुलाई फूट पडी ।

इस मम विचारक स्वर की गुंज एक किनार स नकर दूमरे किनार तक फल गई । उसने जानू का सा प्रभाव डाला । बान की बात मे सब लोग हाथ का काम छोड कर लीड पडे । परिस्थिति की गम्भीरता ने भाला की विवरु शून्यता को अनावरण कर दिया । परन्तु अब समय कहा है ? उमके मुखतापूण शणिक आवेग की घालोचना करने का ? बम अविनम्ब ही सहा यना क लिये भगीरथ प्रय न करने का निश्चय किया गया मगर ?

रुइयो ने नाव डालने का मुभाव रखा परन्तु मम अमानयिक कह कर छोड दिया गया । नया इस बडी मनी स कीत नाव डाल कर अपने प्राणों स बिनबाड करेगा ? किममे इतना साहस है ?—सबका गदनें सटक गई ।

अब ?

सब लोगों को निरुपाय घोर मीन सभे सैम गोमा का रहा महा धारज भी दूर गया । गे० को छातीस लगाकर बर एक अगहाय दुविधा की भानि करुण क दन करने लगा है । हृदय स विना सी धधक उगा है— उममें प्रवन्ग स्वाहा हो रहा है । बबम गी मडी है वह । और अपनी भ लों क आग अपने सौभाग्य का पुत्र नस रही है ।

अचानक भयकर प्रि श्रिया स अमित होकर गोमा एक पारस की तरह प्रतार करने लगी । उमन प्रथम बार गाव क बुदुगों क सामन मूह

बोला । वे सब हैरान हैं और साथ ही लज्जित ।

“आप चुप क्या हैं ? कुछ कीजिए । आ आ आ
 पाप मद हैं । गाव का एक जादमी आ आ आदमी
 मेरे मेरे नेरू के के माह । कोई
 नहीं करता । राम राम हाय । कोई नही
 मूनता ।”

और बह नदी के किनारे किनारे बतहागा भागा लगा । कुछ
 लोग उसे पकड़न के लिए पीछे दौड़े । उन्हें डर है कि गोमा स्वयं नदी
 में न डूब पड़े ।

नेरू बुक्का फाड़ कर रोने लगा ।

बोना छिपकली की तरह पैड से चिपका है । यदि उस की पकड़
 थोड़ी सी भी ढीली हो गई तो मौत निश्चित है । मज्जने पानी में भरी
 आंशु को उघाड़ कर उसने एक बार दूर तक दृष्टि दीवाई, लहरें दूर तक
 पत्नी हैं । वे अत्यंत तीव्र और भयोत्पादक हैं । उनकी प्रत्येक उछाल खतर
 नाक रूप धारण कर लेती है ।

भाला बग तेजी से पैड के साथ बह रहा है । किनारा दूर छूटता
 घना जा रहा है । इसमें कोई संदेह नहीं कि यह धारा उसे गीघ्र ही बाढ़ की
 मूर्ख धारा में डाल देगी और फिर ?

गहन निराशा ने उस पर अधिकार जमा लिया है । प्रकृति के इस
 अयथमित क्रोध का सामना करना उस जैसे दुबल व्यक्ति के लिए नितांत
 असंभव है । लहरों की गति और भयानकता के प्रभाव से बड़े बड़े साहसी
 और घदवान व्यक्तियों का साहस भी परास्त हो जाता है फिर हममें
 किनासा मामूली है ?

एराएरू वह पड़ किनी प्रबल महर के पाडे भ उछता । बोना

भी उमके साथ झंझर में लटक कर छपाक म गिर पडा । देखने वालों
क कनज मुह को झा गया । अब तो उमका बचना मश्किल है । अभी वह
किसी भवर क चक्कर में आ जायगा जहा म बचा पाना विधाना क बम में
भी नही है ।

बस गोमा पर तो भयकर उमा छुा गया । वह घान हर में
चीगती हुई गरजता लहरो की ओर लपकी । वह -वों ही उनम वून क
लिए तयार हुई कि तभा गाव क दो युवक भाग हुए आ गय धीर उम पर उ
लिया ।

छाट दा मझे ।

भीओ । पागल हा गर् हो ।

'हां ५ ५ ५ । ग' क आ वा
। गोमा बिलस्य बिलस्य कर रा पही — पर काई
उ बचाप्रा ओ धो घ' अह अट ।

वटु निगल गा होकर उन गाना युवकों की बाटों म गिर पड़ताकर
न करने लगी । अब धीरे धीरे वह घावग घायुघा क माय मिन कर
वित हो बटु रटा है ।

रतो में गवने आ वय क माय गमा कि एक छाया नाव दूर—
क बाव में—मदुरा क गिलर पर तैर रही है । प्र पक लहर का घाकार
डा घटान क सग है—मानों गे की तरह उदित कर यत् छाटी-गा
मम टहराने ही बचनाग्र हो जायगी ।

उममें बंग कषा कानि कसापाक मनागा एव अतुव गाग म
गु म म ग' है ताकि न सुटनी मदों में उगका गनन न
य मदिन मटों का त प्र वग उग बहाकर म प्रा र' है ।
वि पुन बहार मदिन हा रहा है ।

'धरे कीन ?'

"किमत मरन का टानी है ?"

"वट जरूर हूँगा ।

इसम क्या शक है ?'

जितन मु ह—उतने ही प्रश्न ।

दुर्भाग्य से, नाव अब एक नद प्रबल शत्रु नहर के चगुन म फस गई है ।

सबकी साम गत म एक क्षण के लिए अटक गए । तनिक उठर कर फिर प्रश्नो का झडी आरम्भ हो गई ।

'इस उपनता नदा म किसन नाव डाली है ?'

यह कीन है

किसने ऐसी मूर्खता की है ?

तभा उनम र एक पत्तान कर बिनाया — सर यह ता अपना शम्भू है ।

शम्भू ।

बस, पनक भपकन ही शम्भू का नाम सबकी जवानो पर घूम गया ।

गामा के बाना म जब उमका गाम पडा तो वह सजाटे म आ गई । विस्फारित नत्रो से जमन देखा कि छोगी भी नाव पर बठा शम्भू प्रबल प्रलयकारी लत्रो से मघप कर रहा है । वह उनको काट कर भीघानिगाघ्र भाता क पास पहुँच जाना चाँता है ।

गोमा के शामू पत्रको पर आकर ठहर गय । दवाई कण्ठ म घुट कर रह गई । वह तो साँस रोक कर भपलक उस छाटा सी नाव का दल

रही है ।

अब वह रोद । विहीन पागलों के टकराने ग करने का प्रवर में
गहरा का रहा है ।

भोला भी सब चुका है । उगता दुबल लन लकीं ग मही म
अग घागहा म म भ्रुमत्र कर रहा है । हाथ पाप टा गानी म घरद कर
मु न हा मये है । उग पर भोरे धं रे मुर्दा मी ला रही है ।

अथानक गिर्विम पर हाया म ग पद दुः स्या और वह मकर
जान म दक्षिणा नग मगा ।

राम राम ।

क्यों ने म ह विस्मय । भोला की इग आकर्मिक विगलि पर
गबक हूय द्रविन हो गय । अब उगा बनन की गारी सागा घूमिन हो
गई । यह अब दूबा य अब दूबा अब दूबा ।

गामा के म ह म दारण धीरवार निबन पड़े । बट म ह डार कट
पूट पूट कर री पडा ।

सम्भवत गम्भू न इग चित्तापूण परिस्थिति को मनी माति समझ
त्रिवा है । उगन एक पन भी ध्यय सोना उचित नहीं समझा । जब तक
भोला भवर म चक्कर ला रहा है उम निचित रूप स पट्टन जाना चाहिए
वरना भवर के मध्य म पहुँच कर वह डूब जाएगा ।

व नाथ में से बूद पडा और एक द्र तगामी धारा म पडकर बहने
सगा । उम लरने की आवश्यकता नही है । धारा घपन आप उमे लक्ष्य तरु
पहुँचा देगी ।

इम वार पुन दो विरोधी लहरे एक दूसरे को काटती भोला के
नजदीक भा गई । भोला से टकराई और उमे अधर मे उछाना । लेकिन
वह भवर स निकल कर दर जा पडा । वम गम्भू ने खुबसी सगाई और

भोना के पास क पास सिर निकाला । धाराए उम बहा ल जान के निय मजल रही है, मगर गम्भू क हाथो म भोला के सिर के बान आ गये हैं और वतु उह काटन लगा है । पलि थोडा सा भी विलव किया गया तो इस बार बोला क साथ गम्भू भी भवरजाल म फस जाएगा ।

मोभाभ्य स, एक गरजतो हुई जहर पीछे म आ गई और वह उ ह बहाकर किनार की ओर ले जाने लगी है । गम्भू भी अपन एक हाथ को फर्नी स चला कर इस अनुकूल अवसर का समुचित लाभ उठा रहा है ।

अब नहर भी उसकी सहायक बन गई है । व परस्पर टकराती-काटती उह जपन लक्ष्य की ओर फेंक रही हैं । तत्काल ही वे एक धारा म पड गय जो सीधी किनारे की ओर जाता है ।

कुछ ही दर में किनारा पास आ गया । वह थोडी ही दूर रह गया है । वहा छठे नोपा ने भीमकाय लहरो पर विजय प्राप्त कर आने बान गम्भू क प्रति इषध्वनि का । अब ता कई नवयुवक जल म कू पडे ।

गम्भू नाम बहागी म तैर रहा है । उमका गरीर थकान से चूर चूर है । वह प्रमान है जपनी इस सरुभता पर । ठड स नीले पणे होठो पर मोठी मो मृस्कान तर रही है ।

गोमा तो यह अद्भुत चमत्कार देखकर हप विह्वल हो उठी है । एक एक पल की प्रतीना भी उसे अब बहुत भारी लग रही है । जो चाहता है कि वह एक पक्षी के समान उड़कर उमक पास चली जाय ।

पता नही कहा से एक विषय जन में बन्ता हुआ आ गया । व साधा गम्भू क गल से निपट गया । उमक प्राणो पर बन आइ । घबरा कर शय म अलग करना चाहता साप न काधिन होकर उस इस दिया ।

गम्भू चीख पडा ।

मट्टी दोसी पड गई और भोना के बान हाथ स छूट गय । व अब

रही है ।

घब बर पेह न विारीन पागधा के टक्कर म पहन बान भवर
पारा बर रहा है ।

धामा भी यक चुका है । उमका सुबल तन लहरों मे लहने म
अन पागधी पाग अनुभव कर रहा है । हाथ पाथ ठे पानी म घबड कर
मु न हो गये है । उम पर धीरे धीरे मूर्छा गो घा रही है ।

धवाक गिपिय पड हाया म स पड पूर गया और वह भवर
जाम म डविया लने लगा ।

राम राम ।

बाघों ने मुह चित्नाय । भोला की इग आकस्मिक विपति पर
गवह हृदय द्रवित हो गय । घब उमक बान की मारी घागा पूमिन हो
गई । वह अब डूबा व अब डूबा अब डूबा ।

गोमा के सह स दाहण चीत्वार निकल पडी । वह मुह टाप कर
पूट पूट कर रो पडी ।

सम्भवत शम्भू ने एसा चिन्तापूण परिस्थिति को भनी भाति ममभ
निया है । उसने एक पत्र भी ध्यय खोना उचित नहीं समभा । जब तक
भोला भवर मे चक्कर खा रहा है उस निश्चित रूप से पहुच जाना चाहिए
वरना भवर के मध्य म पहुँच कर वह डूब जाएगा ।

व नाव मे मे कूद पडा और एक द्रुतगामी धारा म पडकर बहने
गा । उमे तरने की आवश्यकता नही है । धारा अपने आप उसे लक्ष्य तक
चा देगी ।

इम बार पुन दो विरोधी लगे एक दूसरे को बाग्नी भोला के
कीक भा गई । भोला से टकराई और उमे अघर म उछाना । लेकिन
भवर से निकल कर दुर जा पडा । वम शम्भू ने डुबकी लगाई और

दुर्बलियां मत्ता हुआ माने धान मीमा के हाथ में पड़ गया ।

आमू की घाला में अथेरा गा फिरन लगा । धीरे धीरे विप का प्रभाव उम पर होत मगा । उसका शरीर निपिन पड़ गया है और अग अ दूट रहा है ।

व गांव भा बुरी तरा निपट गया है । कह नहीं गकने कि उमन फिर कितना बार दग किया होगा ।

बग गांव का उमक पाग पट्टव मगने पट्टन हा उमने जन समाधि त ली ।

चारो ओर गोक छा गया । गमे माहमी और वीर की मरात मृत्यु पर सारा गाव आमू बहा रहा है । कुछ मेम भी हैं जो अपना मयम सोकर रा पने हैं ।

प ग गोमा चुप है । उमक मामू तो मूख गय है । उसकी बावरी ओर मूनी-मूनी प्राग तो सुदूर उस उफनती नगी में पानी की मतह पर कुछ मोज रही हैं ।

रे व र ।

एक लबी चाख मार कर गोमा मूखिन होकर गिर पडी ।

॥ समाप्त ॥

